आधुनिक भाषा विज्ञान
और
हिंदी भाषा संवर्धन

डॉ० पीताम्बर
एम० ए० (हिंदी, भाषा-विज्ञान), पी-एच० डी०
रीडर (अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान)
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

नीलम प्रकाशन, आगरा
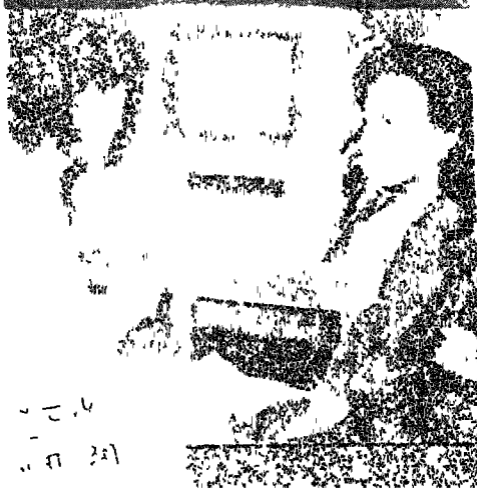
आमुख

भाषा विज्ञान पर लिखी इस पुस्तक में भाषा विज्ञान के कुछ खास बिंदुओं को ध्यान में रखकर विवेचन किया गया है। इस पुस्तक में लेखक ने ध्वनि विज्ञान, व्याकरण, अर्थ विज्ञान, समाजभाषा-विज्ञान तथा भाषा-शिक्षण से संबंधित कुछ ऐसे विषय बिंदुओं को अपने विवेचन का केंद्र बनाया है जो भाषा विज्ञान का सामान्य अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए उपयोगी हो सकता है और जहाँ सामान्यतः भ्रम की अधिक गुंजाइश रहती है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि किसी एक खंड पर आद्योपांत क्रम विवेचन करना लेखक का लक्ष्य रहा है, लेकिन यह आवश्यक है कि लेखक ने जिन विषयों पर चर्चा की है उसे सरल तथा सुबोध ढंग से पाठकों तक पहुंचाने का प्रयत्न किया है।

भाषा विज्ञान पर हिंदी में छात्रों के उपयोग के लिए लिखी पुस्तकों की संख्या बहुत सीमित है। इनमें से कुछ पुस्तकें छात्रों के लिए लिखी गई सामान्य पुस्तकें हैं और कुछ पुस्तकें भाषा विज्ञान के कुछ खास बिंदुओं पर केंद्रित हैं। कुछ पुस्तकें समृद्ध होते हुए भी तकनीकी शब्दजाल से भरी हैं और कुछ पुस्तकें सतही स्तर की हैं जो भाषा-विज्ञान की मूल संकल्पनाओं को प्रामाणिक ढंग से स्पष्ट करने में असमर्थ हैं। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक का यह दावा तो नहीं है कि वह भाषा-विज्ञान विषय पर मौलिक चिंतन या मानक पाठ्य-पुस्तक प्रस्तुत कर रहा है लेकिन भाषा-विज्ञान के छात्रों की ऐसी सामान्य जिज्ञासाओं को तुष्ट करने में लेखक अवश्य सफल हुआ है जहाँ भ्रम की बहुत गुंजाइश रहती है। भाषा विज्ञान के छात्रों को प्रायः दो या अधिक सजातीय संकल्पनाओं के बीच भेदक अंतर समझने की आवश्यकता पड़ती है जिनका तुलनात्मक उल्लेख कम पुस्तकों में मिलता है। लेखक ने इस ओर विशेष ध्यान दिया है और ऐसे सभी भाषा-वैज्ञानिक तत्वों के बीच सोदाहरण अन्तर स्पष्ट किया है, जैसे प्रयोग और वाच्य, कृदंत और तद्धित, स्वन और स्वनिम, संयुक्त क्रियाएँ, मिश्रक्रियाएं और यौगिक क्रियाएं, क्रियाकर तथा रंजक क्रियाएँ, पक्ष, काल और वृत्ति, शब्द वर्ग तथा व्याकरणिक कोटियाँ, प्रातिपदिक और मूलांश आदि के बीच के अंतर।

पुस्तक में भाषा परिमार्जन की दृष्टि से कुछ ऐसे उपयोगी व्याकरणिक बिंदुओं का भी विवेचन किया गया है जो विशेष रूप से अहिंदी भाषी छात्रों के लिए उपयोगी हो सकते हैं। लेखक को अहिंदी भाषी छात्रों को हिंदी पढ़ाने का लंबा अनुभव है और इस अनुभव के आधार पर ही लेखक सरल सुबोध ढंग से

इनकी व्याख्या करने मे सफल हुआ है। इसमे सदेह नही है कि प्रस्तुत पुस्तक हिंदी के माध्यम से भाषा विज्ञान का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

(प्रो० सूरजभान सिह)
अध्यक्ष
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव ससाधन विकास मत्रालय
(शिक्षा विभाग)

तिथि 12-12-1990
नई दिल्ली

अपनी बात

आज से 20-25 वर्ष पूर्व 'भाषा विज्ञान' विषय से सामान्य विद्यार्थी परिचित नही हुआ करते थे। भाषा विज्ञान क्या बला है? इसमें एम. ए करने मे क्या किसी नौकरी के मिलने की संभावना बनती है? आदि ऐसे प्रश्न थे जिनका उत्तर सकारात्मक नही हुआ करता था। यही कारण था कि यह विषय उतना प्रसिद्ध नही था जितने अन्य विषय।

समय के साथ-साथ भाषा-विज्ञान के क्षेत्र मे क्राति आई। एम. ए. हिंदी मे भाषा विज्ञान का अध्ययन-अध्यापन होने के साथ-साथ कई विश्वविद्यालयों मे भाषा विज्ञान का अलग विभाग आरभ हो गया। फिर भी इसमे अध्ययन करने वाले छात्रो को उँगलियो पर गिना जा सकता था। सही भी था कि यदि तैयार माल की खपत बाजार मे नही होगी तो उसे बेकार तैयार कर सडाना तो है नही।

आज भाषा विज्ञान अन्य विषयो की भाँति महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। अध्यापन कार्यों से सबधित विभागो के अतिरिक्त अन्य विषयो, मनोविज्ञान, चिकित्सा सबधी कई गैर-शिक्षण सस्थाओ मे भी भाषा-विज्ञान विषय के रिक्त पदो के विज्ञापन अन्य विषयों की भाँति दिखाई देते है। जिसके कारण भाषा विज्ञान क्षेत्र मे आने वालो की सख्या दिन-ब-दिन बढती हुई दिखाई दे रही है। इसीलिए आज भाषा विज्ञान विषय पर अनेकानेक पुस्तकें उपलब्ध है। आपके हाथो मे उपलब्ध 'आधुनिक भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा संवर्धन' नामक पुस्तक विशेषकर एम. ए. भाषा विज्ञान और हिंदी के विद्यार्थियो के अलावा केंद्रीय हिंदी सस्थान की परीक्षाओं— गहन, पारगत व निष्णात के विद्यार्थियो की लिखित व मौखिक परीक्षा तथा भाषा विज्ञान के रिक्त पदो के साक्षात्कार की सफलता हेतु लिखी गई है। प्रस्तुत कृति अपने प्रकार की पहली पुस्तक है। यद्यपि विषयगत विविधता के साथ-साथ प्रस्तुतीकरण भी लीक से हटकर है तथापि अत्यंत उपयोगी होने के कारण मैंने यह दुसाहस किया है।

प्रस्तुत कृति मे विविध विषयो का प्रस्तुतीकरण विवेचन, तुलना और अतर के रूप मे किया गया है। व्याकरण, भाषा सवर्धन के अलावा यह पुस्तक लगभग 150 प्रश्नोत्तर सहित पाँच अध्यायो मे लिखी गई है। भाषा विज्ञान की पुस्तको मे वर्णित परपरागत शीर्षको से हटकर लिखी गई इस पुस्तक मे सामान्य बिंदुओ (भाषा की परिभाषा, स्वर, व्यंजन, वितरण, रूपिम, स्वनिम, आदि-आदि) को इस अपेक्षा के साथ छोड दिया गया है कि भाषा विज्ञान का विद्यार्थी इन्हें जानता ही होगा।

फिर भी प्रसंगवश यदि इनका वर्णन करना पड़ा है तो नजरअंदाज नहीं किया गया है।

अध्याय एक में उन शीर्षकों पर विचार किया गया है जिन्हें विवरणात्मक (descriptively) रूप में देना आवश्यक समझा गया है जिन्हें विवरणात्मक संवर्धन/परिमार्जन से संबंधित हों, भाषा विज्ञान या नई शिक्षा नीति जैसे विषय से जिज्ञासु शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में तीव्रगति से बढ़ रहे संगणक (Computer) की चाह के मोह से नहीं छूट पा रहे हैं, अतः संगणक में प्रयुक्त शब्दावली सहित संगणक पर भी कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत की गई हैं।

कुछ शीर्षक समान या निकटतम समान होने के कारण ऐसे होते हैं जब तक उन्हें साथ-साथ रखकर नहीं देखा जाय स्पष्ट नहीं होते। अध्याय दो में इसी उद्देश्य से कुछ ऐसे ही शीर्षकों पर विचार किया गया है।

अध्याय तीन मुख्य और छोटे-छोटे उन बिंदुओं के स्पष्टीकरण हेतु लिखा गया है जिनके बारे में भाषा-विज्ञान के छात्रों को कठिनाइयाँ होती हैं।

अध्याय चार का प्रमुख उद्देश्य, भाषा परिमार्जन, सशक्त संप्रेरण में दक्षता प्राप्त करना है कि अहिंदी भाषियों के लिए अति उपयोगी शीर्षकों का संग्रह है साथ ही साथ हिंदी भाषी अपनी विद्वता की चमक में जिन बिंदुओं को नजरन्दाज कर जाते हैं, उनकी ओर भी संकेत करता है इस दृष्टि से यह उनके लिए भी उपयोगी है।

मैंने जीवन में कई पुस्तकें पढ़ी, कई समाजों में रहा, भाँति-भाँति के मित्रों, अमित्रों को पाला पड़ा, कई स्थानों पर कार्य करते हुए देखा, समझा, कुछ पाया इन सभी प्रकार के वातावरणों में गुजरने के पश्चात् जो बातें मुझे अच्छी लगी, अच्छी ही नहीं वरन् जिन सत्यों ने, वास्तविकताओं ने मेरे हृदय को छुआ, जिनसे मेरा तादात्म्य स्थापित हो गया, जिनका मेरे साथ साधारणीकरण हो गया, 'प्रोक्तियाँ' शीर्षक के अन्तर्गत दरअसल सूक्तियों व अन्य रूपों में प्रस्तुत ये ही पंक्तियाँ हैं। कहते हैं बुद्धि का संबंध ज्ञान से व भावनाओं का संबंध हृदय से हुआ करता है। भावनाओं में बहकर व्यक्ति विवेकहीन सा हुआ जाता है। कुछ ऐसी ही बात मेरे साथ भी हो गई होगी, इसीलिए पाठक जरूर सोच रहे होंगे कि 'आधुनिक' भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा संवर्धन' नामक शीर्षक से अलंकृत इस पुस्तक में इस शीर्षक का क्या काम ? भाषा के संदर्भ में इसकी महती आवश्यकता है। भाषा को प्रभावी बनाने हेतु यह अपेक्षित है कि इस तरह की प्रोक्तियों को समझा जाय और प्रयोग में लाया जाय। इसी निवारण के उद्देश्य प्राप्ति हेतु लिखी गई इस पुस्तक में किसी नई धारणा को उद्घाटित नहीं किया गया है वही घिसी पिटी बात कही गई है हाँ

इतना अवश्य है कि विद्यार्थी कक्षा में जिन छोटी-छोटी बातों के अतर को नही समझ पाते है। जैसे प्रयोग और वाच्य मे क्या भेद है ?, कृदत और तद्धित क्या होते है ? कृदती और तिडती को कैसे स्पष्ट करेंगे ?, स्वन और स्वनिम मे यदि सूक्ष्म और स्थूल का भेद है तो ये सूक्ष्म और स्थूल शब्द किस प्रकार स्पष्ट किए जा सकते है ?, ताकि स्वन और स्वनिम का अर्थ स्पष्ट हो जाय, सयुक्त क्रियाएं, मिश्रित क्रियाएँ और यौगिक क्रियाओ मे क्या अतर है ?, क्रियाकर किसे कहते है ? क्या रजक क्रियाएँ सीमित है ?, क्या क्रिया के एक ही रूप से पक्ष, काल और वृत्ति की जानकारी मिल जाती है ?, व्याकरणिक कोटियाँ और शब्द वर्ग किस प्रकार भिन्न है ?, रूपसाधक प्रत्ययो और व्युत्पादक प्रत्ययो को कैसे अलग किया जा सकता है ? मूलाश और प्रातिपदिक मे क्या अतर है ?, सयुक्त काल और सयुक्त क्रिया को कैसे समझाया जा सकता है ?, समापिका व असमापिका क्रियाओ को स्पष्ट रूप मे कैसे जाना जा सकता है ?

भारतीय सविधान मे स्वीकृत अतिम भाषा कौन सी है तथा उस भाषा को कब स्वीकृति मिली ? इन स्वीकृत भाषाओं मे कितनी भाषाओ का भारत मे स्पीकिंग एरिया नही है ?, भारत मे बोली जाने वाली भाषाएँ कितने भाषा परिवारो की है ?, आधुनिक भाषा विज्ञान के पिता कौन माने जाते है ?, अग्रेजी की भाँति पदक्रम (S-V O) किस भारतीय भाषा मे पाया जाता है ? और लेक्सीकोग्राफी तथा लेक्सीकोलॉजी मे क्या अतर है ?, भाषा विज्ञान मे कितने त्रिकोणो के नाम आपने सुने है ? स्वर त्रिकोण व अर्थ त्रिकोण मे क्या अतर है ?, अर्थ निर्धारण के कितने तत्व है ? वर्बलाइजर व डिपलीशन को कैसे स्पष्ट करेंगे ?, वर्णाक्षर शब्द (एक्रोनीम) और सक्षिप्त रूप (एब्रीविएटेड फार्म) मे क्या भेद है ? सकेतार्थ (डिनोटेशन) संकेतित (डिनोटेटम) मे क्या भेद है ?, पदनाम (डेजिगनेशन) और बोध (डेजिगनेटम) को कैसे स्पष्ट किया जाएगा ?, भाषिकेतर जगत (एक्स्ट्रा लिंगिस्टिक वर्ल्ड) वन-जीव समूह (फ्लौरा एण्ड फौना) से क्या तात्पर्य है ?, प्रथम प्रयुक्त मात्र (हैपेक्स), प्रविष्टि आधार (लेमा) मे क्या समझते है ?, वृत्तिभाषा (जार्गन), गुप्त भाषा (आर्गाट) मे अतर होते हुए भी अधिकाश लोग भेद नही कर पाते। इसी प्रकार शिष्टेतर प्रयोग (स्लैंग), वर्जित शब्द (टैबू), और अभद्र शब्द (वलगर) के सूक्ष्म अतर को जानना भाषा विज्ञान के विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। सयुक्तार्थ (कोनोटेटिव मीनिंग) और वाच्यार्थ (डिनोटेटिव मीनिंग) मे क्या अतर है ?, नीडबद्धता (नेस्टिग) और अनुक्रमी शब्द (रन आन वर्डस) किसे कहते हैं ?, अवक्रमिक (सबार्डीनेट) और अधिक्रमिक (सुपार्डीनेट) शब्द-कौन से होते हैं ?, अनुवाद और लिप्यतरण अलग-अलग है ?, अर्थ परास, सपकनार्थ और वाच्यार्थ मे क्या सबध है ?

इसी प्रकार अतरभाषा क्या है, कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन से क्या समझते है ?, पैगलैंग्वेज और निरूपक भाषा (मेटालैंग्वेज) को स्पष्ट कैसे किया

जाय ?, कोडिंग और डिकोडिंग किसे कहते है ?, सीमित और असीमित कोड के भेद को स्पष्ट कैसे किया जाय ?, दोष (लेप्सेज), गलतियाँ (मिस्टेक्स), और त्रुटियाँ (एर्र्स) में क्या कोई अतर है ?, सिंटेग्मेटिक्स और पैराडिग्मेटिक रिलेशन क्या होते है ?, इटीमेट, कैजुअल, अनौपचारिक, उच्च औपचारिक (हाइपरफार्मल) और अति औपचारिक (फ्रोजन) के भेद मे अंतर को स्पष्ट करना उतना सरल नही है जितना सरल लगता है ?, मुक्त रूपिम, बद्ध रूपिम, शून्य रूपिम, सपृक्त रूपिम निरर्थक रूपिम, समाविष्ट रूपिम आदि-आदि इसी प्रकार के प्रश्न है जो कहने को तो बहुत सामान्य हैं परतु व्याख्या करने पर इनकी सामान्यता का परिचय हो जाता है। इसी प्रकार के अन्य प्रश्न है जिन्हे इस कृति मे साथ-साथ रखकर इस प्रकार समझाया गया है जिससे उनके अदर उत्पन्न गलत धारणाएँ दूर को सके और उनका भाषा विज्ञान विषयक नवीन ज्ञान परिपक्व हो सके, वे चार विद्वानो मे बैठकर इस विषय पर चर्चा कर सकने मे हीनता का अनुभव न करें, पाँचवे अध्याय मे इसी का समाधान प्रस्तुत किया गया है। सक्षिप्त उत्तर वाले उन प्रश्नो में से जो प्रश्न अति महत्वपूर्ण और विस्तार की अपेक्षा के योग्य समझे गए हैं, जैसे—रूमस्वनिमिक परिवर्तन, सधि, समास, प्रत्यय, परसर्ग और उनके अर्थगत प्रयोग व्यतिरेकी विश्लेषण और त्रुटि विश्लेषण आदि कई अन्य बिंदुओ पर विस्तार से यथा स्थान चर्चा इस पुस्तक मे की गई है।

इस कृति के अध्ययन मे लेखक का यह दावा कतई नही है कि अध्ययनकर्ता इसके बाद अपेक्षित पद के लिए चुना ही जायगा। परतु यह विश्वास अवश्य है कि पूछे गए प्रश्नो का उत्तर निश्चित रूप से अच्छे ही नही, बहुत अच्छे ढग से दे सकेगा साक्षात्कर मे पूछे गए प्रश्नो का सही उत्तर देने से साक्षात्कर अच्छा माना जाता है। साक्षात्कर का अच्छा होना व आवेदन किए गए पद के लिए चयन होना दोनो अलग-अलग बाते है। (वर्तमान सदर्भ में) इनका आपस मे कोई सबध नही है। हाँ। अच्छा साक्षात्कार होने से अभ्यार्थी का मनोबल बना रहता है और यदि किन्ही कारणों से उसका चयन नही हो पाता तो चयन समिति के कुछ सदस्यो (चाहे वह एक ही क्यो न हो) के स्मृति-पटल पर उसका चेहरा तो मिटाए नही मिटता।

अत में मैं उन सभी विद्वान लेखको के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनकी कृतियो से मैंने सहायता ली है। इस पुस्तक की पाडुलिपि को प्रकाशक एव मुद्रक ने इसी रूप मे स्वीकार कर मेरा अतिरिक्त श्रम कम कर दिया उसके लिए उन्हे धन्यवाद। मेरे बेटे प्रशात कुमार ने पाडुलिपि तैयार करने मे तथा अनिल ने सगणक अध्याय के विषय सबधी चर्चा मे मेरी पूरी सहायता की। उनको मात्र आशीर्वाद ही दे पा रहा हूँ।

विजयदशमी 26 सितबर 90

विषय-सूची

अध्याय तीन

अध्याय चार

अध्याय पाँच

परिशिष्ट

1

1 हिंदी में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों का लिंग

हिंदी में लिंग की समस्या अहिंदी भाषियों को हिंदी सीखने के लिए विशेष रूप से बाधक होती है। न केवल अहिंदी भाषियों को वरन् हिंदी भाषी भी कई कारणों से लिंग का प्रयोग इस प्रकार करते हैं जिससे कि दूसरे हिंदी भाषी (श्रोता) को कुछ अटपटा सा लगता है।

यह भी सही है कि आजकल हिंदी में उर्दू भाषा के शब्दों के प्रयोग के अलावा दिन-ब-दिन अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग अधिक होता जा रहा है। यह अधिकता इतनी बढ़ गई है कि अंग्रेजी के शब्द ही हिंदी के शब्दों का प्रतिस्थापन होने लगे हैं और यह प्रवृत्ति हमें इस बिंदु पर ले जा रही है कि हिंदी के बड़े-बड़े दिग्गज भी अपने व्यवहार में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग करने के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि कभी-कभी उनके द्वारा प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों का हिंदी रूप बता पाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य जान पड़ता है।

अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग की इस प्रवृत्ति ने हिंदी भाषियों के आगे ही एक समस्या खड़ी कर दी है और यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि जिन अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग वे करते हैं उनका लिंग क्या हो? हर विद्वान इसी बात पर अड़ जाता है कि हम तो अमुक शब्द को अमुक लिंग में ही प्रयोग करते हैं अतः यही सही है। आदि-आदि।

दैनंदिन वार्तालाप में कुछ व्यक्तियों के अलावा ऐसे व्यक्ति जिनसे वार्तालाप करने का अवसर कभी-कभी मिलता है, उनके द्वारा प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों के लिंग प्रयोग सुनें तो कुछ अटपटा सा लगता है। पूछने पर वे भाँति-भाँति के तर्क और औचित्य द्वारा अपनी बात की पुष्टि करते हैं। उक्त बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत है—

एक विद्वान महिला जिनसे लेखक की बात सीमित होती है, ने कहा—"नोटिस नहीं आई" वाक्य सुनकर लेखक को खटका। लेखक ने 'नोटिस' शब्द पुल्लिंग प्रयोग में सुना है। पूछने पर महिला ने बताया—हम तो ऐसा ही प्रयोग करते हैं।

इस प्रकार विचार कर देखा जा सकता है कि उक्त महिला ने 'सूचना' शब्द (स्त्रीलिंग) का प्रयोग प्रायः किया होगा या उक्त वाक्य बोलते समय 'सूचना' शब्द मस्तिष्क में रहा होगा और उसने बदले अंग्रेजी का शब्द 'नोटिस' लेकर हिंदी की वाक्य रचना कर डाली। या वे सूचना शब्द का प्रयोग करना चाहती होंगी लेकिन अनायास ही अंग्रेजी शब्द 'नोटिस' बीच में जोड़कर 'सूचना' शब्द के लिंग को लेकर वाक्य कह दिया होगा। इन सम्भावनाओं से इन्कार नहीं किया जा सकता।

अब हमें विचार करना होगा कि अंग्रेजी शब्दों का लिंग क्या हो? इस संबंध में प्रो० कैलाश चन्द्र भाटिया, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और डॉ० धीरेन्द्र वर्माजी ने अपने-अपने विचारों के साथ नियम भी प्रस्तुत किए हैं।

अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग में शब्दों का लिंग कभी स्त्रीलिंग कभी पुल्लिंग में करने के कारणों का प्रस्तुतीकरण एक छोटे से सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर किया गया है। जिसे यहाँ 'प्रयोग' शीर्षक के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है। 'रूप' और 'अर्थ' के आधार पर नियम प्रस्तुत किए गए हैं। प्रस्तुत शीर्षक का विषय अपने आप में ही उलझा हुआ है। इसलिए इस संबंध में मतभेद हो सकते हैं।

अंग्रेजी शब्दों के लिंग निर्धारण के आधार

(1) प्रयोग (2) रूप (3) अर्थ

(1) प्रयोग

हिंदी में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों का लिंग क्या हो यह वक्ता के प्रयोग की पृष्ठभूमि पर निर्भर करता है। प्रयोग की पृष्ठभूमि को मुख्य चार वर्गों में रखा गया है—

(अ) प्रयोगकर्ता/वक्ता की मातृ भाषा [या क्षेत्रीय प्रभाव]

(ब) अंग्रेजी शब्द के समतुल्य हिंदी शब्द।

(स) अंग्रेजी शब्द के साथ आने वाला शब्द।

(द) अंग्रेजी शब्द वाली वस्तु से मिलती-जुलती वस्तु के लिए शब्द।

प्रयोग की इन चार पृष्ठभूमियों पर विचार के उपरांत रूप और अर्थ के संबंध पर विचार किया जाएगा।

(अ) प्रयोगकर्ता/वक्ता की मातृ भाषा [या क्षेत्रीय प्रभाव]

प्रायः यह देखा गया है कि वक्ता की मातृ भाषा में यदि अंग्रेजी भाषा के शब्द का लिंग, स्त्रीलिंग है तो हिंदी भाषा में वक्ता स्त्रीलिंग और यदि पुल्लिंग है तो वक्ता हिंदी भाषा में पुल्लिंग ही प्रयोग करता है। जैसे—हॉस्पिटल, ऑफिस और होटल सिंधी भाषा में स्त्रीलिंग मानने के कारण सिंधी भाषी हिंदी में इनको स्त्रीलिंग में ही प्रयोग करते देखे जा सकते हैं। जबकि हिंदी भाषियों के लिए इनका पुल्लिंग प्रयोग स्वीकार्य है। इसी प्रकार पंजाबी और कश्मीरी भाषियों के मुख से

सैंडिल स्त्रीलिंग और सिंधी भाषियों के मुख से पुल्लिंग प्रयोग सुनने को मिलते हैं। क्योंकि सैंडिल का हिंदी में स्त्रीलिंग प्रयोग मिलता है इसलिए हिंदी भाषी इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग में यह कह सकते हैं कि कश्मीरी और पंजाबी, सिंधी भाषियों की अपेक्षा अधिक सही हैं, भ्रामक होगा। कारण कि उनकी भाषा में इसका प्रयोग स्वतः ही स्त्रीलिंग है न कि हिंदी भाषा को सीखते हुए उन्होंने उक्त शब्द को स्त्रीलिंग में सीखा या स्वीकारा है। इसी प्रकार प्रेस, बैंड, रिक्शा, पेन, और सोडा शब्द सिंधी में स्त्रीलिंग तथा पंजाबी और कश्मीरी में हिंदी की भाँति ही पुल्लिंग स्वीकार्य हैं। इसलिए सिंधी भाषी हिंदी बोलते समय इनका प्रयोग स्त्रीलिंग में करते देखे गए हैं। बॉल (गेंद) सिंधी में पुल्लिंग और हिंदी में पंजाबी और कश्मीरी की तरह स्त्रीलिंग, 'सेट' सिंधी एवं पंजाबी में स्त्रीलिंग जबकि हिंदी और कश्मीरी में पुल्लिंग इसी तरह रोड और फ्रॉक सिंधी, कश्मीरी और कभी-कभी पंजाबी में पुल्लिंग और हिंदी में स्त्रीलिंग प्रयोग पाए जाते हैं।

(ब) अंग्रेजी शब्द के समतुल्य हिंदी शब्द

कभी-कभी वक्ता/प्रयोगकर्ता अंग्रेजी के शब्द के लिंग का निर्धारण उसके समतुल्य हिंदी शब्द के लिंग को लेकर कर लेता है। इस प्रकार रूप अंग्रेजी का और व्याकरण (लिंग) हिंदी का बन जाता है। इसी कारण संभवत. हिंदी भाषियों के लिए 'रोड' स्त्रीलिंग स्वीकार्य है चूँकि इसका हिंदी समतुल्य 'सड़क' स्त्रीलिंग है।

हिंदी में—'रोड' बड़ी है/अच्छी है।

सिंधी में—'रोड बड़ा है/अच्छा है।

[सिंधी में रस्तो—रोड पुल्लिंग स्वीकार्य है]

इसी तरह अन्य शब्द सेट—दल के कारण, ऑफिस—कार्यालय के कारण पुल्लिंग और बॉल—गेंद के कारण स्त्रीलिंग स्वीकार्य है। अन्य शब्द हैं बुक, आर्ट, गवर्नमेंट, चेअर, चैन, जाकेट, ट्राम, ट्रेन, कार, इंक, बटालियन, बस, मेडीसिन, रिस्टवाच, शर्ट, लिस्ट, सर्विस, साइकिल, लाइफ, वाइफ, प्लेट, रेल।

(स) अंग्रेजी शब्द के साथ आने वाला शब्द

कभी-कभी हिंदी में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द अपने साथ एक शब्द लेकर चलता है। इस स्थिति में उस अंग्रेजी शब्द का लिंग साथ वाले शब्द के अनुरूप हो जाता है। जैसे—टाइपराइटर अच्छा है।

टाइप मशीन अच्छी है।

फ़रवरी 28/29 दिनों की होती है।

फरवरी माह 28/29 दिनों का होता है।

(द) अंग्रेजी शब्द वाली वस्तु से मिलती-जुलती वस्तु के लिए उपलब्ध शब्द

अंग्रेजी शब्द की वस्तु से मिलती-जुलती वस्तु के लिए उपलब्ध शब्द के लिंग के अनुसार भी अंग्रेजी शब्द का लिंग प्रयोग होता देखा गया है। भले ही ऐसे

उदाहरण सीमित हों। स्वेटर हिंदी मे प्राय: पुल्लिग रूप में स्वीकार्य है लेकिन कुछ लोग हिंदी बोलते समय स्त्रीलिग प्रयोग करते है उनका यह तर्क, "कि—'स्वेटर' 'बनियान' की भाँति ही होता है चूँकि बनियान स्त्रीलिग है तो स्वेटर भी स्त्रीलिग प्रयोग स्वीकारना चाहिए" कहाँ तक मान्य होना, चाहिए? स्वय को बचाते हुए विद्वान पाठको के विवेक पर छोड़ना उचित समझता हूँ। इसी प्रकार 'ग्रीस' शब्द पुल्लिग शायद इसलिए स्वीकार्य है क्योंकि यह (मशीनो मे) तेल की तरह कार्य करता है। चूँकि तेल पुल्लिग स्वीकार्य है अत. 'ग्रीस' भी पुल्लिग प्रयुक्त होता है।

वाक्यो में पदनामों [मजिस्ट्रेट, इन्स्पेक्टर, डाक्टर] के प्रयोग से क्रिया रूप, लिंग निर्धारण मे स्वय स्पष्ट करने की क्षमता रखते हैं।

मजिस्ट्रेट (साहब) आ रहे है।
मजिस्ट्रेट (साहिबा) आ रही है।

डाक्टर के साथ अब 'लेडी' शब्द लगाया जा रहा है जबकि इस्पेक्टर के साथ 'लेडी' शब्द लगाने का अभी फैशन नही बन सका है।

यहाँ यह भी स्पष्ट करना चाहूँगा कि पदनामो मे स्त्रीलिग रूप (अध्यापिका, निदेशिका) न बनने का कारण शायद यह रहा होगा कि आरभ में महिलाएँ प्रशासनिक पदों पर नहीं हुआ करती थीं परतु समाज के विकास और महिलाओ को अधिकार दिए जाने के सामाजिक परिवर्तन ने उन्हे इजीनियर, डॉक्टर, निदेशक, एम० पी०, आदि-आदि पदो पर पदस्थ किया अत: महिलाओ के पदों के साथ-साथ पदनामो मे परिवर्तन नही हो पाया।

(2) रूप

रूप के आधार पर अंग्रेजी शब्दो के लिंग का निर्णय कर प्रयोग करना हिंदी भाषियों के लिए सहज कार्य है। क्योकि लगभग ऐसी ही प्रक्रिया हिंदी शब्दों के लिंग निर्धारण मे अपनाई गई है। एजेसी, डायरी, सोसाइटी, टैक्सी, फैक्ट्री, डिग्री, टाई, चिमनी, कमेटी, कपनी आदि ईकारात शब्दो का स्त्रीलिग प्रयोग स्वीकार्य है। 'लेडी' शब्द तो अर्थ की दृष्टि से भी स्त्रीलिग है।

अफसर, इजीनियर, गवर्नर कलक्टर, मिनिस्टर डॉक्टर, संज्ञाओ मे 'ई' प्रत्यय लगाकर भाववाचक सज्ञाएँ भी ईकारात होने के कारण स्त्रीलिग प्रयोग होती हैं।

इस वर्ग मे आने वाले अपवाद शब्द हैं—
अटरनी—एक प्रकार का मुख्तार
रिफ्यूजी—शरणार्थी
रेफरी—निर्णायक
अरदली—चपरासी

डैडी—पिता

डिप्टी—प्रशासनिक अधिकारी (अधिकतर पुरुष होने के नाते)

सिटी—शहर, नगर

उक्त शब्द ईकारांत होते हुए भी पुल्लिंग प्रयोग में आते है इनके पीछे 'प्रयोग की पृष्ठभूमि' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए कारण हो सकते है।

कुछ व्यंजनांत और व्यंजन के पूर्व दीर्घ स्वर वाले शब्द स्त्रीलिंग होते है—

मशीन, स्कीम, टीम, स्पीच, फीस, रील, सील, सीट, शीट, [मीट—अपवाद] क्वीन अर्थ की दृष्टि से भी स्त्रीलिंग है।

अंग्रेजी में ing वाले शब्द स्त्रीलिंग होते है—

पिकेटिंग, रोलिंग, कोटिंग, एक्टिंग, पेंटिंग, मीटिंग, चीटिंग, कन्वेंसिंग, प्रिंटिंग, स्प्रिंग।

(3) अर्थ

अर्थ के आधार पर भी अंग्रेजी शब्दो का लिंग निर्धारण किया जाता है। इसलिए अंग्रेजी का एक ही शब्द एक अर्थ में पुल्लिंग तो दूसरे अर्थ मे स्त्रीलिंग प्रयोग करते हुए देखा जा सकता है।

पीस किसकी है। (ताश के खेल मे)

एक पीस लेना है। (कपडे का टुकड़ा)

पीस भंग हो गई। (शांति)[1]

मिस, मेम, मैडम, एक्ट्रेस, नर्स व्यंजनांत होने हुए भी अर्थ के कारण स्त्रीलिंग स्वीकार्य हैं।

'स्पिरिट'—पालिश करने वाले द्रव के अर्थ में, खेल की भावना के अर्थ मे तथा आत्मा के अर्थ मे स्त्रीलिंग स्वीकार्य है।

स्पिरिट फैल गई।

खेल की स्पिरिट होनी चाहिए।

हम लोगो की स्पिरिट मर चुकी है।

इनके अलावा कुछ विदेशी शब्द ऐसे है जिनका लिंग निर्धारण करना कठिन व विवादास्पद है। लिंग की समस्या वास्तव में कठिन समस्या है। हिंदी शब्दो के लिंग की समस्या की कठिनाइयाँ जब आज तक सरल नहीं हो पाई तो अंग्रेजी शब्दों के हिंदी मे स्वीकार्य लिंग की समस्या का कठिन होना स्वाभाविक ही होना चाहिए। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा स्टेशन शब्द को पश्चिम मे पुल्लिंग और पूर्व मे स्त्रीलिंग मानने के पक्ष मे है। इसी प्रकार डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदीजी ने 'स्पिरिट नया है' का प्रयोग किया है।

हिंदी और भाषाविज्ञान के मूर्धन्य विद्वानो के मत पर टिप्पणी करने का साहस तो हमारा नही हो सकता फिर भी अनिश्चितता की स्थिति तो है ही ।

2 अन्य भाषा शिक्षण में भाषा विज्ञान का योगदान

आदि काल से ही भाषा का अपना महत्व रहा है । इससे पूर्व कि हम विषय पर चर्चा करें, यह बताना आवश्यक है कि भाषा और अन्य भाषा के अन्तर को मस्तिष्क में रखकर सोचा जाय तो स्पष्ट होगा कि प्राचीन काल मे मनुष्य को अन्य भाषा सीखने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी । उसकी अपनी आवश्यकताएँ सीमित हुआ करती थी । धीरे-धीरे ये आवश्यकताएँ बढती गयी और मनुष्य को दूसरो के सहयोग की कमी का आभास होता रहा । इसलिए एक-दूसरे से सपर्क स्थापित करना अत्यावश्यक होने लगा । विज्ञान ने जहाँ अपने प्रयासों से वर्षो मे पूरी होने वाली दूरी को कम किया है वहाँ मनुष्यो को एक-दूसरे से सपर्क बढाने के लिए अन्य भाषाओं के ज्ञान की भी आवश्यकता का आभास कराने पर विवश किया । इसी आधार पर आज से कई वर्ष पूर्व मातृ भाषा से अतिरिक्त अन्य भाषा के शिक्षण और शिक्षा का महत्व बढने लगा ।

प्राचीन काल से ही इस आवश्यकता को ध्यान मे रखते हुए अन्य भाषा शिक्षण का कार्य चलता आ रहा है परतु जिस रूप मे यह कार्य होता रहा है उससे अधिक सतोषजनक परिणाम नही निकल सके, अत. विद्वानो का ध्यान इस ओर गया कि अन्य भाषा शिक्षण को और अधिक वैज्ञानिक बनाया जाए । इस प्रकार अन्य भाषा शिक्षण को वैज्ञानिक बनाने के लिए भाषा विज्ञान के योगदान की अपेक्षा समझी जाने लगी । यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना अनावश्यक न होगा कि भाषा विज्ञान कोई नया विषय नही है, अपितु यह पाणिनी के समय से ही चिर परिचित रहा है । उस समय भाषा शिक्षण मे इसका उपयोग नही होता था । परतु वर्तमान काल मे भाषा शिक्षण इस विज्ञान के बिना अधूरा और अवैज्ञानिक माना जाता है । भाषा विज्ञान किस सीमा तक हमारे कार्य क्षेत्र मे उपयोगी हो सकता है ? यह प्रश्न हमारे सामने है । यह कहना अनुचित न होगा कि भाषा विज्ञान के सैद्धातिक अध्ययन का क्षेत्र अत्यत विस्तृत है, भाषा का अध्यापक भाषा विद् नही हो सकता और न ही वह भाषा विज्ञान के क्षेत्र मे अधुनातन प्रवृत्तियो से परिचित होता है । भाषा विज्ञान के द्वारा शिक्षण कार्य मे जो हमें जानकारी मिलती है, उसे आधार बनाकर शिक्षण की उपयुक्त विधि का निर्माण किया जा सकता है । भाषा विज्ञान की विविध शाखाएँ इस दिशा मे प्रयत्नशील है । इस सबंध मे यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक होगा कि किसी भी क्षेत्र मे यदि नई विधि प्रयुक्त की जाती है तो आरंभ मे कुछ कठिनाइयाँ उपस्थित होती है । परपरावादी शुद्ध भाषा शिक्षक भाषा-विज्ञान के उपयोग को स्वीकार करने मे सकोच करते है क्योंकि उनके लिए

भाषा विज्ञान एक कठिन विषय है और शिक्षक के कार्य को आवश्यक रूप से दुरूह बनाता है। अतः वे अपनी पुरानी पद्धति को ही श्रेष्ठ मानते हैं।

भाषा विज्ञान की कई उपव्यवस्थाएँ और शाखाएं हैं, जैसे—ऐतिहासिक भाषा विज्ञान (Historical linguistics), समकालिक भाषा विज्ञान (Synchronic linguistics), तुलनात्मक भाषा विज्ञान (comparative linguistics), व्यतिरेकी भाषा विज्ञान (contrastive linguistics), अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान (applied linguistics), समाज भाषा विज्ञान (Socio linguistics), मनोभाषा विज्ञान (Psycho linguistics) आदि। हमें यह देखना है कि किस प्रकार ये सभी प्रकार के भाषा विज्ञान उपयोगी हैं? इनकी उपयोगिता से अन्य भाषा शिक्षण में इनका योगदान स्वतः ही स्पष्ट हो जाएगा।

यदि हमें किसी भाषा के शब्द के आदि रूप, विकास, व्युत्पत्ति आदि की जानकारी की आवश्यकता पड़ती है तो हमें ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की सहायता लेनी होगी। हमें यह देखना होगा कि इस शब्द का पूर्व रूप क्या था? इसके बाद किस प्रकार तथा किन कारणों से उसमें परिवर्तन आ गया। यदि दो शब्दों के पूर्व रूप समान थे और उनमें आगे चलकर असमानता आ गई है तो उनके क्या-क्या कारण हैं? इसी प्रकार एक ही समय में दो भाषाओं की तुलना करके उनकी स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें समकालिक तुलनात्मक भाषा विज्ञान के क्षेत्र में पदार्पण करना होगा। इस प्रकार का अध्ययन हमें भाषा के वर्तमान रूप की सहायता लेकर reconstruction द्वारा उसके पुरातन रूप का पता लगाने में सहायक होता है, भाषाओं के मध्य सामीप्य स्थापित करने में मदद करता है। व्यतिरेकी भाषा विज्ञान का अध्ययन दो भाषाओं के अंतर को स्पष्ट करता है तथा अन्य भाषा शिक्षण में शिक्षण बिन्दुओं को निर्धारित करने में सहायक होने के साथ-साथ मातृ भाषा से व्याघात और अन्य प्रकार के व्याघात की ओर संकेत करता है जिनसे कि शिक्षण कार्य सरल व अधिक वैज्ञानिक और उपयोगी बन जाता है। अनुवाद कला में तो इसके उपयोग की महत्ता स्वतः ही स्पष्ट हो जाती है। अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, भाषा विज्ञान की सर्वोत्तम महत्वपूर्ण शाखा है। प्रश्न यह उठता है कि अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान क्या है? इसको जाने बिना उसका कार्य क्षेत्र कैसे स्पष्ट हो सकता है? अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, "भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्तों का किसी लक्ष्य विशेष की प्राप्ति के संदर्भ में एक अनुप्रयोग है।' इसके द्वारा केवल भारतीय भाषाओं पर ही नहीं अपितु विदेशी भाषाओं पर भी कम समय में अत्यधिक निपुणता प्राप्त की जा सकती है। इसकी संकल्पना का प्रयोग मुख्यतः तीन संदर्भों में किया जाता है—

1. दो ज्ञान क्षेत्रों के सन्धि स्थल के संदर्भ में

   जैसे—भाषा विज्ञान + मनो विज्ञान = मनो भाषा विज्ञान

भाषा विज्ञान + समाज विज्ञान = समाज भाषा विज्ञान

2 विधा विशेष के क्षेत्र मे, शैली विज्ञान, कोश विज्ञान और वाक्‌चिकित्सा विज्ञान।

3 अन्य भाषा शिक्षण के सदर्भ मे।

यूरोप एव अमेरिका के बहुत से क्षेत्रो मे भाषा सीखने के लिए प्रायोगिक भाषा विज्ञान/अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।

भाषा का सबध समाज से है। यदि कहा जाय कि भाषा समाज का दर्पण है तो अर्थ निकलता है कि भाषा से प्रयोक्ता के भाषाई समुदाय, स्तर, क्षेत्र का सकेत मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति, प्रयोग की जाने वाली भाषा मे अपने व्यवसाय सबधी शब्दावली (Register), औपचारिक और अनौपचारिक भाषा शैली, भाषाओ के सीमित और असीमित कोड, को जिस तरह व्यक्त करता है उससे यह स्पष्ट हो ही जाता है कि वह किस समुदाय/समाज से सबधित है ? इन सब का अध्ययन क्षेत्र समाज भाषा विज्ञान (Socio linguistics) से सबधित है। इसी प्रकार मनो भाषा विज्ञान (Psycho linguistics) हमे बताता है कि बच्चा किस प्रकार भाषा सीखता है, उसके भाषा सीखने पर बाह्य वातावरण का प्रभाव कैसे पडता है ? किन-किन दशाओ मे मनुष्य किस प्रकार के शब्दो का प्रयोग अपनी भाषा मे करता है, कब व हाव-भावो द्वारा अपने विचारो का सप्रेषण करता है ? यदि भाषा के शब्दो की खोज नही कर पाता है तो वह paralanguage हाव भावो (Gestures) द्वारा अपनी बात श्रोता तक पहुँचाता है, शिशु भाषा baby talk या बाल भाषा child language/nursery language किस प्रकार विकास पाकर पूर्ण या मानक भाषा बनती है आदि-आदि प्रश्न का उत्तर हमें मनो भाषा विज्ञान (Psycho linguistics) के अध्ययन से ही मालूम होता है।

शैली विज्ञान (Stylistics) से हमे जागरूक बनने मे मदद मिलती है। इसके अध्ययन से भाषा के सौंदर्यपरक गुणों का पता लग सकता है और इस प्रकार जो सास्कृतिक मूल्य मिलते हैं उनसे ज्ञानवर्धन होता है [यह बात अलग है कि उससे साहित्य की समालोचना की क्षमता उत्पन्न नही होती] शैली विज्ञान ही 'तुम तो पत्थर हो' वाक्य के नए अर्थ को स्पष्ट करने में सहायक होता है। प्राणि 'पत्थर' (अप्राणि) तो हो नही सकता। इसका मतलब 'तुम' (प्राणिवाचक) 'पत्थर' अप्राणि वाचक) होने मे कोई अन्य अर्थ है। जो कि शैली विज्ञान के अध्ययन से ही संभव है।

भाषा विज्ञान की शाखाएँ, भाषा के तत्वों—'ध्वनि', 'रूप', 'अर्थ', और 'वाक्य' के अनुसार हैं जिन्हे क्रमश: 'ध्वनि विज्ञान', 'रूप विज्ञान', 'अर्थ विज्ञान' और 'वाक्य विज्ञान' कहते है।

"Without phonetics, any person in the field of general speech is considered illiterate."

भाषा विद् Van Riper के उक्त कथन से ध्वनि विज्ञान/स्वन विज्ञान का महत्व स्वतः ही स्पष्ट है।

द्वितीय महायुद्ध से पूर्व अन्य भाषा शिक्षण में प्रायः व्याकरण-अनुवाद पद्धति (grammar-translation method) का प्रयोग किया जाता था। भाषा अध्ययन का आधार उसका लिखित रूप होता था न कि उच्चरित रूप। भाषा-शिक्षण से तात्पर्य लिखना एवं पढना माना जाता था। द्वितीय महायुद्ध के बीच सेना व गुप्तचरों को दूसरे देशों में जाकर वहाँ के दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त भाषा रूपों को बोलने की आवश्यकता ने अन्य भाषा-शिक्षण के परंपरागत दृष्टिकोण में परिवर्तन ला दिया। इसके साथ ही 20वीं सदी में भाषा शास्त्रियों ने इस बात पर विशेष बल दिया कि भाषा का अर्थ उसका उच्चरित रूप है न कि लिखित रूप। यही कारण था कि भाषा शिक्षण में ध्वनि-विज्ञान का महत्व बढने लगा।

उच्चारण के महत्व का संकेत, आदिकाल से मंत्रों में शक्ति होने के विश्वास की धारणा से भी मिलता है। इसमें संदेह नहीं कि इन मन्त्रों का वास्तव में प्रभाव रहता था और इस प्रभाव का मुख्य कारण उनका सही उच्चारण होना हुआ करता था। यदि उच्चारण में थोड़ी भी भूल हो जाती थी तो अर्थ का अनर्थ हो जाता था। इस कथन की पुष्टि में पुराणों का एक उदाहरण देखिए—

पतंजलि ने व्याकरण महाभाष्य में एक कथा का उल्लेख करते हुए उच्चारण के महत्व पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार—त्वष्टा ने इन्द्र को मारने वाले पुत्र की कामना से यज्ञ किया। उसमें इस मंत्र का उच्चारण किया

"इन्द्र शत्रु वर्धस्वा"

उच्चारण भेद से इस मंत्र के दो अर्थ निकलते है—

(i) मेरा पुत्र इन्द्र को मारने वाला बने।

(ii) मेरे पुत्र को मारने वाला इन्द्र हो।

त्वष्टा ने त्रुटिवश ऐसा उच्चारण किया जिसका अर्थ वाक्य संख्या (ii) वाला ही निकलता था। इसलिए त्वष्टा का पुत्र वृतरासुर इन्द्र द्वारा मारा गया।

आगे की पंक्तियों में हम भाषा-विज्ञान के ध्वनि विज्ञान शाखा का अन्य भाषा शिक्षण में विस्तृत उल्लेख करेंगे। इस विज्ञान में, जैसा कि उसके नाम से स्पष्ट है, ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है। भाषा के चार कौशलों—सुनना (सुनकर समझना), बोलना, पढना (पढकर समझना) और लिखना, पर अधिकार प्राप्त करने के लिए ध्वनि विज्ञान का ज्ञान आवश्यक है। ध्वनि विज्ञान में भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों के उच्चारण तथा प्रयत्न के अवयवों का वर्णन विशेष रूप से किया जाता है जिससे उस भाषा की ध्वनियों को सीखने सिखाने में सुगमता होती है और

प्रयोग के आधार पर उच्चारण सिखाया जाता है। ध्वनि विज्ञान की इस शाखा (उच्चारणिकी) के द्वारा ही हम अन्य भाषा शिक्षण में उन ध्वनियों के उच्चारण सिखा सकते है जो ध्वनियां सीखने वाले की भाषा में नही है। उदाहरणार्थ, हिंदी की मूर्धन्य नासिक्य 'ण' ध्वनि कई भारतीय भाषाओं मे नही है, अतः अन्य भाषा भाषी उसे 'न' की तरह उच्चारण करते है। भाषा विज्ञान की सहायता से ही उन्हे उच्चारण स्थान और प्रयत्न समझा कर उच्चारण सिखाने मे सफलता मिल सकती है। यदि मातृभाषा भाषी की कोई ध्वनि अन्य भाषा मे मिलती-जुलती है तो वह निश्चित रूप से ही अन्य भाषा की इस मिलती-जुलती ध्वनि को अपनी भाषा की ध्वनि से प्रतिस्थापित करेगा, जो कि लक्ष्य भाषा की ध्वनि के सही उच्चारण करने मे बाधक सिद्ध होगी। इस स्थिति मे भाषा विज्ञान बताएगा कि किस प्रकार दोनो ध्वनियो से युक्त न्यूनतम युग्म (minimal pairs) बनाकर उनका लगातार उच्चारण अभ्यास करवाया जाए।

ध्वनि विज्ञान मे ध्वनियो का विश्लेषण/अध्ययन किया जाता है। किसी भाषा विशेष की ध्वनियो का अध्ययन, स्वनिम विज्ञान मे किया जाता है। अर्थ भेदक गुण से युक्त ध्वनियो को 'स्वनिम' (phoneme) कहते है। वस्तुतः स्वनिम में अपना कोई अर्थ नही होता, अपितु उनके कारण अर्थ में परिवर्तन हो सकता है। जैसे— 'कल' और 'खल' शब्दो मे 'क' और 'ख' ध्वनियो के कारण ही शब्द बदल गए है। इसलिए 'क' और 'ख' दो अलग-अलग स्वनिम हुए। यह उदाहरण भाषा विशेष (हिंदी) का है। अन्य भाषाओं मे ये अलग-अलग स्वनिम हो, ऐसा आवश्यक नही है।

ध्वनियो का स्वरूप प्रस्तुत करने मे अनुभव और अभ्यास बहुत उपयोगी होते है। अनुभव पर आधारित विश्लेषण बहुत कुछ हमारा काम चला सकता है। उच्चारण को हम देख भी सकते हैं और सुन भी सकते है। ध्वन्यात्मक विवरण के लिए ध्वनियो को सुनना ही काफी नहीं होता बल्कि अवयवों की क्रियाओं को हमें देखना भी पड़ता है। इस क्रिया को देखने मे भी कुछ कठिनाइयाँ आती है। मुख के अंदर के अवयवों की क्रियाओं को देखना कठिन है। इसके लिए यंत्रो की सहायता लेनी पड़ती है, एक्सरे फोटोग्राफी द्वारा स्वर तंत्रियों का संचालन देखा जा सकता है। ध्वनि के स्पर्श स्थान को तालुचित्र मे, उसकी दीर्घता, घोषत्व, प्राणत्व आदि को कायमोग्राफ द्वारा देखा जा सकता है।

अन्य भाषा शिक्षण में खंडेतर (Suprasegmental) ध्वनियो का अध्ययन भी महत्त्व रखता है। ये ध्वनि गुण—दीर्घता, संक्रमण, अनुतान, अनुनासिकता और बलाघात हैं। ये भी अर्थ भेद करने मे सक्षम है। इन्ही गुणो द्वारा हम कल—काल, नदी—नंदी, हँस—हंस, मैं बाजार जा रहा हूँ।—मैं बाजार जा रहा हूँ। मे अंतर

कर अर्थ भेद बना सकते है। इस प्रकार स्पष्ट हो गया होगा कि इनके अध्ययन के बिना भाषा शिक्षण अधूरा ही होगा। चूंकि ये ध्वनि विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र मे हैं, और ध्वनि विज्ञान, भाषा विज्ञान का ही अंग है इसलिए भाषा शिक्षण के लिए भाषा विज्ञान का उपयोगी होना स्वतः ही सिद्ध हो जाता है।

अन्य भाषा शिक्षण मे रूप विज्ञान (व्याकरण) के अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्ता भी देखी जा सकती है। किसी भाषा मे शब्दो का निर्माण की व्यवस्था देखनी ही पड़ती है। उसको समझे बिना अर्थ स्पष्ट होने मे कठिनाई उपस्थित होती है। शब्द मे कितने रूपिम है ?, वे मुक्त है या आबद्ध ?, क्या आबद्ध रूपिम का भी अर्थ है ?, है, तो उसे कैसे सीखा जाय ? हिंदी भाषा के शब्द 'घोडे' को लें। यह एक शब्द होते हुए भी दो रूपिमों (1 घोड़ा, 2.-ए) का योग है। यह हम देखते हैं कि 'घोडा' शब्द भी है और रूपिम भी। क्योंकि इसका स्वतंत्र अर्थ है। '-ए' शब्द तो नही है परंतु रूपिम है। वस्तुत. '-ए' ऐसा रूपिम नही है जो कि स्वतंत्र अर्थ रखता हो परंतु यह 'घोडा' शब्द मे प्रयुक्त होकर बहुवचन का अर्थ देता है। इस प्रकार '-ए' रूपिम, बद्ध रूपिम कहलाएगा। अत रूपिम विज्ञान के अध्ययन से हम जान पाते हैं कि एक शब्द मे एक या एक से अधिक 'रूपिम' हो सकते है परंतु एक 'रूपिम' के लिए उसका 'शब्द' होना आवश्यक नही होता। इसी विज्ञान के क्षेत्र मे ही रूप स्वनिम विज्ञान (morphophonemics) का अध्ययन किया जाता है। इसके अध्ययन के बिना हम 'बहू' और 'डाकू' जैसे शब्दो के बहुवचन रूप 'बहुओं' और 'डाकुओं' को देखकर नही जान पाएँगे कि कैसे और क्यों दीर्घ स्वरो का ह्रस्वीकरण हो गया। भाषा की प्रकृति मे आदि, मध्य और अंत्य प्रत्यय हैं या नही ?, इनके आधार पर शब्दो के निर्माण व अर्थ कैसे निश्चित हो सकते हैं ? कब शब्द', 'पद' और 'पद', 'शब्द' बन जाता है ? आदि की जानकारी भाषा विज्ञान के अध्ययन के बिना संभव नही हो सकती। हिंदी मे रंजक क्रियाएँ अपना कोशीय अर्थ नही रखती, जैसे—'आ जाओ' में 'जाओ' (जाना) का अर्थ नहीं है यह मात्र 'आ' (आने) के अर्थ को उभारने, उसमे रंग भरने का कार्य करती है। यदि हम अहिंदी भाषी को इस प्रकार का अर्थ नही समझा पाए तो वह क्या समझेगा ? शायद वह समझेगा कि कहने वाला आने (आ) और जाने (जाओ) के लिए कह रहा है ! लेकिन दोनो कार्य एक साथ कैसे संभव है ? यह विचार कर वह निश्चित रूप से कुछ भी नहीं समझ पाएगा और अपना सर पकड़ कर बैठ जाएगा। भाषा संबंधी इस प्रकार की दुविधा वाली स्थिति हर भाषा मे मिल सकती है। जिनका समाधान मात्र भाषा विज्ञान द्वारा ही संभव है और जब तक ये जानकारी नही होगी तब तक भाषा-शिक्षण अधूरा ही होगा।

अन्य भापा-शिक्षण में पुरानी पद्धति (अनुवाद पद्धति/व्याकरण पदधति) का प्रयोग आरभ मे नही करना चाहिए जैसा कि नाइडा ने अपनी पुस्तक 'Learning Foreign Language' मे बताया है—''दूसरी भाषा सीखते समय अपनी भाषा और अन्य भापा के कोई ख्याल हमारे मस्तिष्क मे नही होने चाहिए।' [We must start with a clean slate] जब व्यक्ति अन्य भापा की शब्दावली, सरचना, अर्थ आदि में समानता व असमानता देखकर आश्चर्य चकित हो जाता है। यह आश्चर्य उसे तभी तक रहता है जब तक वह यह नही जान लेता कि उसकी भापा का सबंध किस भाषा परिवार से है ? उसकी भाषा किस भापा के अधिक निकट है ? दो भापाओ के शब्दो के अर्थ क्यो बदल जाते है ? अर्थ तत्व और सबध तत्व क्या है ? उनका आपसी सबंध क्या है ? क्या वाक्य मे शब्दो का स्थान निश्चित होता है ? यदि शब्दो के स्थान बदल देंगे तो अर्थ भी बदल जाएगा। वाक्यों में शब्दो के बिकारी रूप क्यों स्थिर रहते है और क्यो बदल जाते हैं ? आदि प्रश्नों का उत्तर केवल भाषा विज्ञान ही दे सकता है जिनके अभाव मे भापा शिक्षण अधूरा होगा।

वाक्य विज्ञान मे भी कई ऐसे बिंदु हैं जिन्हे समझाना अति आवश्यक हो जाता है। वाक्य के कहने का ढंग, उसमें प्रयुक्त किसी शब्द विशेप पर बल देना आदि वाक्य के अर्थ को बदल देता है। वाक्य मे व्यवहृत इस प्रकार की बातो की ओर वाक्य विज्ञान सकेत करता है। जिसके अध्ययन के बिना भापा शिक्षण पूर्ण नही हो पाता। मैं डॉक्टर का इलाज कर रहा हूँ। वाक्य के दो अर्थ निकलते है। (देखिए—'हिंदी के कुछ द्विअर्थक वाक्य शीर्षक मे) इस अस्पष्टता को समाप्त करने के लिए हमें उसी वाक्य को इस प्रकार बोलना चाहिए—'मैं डॉक्टर से इलाज करवा रहा हूँ।' तब अस्पष्टता समाप्त हो जाएगी। अब प्रश्न यह उठता है कि कब द्विअर्थक वाक्य होता है कि हम उसे दूसरे ढग से कहे ताकि द्विअर्थकता कम या समाप्त हो सके, इसके लिए वाक्य विज्ञान ही सहायता कर सकता है तभी हम भापा शिक्षण के मूल लक्ष्यों की प्राप्ति कर पाएँगे। चूँकि वाक्य विज्ञान भाषा विज्ञान की एक शाखा है अत. भापा विज्ञान का अन्य भापा शिक्षण मे उपयोगी होना स्वतः सिद्ध हो जाता है।

अन्य भापा शिक्षण में भाषा विज्ञान की महत्वपूर्ण शाखा है 'अर्थ विज्ञान'। जब हम सप्रेषण के लिए ही भापा का प्रयोग करना चाहते है, यदि वह सप्रेपण न हो सके तो भाषा प्रयोग का क्या मतलब ? अपने मस्तिष्क में उत्पन्न विचार/अर्थ को दूसरो तक पहुँचाना ही भाषा प्रयोग का उद्देश्य है। अतः अर्थ का स्पष्ट होना भापा सप्रेषण के लिए अनिवार्य शर्त है।

अर्थ विज्ञान मे अर्थ विस्तार, अर्थ परिवर्तन, अर्थ संकोच के कारण भापा मे अर्थ भेद उत्पन्न होता है किसी शब्द के अर्थ को विलोमार्थक समानार्थक शब्दों द्वारा

ी समझाया जा सकता है। रूपगत समान और अर्थगत भिन्नता वाले शब्दो के र्थ कैसे अलग-अलग समझे जाएँ ? वाक्यो मे उनके प्रयोग मे कौन-सा शब्द रखा जाय ? कोई शब्द 'एक्रोनीम' है या नही ? 'तितली' के सादृश्य मे 'नितला' शब्द क्या उचित होगा ? वृत्तपरकता (सर्कयूलरिटी) कैसे समाप्त हो ? सबध समूह/सह सबध (कोलोकेशन) को जाने बिना क्या 'जलोदर' शब्द का अर्थ स्पष्ट है ?, 'मर जाना' 'देहान्त' होना के अर्थो मे क्यो और क्या अतर है ? क्या denotation, connotation और range of application के ज्ञान के बिना अर्थ निश्चित किया जा सकता है ? taboo jargon, slang, vulgar शब्दों को जाने बिना सीखी गई भाषा पूर्ण भाषा है ?, आदि-आदि ऐसे प्रश्न है जिनका उत्तर नकारात्मक है। इन सभी प्रश्नों के उत्तर अर्थ विज्ञान देता है। अर्थ विज्ञान, भाषा विज्ञान की शाखा है, अतः अन्य भाषा शिक्षण मे भाषा विज्ञान कितना उपयोगी है ? यह कहने की आवश्यकता नही है।

भाषा शिक्षण में शिक्षक पूरे दिन मे मात्र कम समय तक ही शिक्षण कार्य करा सकता है शेष समय शिक्षार्थी को स्वाध्याय करना पड़ता है। भाषा पढने, समझने मे कोश का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि कभी किसी शब्द का अर्थ समझना हो तो हमें कोश की शरण में जाना होता है। कोश को देखना भी एक कला है। अन्य भाषा भाषी जब हिंदी का कोश देखते हैं तो उन्हें जिस प्रकार से ज्ञान वर्धक सबधी लाभ प्राप्त होता है तब वे कोश के महत्व को स्वत. ही समझ जाते है।

कोश मे शब्द विशेष कहाँ और कैसे देखने है ?, शब्द के रूपो में कौन से रूप मिलेगे और कौन से नही जैसे—'ज्ञान' शब्द कहाँ किस क्रम मे होगा, 'तत्र' शब्द कहाँ होना चाहिए ?, 'ऋषि' शब्द का स्थान क्या होगा ?, 'आब' शब्द 'हिंदी कोश' मैं ढूंढना क्या सार्थक होगा ? 'नौ दो ग्यारह' की प्रविष्टि होगी कि नही ? किसी शब्द का उच्चारण वास्तव में क्या होगा इसे कहाँ देखना चाहिए ? एक ही शब्द कोश में एक शब्द के कई अर्थो मे क्यो प्रथम अर्थ ही उपयुक्त होता है ? 'लेबुल' से क्या अर्थ निकल सकता है ?, विशेषक चिह्नों के प्रयोग का क्या कारण है ? किसी शब्द का मूल रूप कौन सा था ? उसे किस प्रकार के कोश मे ढूंढा जा सकता है ? शब्दो की व्याकरणिक सूचना कहाँ मिल सकती है ? क्या 'छाता' का स्त्रीलिंग 'छाती' और 'घडी' का पुल्लिंग 'घडा' सभव है ?, 'नेता' के सादृश्य मे यदि कोई व्यक्ति 'नेत्री' शब्द प्रयोग करता है तो इसके उचित होने का प्रमाण कहाँ मिल सकता है ?, 'यह' के अन्य रूप 'इस', 'इन', 'इन्हें' क्या कोश मे ढूंढे जा सकते है। 'लडकियाँ', 'लडके' 'लडको', 'लड़कियो' रूप कोश मे क्यो नही मिलते/होते ? मातृ भाषा भाषी (हिंदीतर) यदि अपनी भाषा का 'हिंदी' शब्दावली से सबध देखना चाहे तो किस प्रकार का कोश उपयुक्त होगा ? 'विश्वकोश/ज्ञान कोश', 'शिक्षार्थी कोश' 'भाषिक कोश' या 'सामान्य कोश' भाषा शिक्षार्थी की किन-किन आवश्यक-

ताओ की पूर्ति कर सकेगा ? आदि इसी प्रकार के कई अन्य प्रश्न है जिनका उत्तर कोश विज्ञान अध्ययन ही द्वारा सभव है। इसके अध्ययन बिना भाषा कौशलो, भाषा सप्रेषण पर अधिकार पाना सभव नही होता।

अहिंदी भाषा भाषी 'हिंदी कोश' या अपनी मातृभाषा का कोश बनाना चाहे को उसे क्या करना होगा ? उसे समझना होगा कि पुरातन शब्द रखने चाहिए या नही, अन्य भाषाओ की आदात शब्दावली कितनी होनी चाहिए, 'कतरन' (clipping), 'अवतरण' (excerp), 'अभिलेख' (inscription), 'पाण्डुलिपि' (manuscript), 'प्रविष्टि लेखागार' (scriptorium) आदि का क्या महत्व है ? इन सभी प्रश्नो के उत्तर कोश कला विज्ञान द्वारा ही प्राप्त किए जा सकते है जो कि भाषा विज्ञान के अध्ययन के बिना पूर्ण नही हो सकता। भाषा विज्ञान उक्त सभी प्रश्नो के उत्तर देने मे सक्षम है इसी से अन्य भाषा शिक्षण मे इसकी उपयोगिता स्पष्ट हो जाती है।

आवश्यकता आविष्कारो की जननी है। समय की माँग और आवश्यकताओ को देखते हुए भाषाविदो ने नए-नए अनुसधान कार्य किए जिससे भाषाओ की दुरूह से दुरूह सरचनाओ मे निहित अर्थो तक पहुँचा जा सका है। आज हमें भाषा विश्लेषण के नए-नए साँचे उपलब्ध हो सके हैं जिनकी सहायता से हम भाषा की स्पष्टता, गहन स्तर, गूढ़ अर्थो तक पहुँचने में सफल हो सकते है। भाषा सीखने और सिखाने मे इन भाषा विश्लेषण सिद्धान्तो के नए साँचो (models) का अपना महत्व है। जो कि हमें भाषा सीखने मे सहायक होते है।

परंपरागत व्याकरण अब हमारे कई प्रश्नो के उत्तर नही दे पा रहे हैं। पाणिनी, कामता प्रसाद गुरु, ब्लूमफील्ड, हाकेट, हैरिस, हिल, नाइडा, सस्यूर, बोआज समीर, फर्थ, पाइक, फ्राइज आदि विद्वानो के ऋण से भाषा विज्ञान मुक्त नही हो सकेगा, परतु नई-नई विश्लेषण पद्धतियो ने हमे अन्य भाषाविदो की ओर देखने पर विवश कर दिया है।

'कच्चे आम और अमरूद' मे 'आम और अमरूद दोनो ही कच्चे' हैं या 'केवल आम कच्चे हैं और अमरूद नही।' के दोनो अर्थो मे से वास्तविक अर्थ भाषाविद् सी० सी० फ्राइज के निकटस्थ अवयव (Immediate Constitute या I. C. analysis) विश्लेषण द्वारा सभव है। K. L. Pike के बंधिम व्याकरण (Tagmemics) द्वारा हम 'प्रकार्य' और 'तद्व्यजक' के सह सबध 'टैग्मीम' के माध्यम मे भाषा विश्लेषण कर सकते है। पाइक ने ही अपने इस मॉडल द्वारा 'लूपबैक', 'स्किप' और 'मल्टीपिल नेस्टिंग' की सकल्पना प्रस्तुत कर भाषा विश्लेषण द्वारा अन्य भाषा शिक्षण को सरल बनाया।

भाषा विश्लेषण में नया अध्याय आरंभ करने वालों में से सबसे प्रसिद्धि यदि मिली है तो वह भाषाविद् है—चामस्की। चामस्की ने भाषा विज्ञान के क्षेत्र में रूपांतरण व्याकरण (Transformation grammar) के माध्यम से ही भाषा अस्पष्टता को सरल व स्पष्ट रूप से समझाने में मदद की। उन्हीं के रूपांतरण व्याकरण ने बताया कि—

'राम की तस्वीर' वाक्य के तीन अर्थ

(i) राम द्वारा बनाई गई तस्वीर,

(ii) राम के स्वरूप की तस्वीर, और

(iii) राम के स्वामित्व की तस्वीर कैसे संभव है ? इसी प्रकार—

'सिपाही ने दौड़ते हुए चोर को पकड़ा।

वाक्य में दोनों अर्थ कैसे संभव है ?

1. [सिपाही ने दौड़कर चोर को पकड़ा। या
2. जो चोर दौड़ रहा था उसे सिपाही ने पकड़ा।]

हर भाषा में उक्त प्रकार की द्विअर्थकता/बहुअर्थकता वास्तव में भाषा के वास्तविक अर्थ तक पहुँचाने में बाधा उपस्थित करती है जिससे भाषा अधिगम/शिक्षण कार्य और कठिन हो जाता है। चामस्की के उक्त साँचों ने इस प्रकार की कठिनाई दूर करने में काफी सीमा तक सहायता की है।

कहा जाता है कि कोई भी पहुँच (approach) पूर्ण नहीं होती। यही बात भाषा विश्लेषण के उक्त मॉडल के संबंध में भी रही।

अतः आगे चलकर भाषाविद् फिलमोर ने 'कारक व्याकरण' (Case grammar) नामक नया साँचा प्रस्तुत किया। वास्तव में इसमें कोई नई चीज नहीं है अपितु यह 'रूपांतरण व्याकरण' का ही संशोधित सिद्धांत है। इसमें फिलमोर ने वे कमियाँ दूर करने का प्रयास किया जो चामस्की के 'रूपांतरण व्याकरण' में रह गई थीं।

इनके अलावा अन्य भाषा शिक्षण में सहायक भाषा विश्लेषण के साँचों में सिडनी लैंब का 'स्तरपरक व्याकरण' (Stratificational grammar), एम० ए० के० हैलिडे का 'व्यवस्थापरक व्याकरण' (Systemic grammar) और येल्मस्लव का 'भाषिम विज्ञान' (Glossematics) ऐसे साँचे हैं जो भाषा विश्लेषण में अपनी-अपनी सीमाओं के साथ उपयोगी हैं। कहना अनुचित न होगा कि इन सभी के बाद भी हमें संरचनात्मक वैयाकरणों (structural grammarians) को नहीं भूलना चाहिए।

इस प्रकार हमने देखा कि अन्य भाषा शिक्षण में किस प्रकार से विविध व्याकरण/साँचे सहायक है। भाषा विज्ञान के अध्ययन के बिना उन्हें जानना, मात्र एक कल्पना ही होगी। पाठकगण स्वय ही बताएँ क्या भाषा विज्ञान के बिना भाषा शिक्षण, सफल भाषा शिक्षण होगा ? विशेषकर अन्य भाषा शिक्षण के सदर्भ मे।

निष्कर्ष के रूप मे हम कह सकते है कि भाषा विज्ञान—

(1) अन्य भाषा शिक्षण मे अध्येय/लक्ष्य भाषा के विभिन्न निर्णायक तत्वों तथा उसकी सरचना का पूरा ज्ञान भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण देता है।

(2) लक्ष्य भाषा और मातृ भाषा के सम-विषम तत्वो के स्पष्टीकरण के द्वारा द्विभाषी समस्या का समाधान ढूढने मे भाषा विज्ञान सहायक होता है।

(3) भाषा सीखने वालों की भाषाई उपलब्धियों का मूल्याकन व मापन करता है।

(4) भाषा शिक्षण मे पाठ्य सामग्री तैयार करने, प्रस्तुत करने तथा प्रस्तुत करने के माध्यम को निश्चित करने आदि का काम भाषा विज्ञान द्वारा हल होता है।

भाषा विज्ञान की विभिन्न शाखाएँ दो भाषाओ के विभिन्न तत्वो का विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं जो भाषा कौशलो के अभ्यास मे सहायक बनती हैं। इसके बिना भाषा शिक्षण का प्रयास वैसा ही होगा जैसा कि किसी रोग को समझे बिना उसका उपचार आरभ कर देना।

इन सभी कारणो से भारत के प्राचीन मनीषियो ने भाषा शिक्षण मे भाषा विज्ञान के महत्व को विशेष स्थान दिया। भारत जैसे विशाल और बहुभाषामय देश मे भाषाओ के शिक्षण को विशेषकर राजभाषा के रूप मे हिंदी शिक्षण की जो समस्याएँ अनुभव की जा रही है उनका वैज्ञानिक समाधान भाषा-विज्ञान पर आधारित भाषा शिक्षण विधि से ही हो सकेगा।

3. **संरचनात्मक भाषा विज्ञान** (Structural Linguistics) **का अर्थ**

भाषा की सरचना का अध्ययन ही Structural Study है और पद्धति विशेष से किया गया अध्ययन (भाषा वैज्ञानिक) ही संरचनात्मक भाषा विज्ञान का क्षेत्र हो जाता है। ग्लीसन ने अपनी पुस्तक 'An introduction to descriptive linguistics' की भूमिका मे लिखा है "......descriptive linguistics, The discipline which studies languages in terms of their internal structures' वे आगे (अध्याय-1) मे लिखते है—"What then is this

structure ? Language operates with two kinds of material, one of these is sound............The other is ideas, social situations, meaning ...." इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सभी अध्ययन सरचनात्मक होते है। प्रो० भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक भाषा विज्ञान' में इसी मत को स्पष्ट करते हुए लिखा है—

"सरचनात्मक भाषा विज्ञान नाम अपने विस्तृततम अर्थ मे सभी प्रकार के भाषा विश्लेषण को अपने मे समाहित कर सकता है। इस प्रकार आधुनिक भाषा विज्ञान पूरा का पूरा संरचनात्मक भाषा विज्ञान कहा जा सकता है—वस्तुत भाषा का कोई भी विश्लेषण भला असरचनात्मक कैसे हो सकता है ? इस विस्तृततम अर्थ की दृष्टि से आधुनिक भाषा विज्ञान मे जो-जो नाम सम्प्रदाय, साँचे (मॉडल) उल्लेख्य है, उनमे यूरोपीय तो, लिए गए है। जहाँ तक अमेरिका का प्रश्न है चामस्की को प्राय सरचनावादी नही, अपितु रूपान्तरण प्रजननवादी कहा तथा जाना जाता है, अत उन्हे अलग किया जा रहा है। कारकीय व्याकरण भी उन्ही का विकास है अतः उसे भी अलग रखा गया है। शेष अमेरिकी भाषाशास्त्रियों मे यो तो पाइक (बधिम विज्ञान) तथा लैब (स्तरपरक व्याकरण) भी अमेरिकी सरचनावादियों से बाहर नही कहे जा सकते, किंतु उनकी पद्धति पूर्णत. उसी रूप में सरचनावादी नही है, जैसे हॉकिट, हैरिस आदि ब्लूमफील्डीय परपरा के भाषाशास्त्रियो की है।"

आगे उन्होने सरचनात्मक शब्द के प्रयोग की भाषा विज्ञान जगत मे अनेकरूपता का सकेत किया है जिसे सक्षेप में यहाँ दिया जा रहा है—

किसी भी भाषा की सरचना पर किसी भी रूप मे किया गया कोई भी कार्य मूलत' संरचनात्मक भाषा विज्ञान का काम है अर्थात् सभी भाषाविद् एक प्रकार से सरचनावादी हैं। इतालवी भाषाविद् लेप्शी ने अपनी पुस्तक 'A Survey of Structural Linguistics' मे सस्यूर, येलमस्लव, बोआज, सपीर, ब्लूमफील्ड फर्थ, पाइक, लैब, हैलिडे, चामस्की को सरचनावादी ही कहा है।

दूसरी तरफ पामर आदि कुछ लोग इसे सीमित अर्थ मे लेते है। उनके अनुसार सरचानात्मक भाषा विज्ञान की जड़े ब्लूमफील्ड मे है जिसका वास्तविक रूप हाकेट, फ्राइज, नाइडा हैरिस, हिल, अनुयायिओं में मिलता है। ये दोनों मत अपनी-अपनी जगह पर ठीक है क्योंकि सभी विश्लेषण सरचनाओं का ही होता है, परतु समय के साथ भाषा विश्लेषण के विभिन्न साँचों का विकास हुआ तब संरचनात्मक भाषा विज्ञान का एक सीमित अर्थ मे भी प्रयोग होने लगा है। यह सीमित अर्थ है ब्लूमफील्ड के अनुयायियो का भाषा विज्ञान। सरचना शब्द का भाषा विज्ञान के क्षेत्र मे सबसे ज्यादा प्रयोग इन्ही लोगो ने किया इसलिए इन्हे सरचनावादी कहा गया है।

इन दोनो विस्तृत व सीमित अर्थो के बीच एक अन्य अर्थ है। इस अर्थ मे सरचनात्मक भाषा विज्ञान के मोटे रूप से दो रूप माने जाते है—(1) अमेरिकी (2) यूरोपीय।

एक मतानुसार अमेरिकी सरचनात्मक भाषा विज्ञान, ध्वनि रूप, वाक्य के स्तर पर भाषा की सरचना का अलग-अलग अध्ययन करता है तथा तीनो को प्राय. अलग-अलग रखता है तो यूरोपीय भाषा विज्ञान इन स्तरो को एक-दूसरे से सुसबद्ध करके भाषा का एक समग्र चित्र लाने का प्रयास करता है। इसमे फर्थ, हैलिडे, कोपेनहैगेन सप्रदाय, प्राग सप्रदाय आदि है।

अमरीकी सरचनावादी भाषा विज्ञान मुख्यत' 'वितरण' पर आधारित (based on distribution) है तो यूरोपीय सरचनात्मक भाषा विज्ञान मुख्यत 'प्रकार्य' पर आधारित (based on function) है। प्रथम को 'वितरणवादी' और दूसरे को 'प्रकार्यवादी' कहा जा सकता है।

4 अतर भाषा (Inter Language) और उसकी विशेषताएँ

अन्य भाषा शिक्षण मे सक्रातिपरक भाषा (transitional language) की कल्पना कई विद्वानो ने की है। पिट कार्डर ने अपने लेख Idio-syncratic Dialects and Error Analysis (IRAL 9 2, 1971, 147-59) मे इसे वैयक्तिक बोली और सेलिकर ने 'अतर भाषा' (Inter-language) कहा है।

इसके सबध मे डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक 'भाषा शिक्षण' मे स्पष्ट करते हुए कहा है कि—

"जब व्यक्ति किसी दूसरी भाषा सीखने की ओर प्रवृत्त होता है तब वह लक्ष्य भाषा (T. L) का अव्यक्त व्याकरण उसी प्रकार सीखता है जिस प्रकार वह अधिगम प्रक्रिया द्वारा मातृभाषा का। पर अन्य भाषा के अव्यक्त व्याकरण और मातृभाषा के अव्यक्त व्याकरण के सीखने की प्रक्रिया एक होने पर भी उनमे एक प्रमुख अतर होता है। जिस लक्ष्य भाषा को व्यक्ति सीखना है और अपने व्यवहार मे साधना है उसे पूर्ण रूप मे वह हमेशा नही सीख पाता। इसका एक कारण यह है कि जिन विविध क्षेत्रो मे और जिस सार्थकता के साथ वह मातृभाषा का प्रयोग दैनिक जीवन मे करता है, उस विविधता और सार्थकता के साथ वह लक्ष्य भाषा का नहीं करता, दूसरा 'अतिसामान्यीकरण' के कारण जिन नियमो का प्रयोग वह गलत सदर्भो मे करता है वे अत्यत शीघ्र 'विशेषीकरण प्रक्रिया' द्वारा न सुधार लिए जाने के कारण जड़ीभूत और स्थिर' (fasilized) हो जाते है। इसलिए विद्वानो ने अन्य भाषा सीखने की प्रक्रिया के सदर्भ मे सक्रातिपरक भाषा (transitional language) की सकल्पना की है।" इसकी विशेषताएँ इस प्रकार है—

1. अतरभाषा भी एक भाषा विशेष या बोली है क्योंकि यह 'नियमो की व्यवस्था' से परिचालित होती है भले ही ये नियम न तो पूर्णत स्रोत भाषा के होते है और न लक्ष्य भाषा के ।

2 अतर भाषा वह विशेष भाषा होती है जिसके नियम लक्ष्य व स्रोत दोनो भाषाओं के नियमो से जुडे होते है परतु इसके सभी नियम दोनो भाषाओ पर आधारित नही होते ।

3 अंतर भाषा अस्थिर और परिवर्तित होती रहती है। कभी-कभी कुछ नियम दृढ हो जाते है ।

4. शिक्षार्थी जब अन्य भाषा सीखने मे त्रुटियाँ करता है तब ये त्रुटियाँ वस्तुत अतर भाषा की ही होती है।

5. अतर भाषा मानसिक दृष्टि से यथार्थ भाषा होती है । इसलिए अगर बौद्धिक स्तर पर यदि उसे कोई नियम (लक्ष्य भाषा का) बता भी दिया जाय जिसके न जानने से वह त्रुटि करता हो तब भी आदतवश वह अतर भाषा के नियमानुसार भाषा व्यवहार करेगा ।

त्रुटि विश्लेषण (Error Analysis) मे जिसे त्रुटि कहा गया है वही अतर-भाषा के व्याकरण से संबधित होती है । अत वे ही प्रयोग त्रुटिपूर्ण कहे जा सकते है, जो एक तरफ 'अतर-भाषा' के प्रयोग क्षेत्र के भीतर आते हैं और दूसरी तरफ जिनका प्रयोग लक्ष्य भाषा की मानक व्यवस्था से च्युत हो। परतु अन्य भाषा के व्यवहार मे अन्य प्रकार के भी अशुद्ध प्रयोग देखने को मिलते हैं। ये अन्य प्रकार के अशुद्ध प्रयोग वे है जिन्हें दोष व गलतियाँ (Lapses, mistakes) कहा गया है। जो क्रमश व्यवहार और अज्ञान सदर्भित होती है ।

5 हिंदी में लिग व्यवस्था

किसी भी भाषा को सीखने के लिए यह आवश्यक है कि उसे अधिक से अधिक सुना और बोला जाय । अहिंदी क्षेत्रों का दौरा करने से मालूम होगा कि वहाँ के हिंदी अध्यापक भी हिंदी मे नही बोलते । यदि उन्हें हिंदी मे दक्षता प्राप्त करनी हो तो सबसे सरल तरीका है हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना । यदि प्रयोग मे त्रुटियो के कारण सुनने वाले हँसते हैं तो उस पर विचार न कर इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि इस प्रकार की त्रुटि अगली बार न हो ।

अहिंदी भाषी जब हिंदी सीखते/बोलते हैं तो उनके सामने कई समस्याएँ आती है । लिग की समस्या उनमें से एक है । यह समस्या वास्तव में हिंदी भाषा की प्रकृति के कारण ही है इसी के आधार पर हमें इस भाषा मे कई नियम और कई अपवाद मिलते है । शायद यही कारण है कि हिंदी के लिग सबंधी नियमों को

याद रखना अति कठिन हो जाता है। यह कठिनाई इस भाषा के अधिकाधिक प्रयोग से स्वतः ही दूर हो सकती है। इससे यह नही समझ लेना चाहिए कि लिंग संबंधी नियमों का कोई महत्व ही नही है।

लिंग संबंधी प्रयोग के नमूने कभी-कभी मनोरंजन का साधन भी हो जाते है। अहिंदी भाषी अपने सामान्य ज्ञान से जानते है कि अकारांत पुल्लिग शब्दो को ईकारांत करने से स्त्रीलिंग हो जाते है। यह तब हास्यास्पद हो जाता है जब वे 'छाता' का स्त्रीलिंग 'छाती' और 'घड़ी' को 'घडा' का स्त्रीलिंग बताते है जो कि त्रुटिपूर्ण है। 'सीता', 'रमा', 'उमा' शब्द आकारांत होते हुए भी स्त्रीलिंग है जबकि 'पानी', 'घी' और 'हाथी' ईकारांत होते हुए भी पुल्लिंग है।

जैसा कि ऊपर बता चुके है कि हिंदी की प्रकृति ही ऐसी है जिसमे इस प्रकार की त्रुटियां बहुत होती है। 'मूँछ', 'दाढ़ी' का संबंध स्त्रियों से न होने पर भी दोनों शब्द स्त्रीलिंग है और 'स्तनों', 'थनो, 'पेटीकोट', 'ब्लाउज' का संबध पुरुषों/पुल्लिग प्राणियों से न होने पर ये शब्द पुल्लिंग है। 'लूप' परिवार नियोजन का आविष्कार किया हुआ शब्द है जिसका संबध स्त्री से होते हुए भी पुल्लिंग है। 'दूध' सदैव मादा प्राणियों से प्राप्त होता है जबकि पुल्लिंग होता है। 'दही' स्त्रीलिंग व पुल्लिंग दोनों माने जाते हैं। इसके समर्थन मे यदि आप कहें कि 'दही', 'दूध' और 'दही' के योग से बनता है/बनती है तो क्या यह तर्क मान्य होगा? इस प्रकार की दुविधा वाली स्थिति हिंदी भाषी भी स्वयं निश्चित नही कर पाते कि क्या करना चाहिए? फिर अहिंदीभाषियों को तो बहुत कठिनाइयों का सामना करना अस्वाभाविक नही है।

हिंदी की लिंग संबंधी ऐसी स्थिति को देखते हुए यहाँ एक मनोरंजक घटना का वर्णन करना अनुचित न होगा—

एक बार एक मित्र ने अहिंदी भाषी मित्र से 'तोते' की ओर इशारा करके पूछा—यह 'तोता' है या 'तोती' [मादा तोता] कुछ देर विचार करने के बाद अहिंदी भाषी मित्र ने कहा हिंदी मे लिंग की तो समस्या है ही, अतः हम इसके [तोते/तोती] पास पानी रखते है, यदि यह 'पीता' है तो 'तोता' होगा और यदि यह 'पीती' है तो 'तोती' (मादा तोता) होगी।

हिंदी में इस प्रकार की लिंग संबधी कठिनाइयों के बाद भी कुछ नियम यहा पर दिए जा रहे है जिनको ध्यान मे रखने से हिंदी मे लिंग समस्या संबधी कठिनाइयाँ काफी हद तक दूर हो सकती हैं।

हिंदी मे लिंग विधान दो आधारों पर किया गया है :—

(1) प्राकृतिक (2) व्याकरणिक

(1) प्राकृतिक

प्राणियो मे पुरुषवर्गवाची प्राणियों के नाम पुल्लिग—लड़का, घोड़ा, बदर और स्त्रीवर्गवाची प्राणियो के नाम स्त्रीलिंग—लडकी, घोड़ी आदि माने जाते है।

(2) व्याकरणिक

अप्राणियो मे लिंग प्राय रूढि/प्रयोग के आधार पर निश्चित होता है। जैसे पवन, हवा, पानी आदि शब्दो मे 'पवन' और 'हवा' स्त्रीलिंग और 'पानी' पुल्लिग हैं।

यहाँ देखा जा सकता है कि अकारात, आकारात एव ईकारांत का कोई विचार लिंग का आधार नही है। लेकिन कभी-कभी आकारात और ईकारात के आधार पर पुल्लिग व स्त्रीलिंग का निर्णय होता है, जैसे :—

रस्सा—रस्सी

डोरा—डोरी

लेकिन ईकारात स्त्रीलिंग शब्दो को आकारात करने से पुल्लिग बनाने या आकारांत पुल्लिग ईकारात स्त्रीलिंग बनाने का प्रयास करना उचित नही होता जैसे—

'लकड़ी' और 'चिमनी' स्त्रीलिंग शब्दो के 'लकड़ा' और 'चिमना' पुल्लिग शब्द नही बनते इसी प्रकार 'छाता' पुल्लिग शब्द का 'छाती' स्त्रीलिंग नही बनता। इस प्रकार अन्य भी कई ऐसे शब्द है जिनमे यह नियम लागू नही होता अत आवश्यकता इस बात की है कि हम यह न भूले कि सीता, रमा, लकड़ी, चिमनी आदि स्त्रीलिंग और मूँछ, दाढी आदि पुल्लिग शब्द है। इस प्रकार के कई शब्द है जिनकी एक लबी सूची बन सकती है और इन सूची के शब्दो पर कोई नियम लागू नही हो सकता। अतः प्रयोग के आधार पर ही उनका लिंग निर्धारण होता है।

कुछ नियम —

(i) पुरुष व स्त्रीवर्गवाची संज्ञाएँ पुल्लिग है। यह लिंग निर्धारण प्राकृतिक है।

(ii) लोग, सतान, बच्चा आदि शब्दों से दोनो लिगों का बोध होता है।

(iii) पशु, पक्षी, कीडे आदि जातियो का बोध कराती है। वे या तो स्त्रीलिंग है या पुल्लिग। जैसे :—

(अ) खटमल, मच्छर, कीडा, केंचुआ, पक्षी, उल्लू, तोता, भालू आदि-आदि पुल्लिग।

(ब) मछली, चिड़िया. तितली, मक्खी, चील—स्त्रीलिंग।

उक्त वर्ग के शब्दो के पुल्लिग व स्त्रीलिग बनाने के लिए क्रमश नर व मादा शब्दो को जोड़ देते है, जैसे :—

नर खटमल—पुल्लिग	नर तितली—पुल्लिग
मादा खटमल—स्त्रीलिग	मादा तितली—स्त्रीलिग

(iv) समूहवाची शब्दों का लिंग प्रयोग के आधार पर होता है, जैसे —

परिवार, दल, झुड, समूह और कुटुब—पुल्लिग ।

मडली, सभा, प्रजा, टोली, भीड सेना और फौज—स्त्रीलिग ।

नीचे कुछ शब्द वर्ग दिए जा रहे है । इनमे अलग-अलग प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग बनाया जा सकता है :—

-ई

लड़का—लडकी, बेटा—बेटी, घोडा—घोडी, बकरा—बकरी, दादा—दादी, मामा—मामी, मौसा—मौसी आदि

-इया

बुड्ढा—बुढिया, कुत्ता—कुतिया, चूहा—चुहिया, बेटा—बिटिया, आदि

-इन

चमार—चमारिन, सुनार—सुनारिन, लुहार—लुहारिन, धोबी—धोबिन, नाग—नागिन, साँप—साँपिन, बाघ—बाघिन

-नी

शेर—शेरनी, ऊँट—ऊँटनी, मोर—मोरनी

कुछ शब्द पुल्लिग से स्त्रीलिग बनने के बाद बिल्कुल भिन्न हो जाते हैं :—

पिता—माता, फूफा—बुआ, बैल—गाय, पुरुष—स्त्री, मर्द—औरत आदि ।

इस प्रकार बहुत बडी सख्या मे और भी शब्द हैं जिन्हें यहाँ देना उचित नही लगता । अहिंदीभाषी उक्त दिए गए नियमो के अलावा प्रयोग से लिंग प्रयोग मे दक्षता प्राप्त कर सकते हैं । साथ ही साथ लेखक की अन्य पुस्तक* में कुछ पुल्लिग व स्त्रीलिंग शब्दो के कई वर्ग दिए गए हैं । उन्हें देखा जा सकता है ।

6 परसर्ग और उनके अर्थगत प्रयोग

अब तक के अध्ययन मे आप जान चुके होगे कि परसर्ग को कुछ लोग कारक चिह्न, विभक्ति या कारक विभक्ति भी कहते है । कुछ विद्वान संबध एवं सबोधन को कारक नही मानते । (क्रिया से अन्वय न होने के कारण) उनके अनुसार शेष छः कारक ही माने जाने चाहिए ।

कारक	कारक चिह्न (परसर्ग)
1. कर्ता	ने, ०
2. कर्म	को, ०

*भाषा विज्ञान और हिंदी संरचना—पृष्ठ स० 32

3. करण	से, के द्वारा
4. सम्प्रदान	को, के लिए
5 अपादान	से
*6. संबंध	का, की, के
7. अधिकरण	में, पर
*8. सबोधन	हे, ए, अरे।

(1) कर्ता कारक

कर्ता कारक के दो चिह्न (परसर्ग) ० ने है। वाक्य में जब कर्ता के साथ परसर्ग नहीं लगता तब क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार परिवर्तित होते है।

जैसे— राम रोटी खाता है।
सीता रोटी खाती है।
लड़के रोटी खाते है।
लड़कियाँ रोटी खाती हैं।
हम रोटी खाते हैं।

इन वाक्यो से स्पष्ट है कि क्रियाएँ (रेखांकित) कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार परिवर्तित हो रही हैं।

जब वाक्य मे कर्ता के साथ परसर्ग लगता है तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष, वाक्य के कर्ता के अनुसार न बदलकर कर्म के अनुसार बदलता है।

जैसे— राम ने रोटी खाई।
सीता ने फल खाया।
मैंने केले खाए।
तुमने रोटियाँ खाईं।

हिंदी मे 'ने' के इस प्रकार के प्रयोग के कारण अहिंदी भाषियों को कठिनाई होती है। हिंदी में 'ने' के प्रयोग के प्रति सावधानी रखने से, प्रयोग की कठिनाइयाँ काफी सीमा तक दूर हो सकती है। अब हम देखेंगे कि वाक्य मे कर्ता के साथ कहाँ 'ने' का प्रयोग होता है और कहाँ नहीं।

हिंदी में 'ने' का प्रयोग कहाँ होता है?

वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग तभी होता है जबकि—

(1) क्रिया, सकर्मक तथा भूतकाल [अपूर्णभूत को छोड़कर] के कर्तृवाच्य में हो। जैसे —

सामान्यभूत — मोहन ने खाना खाया।
आसन्नभूत — मोहन ने खाना खाया है।
संदिग्धभूत — मोहन ने खाना खाया होगा।
पूर्णभूत — मोहन ने खाना खाया था।
हेतुहेतुमद्‌भूत — राम ने खाना खाया होता तो ठीक होता।

लेकिन अपूर्णभूत—'सीता गाना गा रही थी' मे 'ने' का प्रयोग नही होता।

(2) जब सयुक्त क्रिया के दोनो खड सकर्मक हो तो अपूर्णभूत को छोडकर शेष सभी प्रकार के भूत कालो मे कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है। जैसे—

राम ने बात **कह दी**।
किशोर ने **खा लिया**।

यहाँ 'कहना', 'देना', 'खाना' और 'लेना' सकर्मक है परंतु जाना, पाना, चुकना, सकना, रहना, लगना, उठना, बैठना, पडना सहायक क्रियाओ के आने पर ने का प्रयोग नही होता। जैसे—

राम ने खाना खा गया। और
राम ने काम कर पाया। वाक्य गलत है।

(3) नहाना, थूकना, खाँसना और छीकना क्रियाएँ अपवाद हैं। अकर्मक होने पर भी इनके कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग सभव है। जैसे :—

उसने थूका, उसने छीका, तुमने नहाया, मैंने खाँसा।

'ने' का प्रयोग कहाँ नहीं होता।

(1) सकर्मक क्रियाओं के कर्ता के साथ वर्तमान और भविष्य काल मे 'ने' का प्रयोग बिल्कुल नही होता। जैसे :—

वह पुस्तक पढ़ता है।
वह पुस्तक पढ़ेगा।

(2) बकना, भूलना और बोलना सकर्मक क्रियाएँ है फिर भी अपवाद होने के कारण 'ने' का व्यवहार नही होता। जैसे :—

वह बका, मैं बोला, तुम भूले।

(ii) कर्म कारक

कर्मकारक का चिह्न (परसर्ग) ०, को है। 'को' परसर्ग सप्रदान कारक में भी होता है। परतु कर्ता के साथ 'को' का प्रयोग भी संभव है। जैसे :—

मोहन को स्कूटर नहीं आता।
राम को दौड़ना है।

आज शाम को आना है।
आओ, घर को चलें।

वाक्यो मे मोहन, राम कर्ता और शाम, घर अधिकरण कारक माने गए है।

(iii) **करण कारक**

करण कारक का परसर्ग 'से' है। यह साधन के अर्थ मे प्रयुक्त होता है। जैसे—चाकू से आम काटना। जब यह दो वस्तुओ को अलग करने के अर्थ मे प्रयुक्त होता है तब अपादान कारक हो जाता है। जैसे पेड़ से पत्ता गिरता है। जेब से पैसा निकालना। इन वाक्यो मे पेड़ और पत्ता, जेब और पैसा अलग होते है।

'से' परसर्ग करण और अपादान के अलावा कर्ता कारक (अब मुझसे काम नही होता) मे भी प्रयुक्त होता है।

'से' परसर्ग जो अन्य अर्थो मे प्रयुक्त होता है, इस प्रकार है :—

रीति — ध्यान से सुनना, धीरे से रखना।
विरोध — उससे मत बोलो।
कारण — उस बात से नाराज हो गए।, खाने से दर्द हो गया।
तुलना — रामलाल मुझ से मोटा है।
मूल — कपड़ा रुई से बनता है।
समय/आरभ — कल से रोज आऊँगा।
भाव — सिघाडे किस भाव से दोगे ?
असमर्थता — मुझसे चला नही जाता।
परिवर्तन — वह लड़के से लड़की हो गया।
दशा — स्वभाव से जिद्दी।
दिशा — आगे चलकर दाएँ से बाएँ जाना।
उद्देश्य — आप यहाँ किस काम से आए है ?
सादृश्यता — सुदर से मुख पर कालिख पुत गई।
गणित — दो को चार से गुणा करो।

(iv) **सम्प्रदान कारक**

'को' और 'के लिए' इस कारक के चिह्न हैं ? यह प्रयोजन के अर्थ मे आता है। जैसे बच्चों को मिठाई दो। बच्चे के लिए पुस्तकें खरीदनी हैं। इस अर्थ के अलावा यह चिह्न जिन अन्य अर्थों में प्रयुक्त होता है वे इस प्रकार है :—

उद्देश्य— पैसे के लिए नौकरी करना।
काल अवधि—तीन वर्षो के लिए विदेश जाना।
—बच्चों के सुख के लिए।

(v) संबंध कारक

जैसा कि आरंभ में बतलाया जा चुका है कि कुछ लोग क्रिया से अन्वय न होने के कारण इसे कारक नहीं मानते। विशेषण और विशेष्य की अन्विति में विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार 'का', 'की', 'के' रूप मिलते हैं। यह परसर्ग कई अर्थों में प्रयुक्त होता है। जैसे—

1 स्वामित्व — लड़के की बहू, देश की राजधानी।
2. मूल्य का अर्थ — छ: सौ रुपये की साईकिल।
3. आयु — साठ साल का बुड्ढा, सोलह साल की कन्या।
4. विशेषण-विशेष्य — आम का पेड़, रेत का घर, माटी का पुतला।
5. मूल रूप — वह मूर्ख का मूर्ख रहा।
6. अंग अंगी संबंध — पुस्तक के पन्ने, चश्मे का काँच, शरीर की चमड़ी।
7. प्रयोजन प्रयोज्य संबंध— रहने का स्थान, खाने की जगह।
8. संबंध — मेरा बेटा, पत्नी का भाई।
9. उत्पादन — जायसी का पद्मावत, केशव की रचनाएँ, प्रेमचन्द का साहित्य।
10. नियमितता — पखवाड़े के पखवाड़े, हफ्ते के हफ्ते।

(vi) अधिकरण कारक

'में' और 'पर' दो कारक हैं। 'में' अंदर के अर्थ में और 'पर' ऊपर के अर्थ में प्रयोग होता है।

'में' का निम्न अर्थों में प्रयोग—

1. मूल्य : यह कलम दो रुपये में खरीदी है।
2 समानता/भेद : आपस में भेद/मेल।
3. समय · एक मिनट में आ रहा हूँ।
4. दशा : सुख और दुख में प्रसन्न रहना।
5. तुलना . सभी लड़कों में कौन श्रेष्ठ है ?
6. कारण : बातों-बातों में बात बढ़ गई।
7. विषय : मैं हिंदी में फेल हुआ।

पर का निम्न अर्थों मे प्रयोग

1. निकटता : गाँव सड़क पर है।
2. व्यतिरेक : कनिष्ठ होने पर भी वरिष्ठों से बढकर है।
3. दशा : आपके आने पर व्यवस्था होगी।
4. समय : तीन बजने पर भी गाड़ी नही आई।
5. कारण : बातों-बातों पर झगडा होगा।
6. पुनरावृत्ति : सदेश पर सदेश आते गए।
7. दूरी : थोडी दूर जाने पर वह आ गया।
8. समानता : वह अपने पिता पर गया है।

7. स्वनिमों का छाँटना

क्षेत्रीय सर्वेक्षण पद्धति मे किसी भाषा के विश्लेषण हेतु कई कार्य करने होते हैं। किसी भाषा मे स्वनिमो/संस्वनों का छाँटना भी आवश्यकता हो सकती है। यहाँ भाषा मे स्वनिमो और सस्वनो को कैसे निर्धारित किया जाता है, के विषय में सक्षिप्त जानकारी दी जाएगी।

सर्वप्रथम सूचक से सुनकर सामग्री टेपांकित की जाती है या सीधे उसका ध्वन्यात्मक लेखन (phonetic transcription) किया जाता है।

B Bloch and G. Trager ने अपनी पुस्तक 'Out line of linguistic analysis' मे बताया है कि—

(i) एकत्रित सामग्री को क्रमबद्ध करना—इसके लिए एक चार्ट बनाया जाता है जिसमें प्रत्येक ध्वनि मे आरंभ होने वाले शब्दों की अलग-अलग सूची बनाई जाती है। यदि कोई ध्वनि शब्द की तीनों स्थितियो मे आती है तो उसे नोट किया जाता है। इसके बाद यदि कोई ध्वनि किसी ध्वनि विशेष के साथ आती है उसको भी नोट किया जाता है।

(ii) अब तुलनात्मक पद्धति द्वारा समान व असमान ध्वनियो को अलग-अलग किया जाता है।

(iii) आदि, मध्य और अत ध्वनियों का वातावरण (किन ध्वनियों से साथ घटित होती है ?) का विवरण तैयार किया जाता है।

स्वनिमो के वर्गीकरण के लिए R. A. Hall Jr. ने अपनी पुस्तक 'Introductory linguistics' मे बताया है कि—वितरण (distribution) ध्वन्यात्मक समानता (phonetic similarity), कार्य की समानता (Identity of function) यदि एक जैसे हैं तो वे एक वर्ग मे आएँगी।

यहाँ और अधिक विस्तार में न जाकर अब प्रयोग द्वारा हिंदी भाषा के संदर्भ में स्वनिम (phoneme), सस्वन (allophone) छाँटने का एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

एक वाक्य है—

'मालिक मुझे सुमति दे।'

ध्वनि (व्यंजन)	प्रयोग
म्........	3 बार
ल्........	1 बार
क्........	1 बार
झ्........	1 बार
स्........	1 बार
त्........	1 बार
द्........	1 बार
7 स्वनिम	9 सस्वन

ध्वनि (स्वर)	प्रयोग
अ........	2 बार
आ........	1 बार
इ........	2 बार
उ........	2 बार
ए........	2 बार
5 स्वनिम	9 सस्वन

योग = 7 + 5 (व्यंजन + स्वर) = 12 स्वनिम

योग = 9 + 9 (व्यंजन + स्वर) = 18 सस्वन

8. द्विभाषिकता/बहुभाषिकता (bilingualism/multilingualism) व उसकी समस्याएँ

इस वैज्ञानिक युग में कोई भी व्यक्ति एक भाषा से अपना कार्य नहीं चला सकता है। अपने भाषाई समुदाय के अलावा अन्य समुदायों से संपर्क स्थापित किए बिना वह आगे नहीं बढ़ सकता है। अत: ऐसे व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह मातृभाषा के अलावा दूसरी भाषा/भाषाओं को भी सीखे।

(1) एक भाषा बोलने वाला व्यक्ति—एक भाषी ।

(2) दो भाषाएँ बोलने वाला व्यक्ति—द्विभाषी ।

(3) दो से अधिक भाषाएँ बोलने वाला व्यक्ति-बहुभाषी ।

दो भाषाओ के वैकल्पिक प्रयोग की स्थिति द्विभाषिकता है । दो से अधिक भाषाओ के वैकल्पिक प्रयोग की स्थिति बहुभाषिकता है ।

विभिन्न विद्वानो ने द्विभाषी की परिभाषा इस प्रकार दी है :—

वीनरीक—दो भाषाओ के प्रयोग करने वाला द्विभाषी कहलाता है ।

हागेन —"दो भाषाओ का ज्ञान रखने वाला ही द्विभाषी है । चाहे वह व्यक्ति केवल एक भाषा को प्रयोग करता हो दूसरी भाषा की केवल जानकारी ही रखता हो । हागेन के अनुसार बनाई गई यह स्थिति हमेशा रहना सभव नही हो सकती ।

हरमैन —अपनी पुस्तक 'माइकोलिंग्विस्टिक' मे कहा है कि—'द्विभाषी' वह व्यक्ति है जो दूसरी भाषा मे उतनी दक्षता और सहजता से अपने आपको व्यक्त कर सकता है । जितनी दक्षता एव सहजता से मातृभाषी अपने आपको व्यक्त कर सकता है ।

चामस्की—हरमैन की यह बात चामस्की की बात से मेल नही रखती । चामस्की के अनुसार मातृभाषी के समान अन्य भाषी उसमे कभी भी उतनी क्षमता प्राप्त नही कर सकता । भारत मे अहिंदी भाषी, हिंदी भाषी की तरह दक्ष नही हो पाता । इसी प्रकार भारतीय, अंग्रेजी मे दक्षता प्राप्त करने पर भी सपूर्ण क्षमता प्राप्त नही कर पाता ।

द्विभाषिकता की तीन स्थितियाँ

1. (अ) दो सजातीय भाषाएँ ।

   हिंदी + एक भारतीय भाषा ।

   हिंदी + नागा भाषा ।

   (ब) भारतीय भाषा + विदेशी भाषा (जो भारतीय भाषा से लगभग समान रूप से प्रयोग मे आती है)

   हिंदी + अंग्रेजी ।

2. भारतीय भाषा + विदेशी भाषा, अंग्रेजी को छोडकर (यह विदेशी भाषा ऐसी हो जो केवल विशेष स्थिति का सामना करने के दृष्टिकोण से सीखी जाती है)

3. समष्टि (डिगलोसिया) द्विभाषा।

(एक ही भाषा की दो शैलियाँ)।

उच्चशैली की उच्चभाषा→औपचारिक स्थिति में प्रयोग।

+

निम्न शैली की निम्न भाषा→अनौपचरिक स्थिति मे प्रयोग।

↓ ↓

समष्टि द्विभाषा

अत: समष्टि द्विभाषा = भाषा की शैली[1] + भाषा की शैली[2]

	उच्चभाषा (औपचारिक स्थिति)	निम्नभाषा (अनौपचारिक स्थिति)
बगला	साधु भाषा	चलित भाषा
तमिल	शुद्ध भाषा	बोलचाली तमिल
तेलुगु	ग्रथिका भाषा	व्यावहारिक भाषा

इसी प्रकार हिंदी मे तीन शैलियाँ है—

1. सस्कृतनिष्ठ	उच्च हिंदी (खड़ी बोली)
2. आधारभूत	हिंदी या हिंदुस्तानी
3 फारसी अरबीनिष्ठ	उर्दू ।

औपचारिक स्थिति मे प्रयुक्त शैली वाली भाषा उच्चभाषा कहलाती है। इसके प्रयोग से व्यक्ति सुसस्कृत माना जाता है, प्रतिष्ठा और सम्मान अधिक होते हुए आत्मीयता कम होती है। जबकि अनौचारिक स्थिति में प्रयुक्त शैली वाली भाषा निम्न भाषा कहलाती है। प्रतिष्ठा और सम्मान कम होने पर भी आत्मीयता अधिक होनी है। इसे सहज मे सीखा जा सकता है।

द्विभाषिकता के विभिन्न अर्थ

'हागेन ईनर' ने अपनी पुस्तक 'द स्टिग्मा ऑफ बाइलिंगुअलिज्म' (1972) में कहा है कि द्विभाषिकता, भाषायी पिछड़ापन है। अमेरिका मे आप्रवासी की स्थिति इसका प्रमाण है।

डब्लू० एफ० मैकी ने 'बाईलिंगुअलिज्म एज ए वर्ड प्रोब्लम' (1967) में कहा है कि द्विभाषिकता की स्थिति उस समाज के उच्चस्तर की ओर अग्रसर होने का प्रमाण है। यह उच्च शिक्षा, प्रबुद्ध वर्ग का द्योतन करती है अत: एक भाषी

सामान्य शिक्षित, द्विभाषी अधिक शिक्षित तथा बहुभाषी और अधिक शिक्षित माना जाता है।

पिजिन और क्रिओल

मातृभाषा अन्य भाषा में व्याघात उत्पन्न करती है यह व्याघात जब बढ़ जाता है तो इस भाषा की संरचना ही बिगड़ जाती है इस बिगड़े हुए रूप को पिजिन कहते हैं।

समय के साथ जब उस बिगड़े हुए रूप को सामाजिक मान्यता प्राप्त हो जाती है तो इस पिजिन को क्रिओल भाषा कहते हैं।

अतः मातृ भाषा व्याघात
अन्य भाषा ————————→ पिजिन ——→ क्रिओल

12 द 94

द्विभाषिकता की समस्या

(1) सामाजिक दृष्टि से —

अल्पसंख्यकों की भाषा को समाज में वह स्तर प्राप्त नहीं होता जो बहुसंख्यकों की भाषा को प्राप्त होता है अतः मनोवैज्ञानिक प्रभाव अल्पसंख्यक भाषियों पर पड़ता है।

(2) राजनैतिक दृष्टि से —

जिस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है उस भाषा के बोलने वालों का स्तर (भाषायी दृष्टि से) ऊँचा हो जाता है। उस भाषा का महत्व अन्तर्राष्ट्रीय हो जाता है जबकि अन्य भाषा का नहीं। इस भाषा का साहित्य, प्रचार-प्रसार बहुत होता है या यों भी कह सकते हैं कि इसका साहित्य समृद्ध माना जाता है।

(3) शिक्षण/अधिगम की दृष्टि से —

शिक्षण/अधिगम की दृष्टि से भाषा[1] अन्य भाषा में ध्वनि, शब्दावली और वाक्य स्तरों पर व्यवधान उत्पन्न करती है जो कि एक बड़ी समस्या हो जाती है।

भारत में बहुभाषिकता की समस्या

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ 1019 मातृभाषाएँ हैं यहाँ बहुभाषिकता किसी भी समस्या के रूप में नहीं रही (दैनिक जीवन के कार्य में) अर्थात् आप कहीं भी चले जाएँ आपको बिना किसी कठिनाई के मार्ग दर्शन मिलता ही रहेगा। भारत का प्रत्येक प्रदेश भी बहुभाषी प्रदेश है। हर प्रदेश में लगभग सभी भारतीय भाषा-भाषी मिल जाएँगे। नागालैंड में यदि कोई व्यक्ति जाएगा तो उसे हिंदी छोड़ने की

... . । नहीं होगी वहाँ पर अन्य लोग या थोड़ी हिंदी जानने वाले लोगों से काम चला सकता है । परन्तु विदेशों मे जाकर हिंदी से ही काम नहीं चल सकता है ।

इस प्रकार भारतवर्ष में बहुभाषिकता की समस्या नहीं है ।

दैनिक जीवन में उपयोगिता

द्विभाषी की दैनिक जीवन मे उपयोगिता को देखते हुए हम कह सकते हैं कि—

(1) मातृभाषा/हिंदी का उपयोग तो सामान्यतः हो लेकिन द्वितीय भाषा का प्रयोग केवल किसी कार्य विशेष की पूर्ति हेतु किया जाय । जैसे विदेशी विमान मे उस देश की भाषा का आंशिक ज्ञान यात्रा मे सहायता प्रदान करता है । इस प्रकार द्विभाषी के लिए प्रथम भाषा मुख्य एवं अन्य भाषा गौण होगी ।

भाषा¹ + भाषा² = द्विभाषी
(मुख्य) (गौण)

(2) प्रथम भाषा/मातृभाषा/हिंदी का प्रयोग भी समान रूप से हो । जहाँ अन्य भाषा/द्वितीय भाषा का प्रयोग भी उसी रूप मे हो रहा हो । इसमे संभव है कि प्रथम भाषा को द्वितीय भाषा प्रतिस्थापित कर ले । ऐसी स्थिति में द्वितीय भाषा ही प्रथम भाषा/मातृभाषा हो जाती है ।

भाषा¹ + भाषा² → भाषा²
{(हिंदी) (मुख्य)} {(अंग्रेजी) (गौण)} कई पीढ़ियों पश्चात् {(अंग्रेजी) मुख्य}

(3) तीसरी स्थिति मे एक भाषा से काम न चलने पर दूसरी भाषा का ज्ञान उतना ही (लगभग) आवश्यक हो ।

भाषा¹ + भाषा²
{(हिंदी मुख्य} {(अंग्रेजी) मुख्य}

भाषा¹ (मुख्य) → भाषा¹ (मुख्य) + भाषा² (गौण) → भाषा² (मुख्य) → भाषा² (मुख्य) + भाषा³ (मुख्य)

↓

भाषा² यहाँ फिर भाषा¹ का कार्य करेगी तथा भाषा³ यहाँ भाषा² का कार्य करेगी ।

9 नई शिक्षा नीति

अन्य क्षेत्रो मे विकास के साथ-साथ आधुनिक युग में ऐसी परिस्थितियाँ बन गई हैं जिसमें शिक्षा की नई नीति को स्वीकारना आज की आवश्यकता बन चुकी है। इसलिए भारत सरकार ने सन् 1986 में शिक्षा की नई नीति का निर्माण ही नही किया वरन् उसके तुरत लागू करने के लिए प्रभावी कदम भी उठाए। इसे क्रियान्वित करने हेतु प्रदेशों के राज्य शिक्षा संस्थान, एन० सी० ई० आर० टी० और राष्ट्रीय शैक्षिक सस्थान को अग्रणी भूमिका निभाने हेतु आमत्रित किया गया।

इसमें क्या होगा ?

(1) पूरे देश के लिए एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई है जिसके अतर्गत क्षेत्रीय या प्रादेशिक स्तर पर आवश्यकतानुसार लचीलापन होगा, लेकिन पूरे देश मे शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर न्यूनतम अधिगम निर्धारित होगा जो पूरे देश के लिए समान रखा जाएगा। इससे शैक्षिक समानता के विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता और अखडता की भावना भी जाग्रत होगी। तथा भाषावाद, क्षेत्रीय अलगाव की भावना तथा अन्य सामाजिक व शैक्षिक मतभेद दूर होने मे सहायता मिलेगी।

(2) सपूर्ण राष्ट्र मे एक स्तर तक समान पाठ्यक्रम होगा जो कि बीज पाठ्यक्रम के नाम से अनिवार्य किया गया है जिसमे आवश्यक अधिगम प्रतिफलों पर आधारित होगा जो वयस्क मानव के लिए अनिवार्य है।

(3) ऊपर उठकर ऐसे तत्व भी उपस्थित होंगे जिसमे कर्तव्य बोध, राष्ट्रीयता, कार्य अनुभव तथा नैतिक शिक्षा आदि मानव मूल्यो पर बल होगा। बीज पाठ्यक्रम की सकल्पना समान राष्ट्रीय अधिगम स्तर तथा सास्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखने के लिए की गई है। जो निश्चित रूप से प्रभावी होगी।

(4) शिक्षा के प्रशासनिक उच्च पदो को अखिल भारतीय स्तर का बनाने के लिए उसमे अखिल भारतीय शिक्षा सेवा (Indian Educational Services) के पदो का सृजन किए जाने का भी विचार है। जिसकी मुख्य भूमिका होगी---शिक्षा के राष्ट्रीय स्तर को बनाए रखने में अपनी भूमिका का निर्वाह करना तथा सांस्कृतिक विरासत व एकता को बनाए रखने मे सक्रिय योगदान देना। इससे वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की निष्क्रियता समाप्त हो सकेगी।

(5) अब तक शिक्षक का कार्य मात्र कक्षा मे भाषण देकर अपने उत्तरदायित्व की इतिश्री समझ लेना होता था। नई शिक्षा मे शिक्षण (Teaching) के स्थान पर अधिगम (Learning) को वरीयता दी जाएगी, जिससे छात्रों को इस बात का अहसास हो सके कि बैठे बिठाए प्राप्त धन तथा परिश्रम से कमाए धन मे क्या अंतर होता है।

(6) शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने हेतु प्रत्येक जिले मे एक नवोदय विद्यालय खोलना है (इन पक्तियो के लिखने तक लगभग 60 नवोदय विद्यालय खुल चुके हैं) जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों से आए विद्यार्थी मेरिट के आधार पर लिए जाएँगे इससे सरकार का इरादा है—समान शिक्षा के अवसर प्रदान हो सकेंगे, आवासीय व्यवस्था होगी तथा—

इसमे पढ़ने वाले छात्रों को देश के अन्य विद्यालयो में स्थानातरित करके विभिन्न वातावरणो मे शिक्षा देने की बात की तरफ भी सकेत है, जिससे निश्चित रूप से ही विविधता मे एकता की बात को बल मिलेगा।

कार्यरत अध्यापक वर्ग को भी देश के विभिन्न विद्यालयो मे शिक्षण कार्य करना अनिवार्य कर दिया जाएगा। अपवचित और विन्त मनोरथ छात्रो को उनकी योग्यता के अनुरूप आगे बढ़ने के अवसर मिल सकेंगे। सरकार कहती है कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अभिनव और अभूतपूर्व प्रयोग है, आगे इसके विस्तार पर ध्यान देना उचित होगा।

अधिगम समस्या वाले बालको की शिक्षा की विशेष व्यवस्था है। अब तक इस प्रकार के बालकों की सामूहिक शिक्षा की व्यवस्था 'नहीं' के बराबर थी। (अधिगम समस्या वाले बालक याने विकलाग) नई नीति मे ऐसे बालकों की शिक्षा का विशेष प्रबध होगा। इन बालकों को विशेप उपकरण व तकनीकी ससाधन उपलब्ध कराए जाएँगे।

एक अन्य सूचना (अमर उजाला के 18-9-86 के अक मे प्रकाशित डॉ० चतुर्वेदीजी के लेख मे) के अनुसार प्रत्येक विद्यालय के लिए 30 एकड जमीन जिसमे 88,000 वर्गफीट क्षेत्रफल के भवन मे 18 क्लास रूम, 3 प्रयोगशालाएँ, 3 वर्कशाप्स, 18 निवास, वार्डन निवास के अलावा लाइब्रेरी, सगीत कक्ष, खेलकूद कक्ष, आडिटोरियम, कैंटीन एव अध्यापक कक्ष होंगे।

सरकारी नई शिक्षा नीति में घोषित ऊपर वर्णित सूचनाएँ बहुत आकर्षक हैं। सरकार ने स्वय कहा है कि यह एक प्रयोग है। इस प्रयोग मे कितनी सफलता मिलेगी यह आने वाला समय ही बताएगा। 25-9-86 के 'अमर उजाला' अंक में प्रकाशित 'पाठकों के पत्र' नामक स्तभ में दी गई सूचना के अनुसार इस प्रकार एक विद्यालय पर लागत धनराशि लगभग 3 करोड़ रु० होगी। इस प्रकार कुल 428 विद्यालय खोले जाने की योजना है। सरकार का दावा है कि इस योजना पर व्यय के लिए सरकार इसी मद में दिए गए बजट से ही व्यवस्था करेगी इसके लिए अतिरिक्त बजट की व्यवस्था के लिए अतिरिक्त स्रोत नही देखने होंगे।

उक्त नीति बहुत आकर्षक व लुभावनी लगने वाली बनाई गई है परतु—

क्या एक जिले में एक नवोदय फिलहाल ही सही खोलने से

पूर्ण होंगी ? क्या इसमे ग्रामीण क्षेत्रो से आए छात्रो को अवसर मिलेंगे ? क्या समाज मे एक वर्ग विशेष तैयार नही होगा ? क्या इसमे शेष वर्गो मे मानसिक तनाव नही बढेगा ? क्या शैक्षिक असंतुलन नही पैदा होगा ? सरकार इन पर किए जाने वाले व्यय का समाधान वर्तमान साधनों से ही करेगी ? आदि प्रश्न है जो इस प्रयोग की सफलता पर प्रश्न चिह्न लगाते है। मेरा अपना विचार है कि—उक्त अपेक्षाओ का निर्धारण करके सरकार को चाहिए कि वर्तमान शिक्षण संस्थाओ के स्वरूप मे कुछ परिवर्तन करे और यह कार्य उन्हे सौप दे। मानव संसाधन विकास मत्रालय के तहत केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा मे इस प्रकार का कार्य हो ही रहा है जैसे—

विद्यार्थियों को अपने शैक्षिक सत्र मे अन्य प्रदेशों में भ्रमण करना पड़ता है, उन्हें शिक्षणाभ्यास के लिए अन्यत्र जाना पड़ता है, शिक्षको को भी पूरे भारतवर्ष मे अध्ययन, अध्यापन, शोध हेतु जाना अनिवार्य ही है। प्रशिक्षण हेतु आए विभिन्न छात्रो व छात्राओ को एक निश्चित अवधि हेतु यहाँ छात्रावासो मे रहकर एक-दूसरे की भाषाओ संस्कृति को जानने के अवसर सुलभ होते हैं। प्रशिक्षण पश्चात् उन्हे वापिस अपने क्षेत्रो मे जाकर कार्य करने के अवसर मिलते है। इस प्रकार विविधता मे एकता वाली बात पूर्ण प्रतिफलित होती दिखाई देती है। भारत सरकार के केंद्रीय विद्यालय और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा जैसी एक संस्था लेकर यदि उनके मिले-जुले स्वरूप मे थोड़ा-बहुत परिवर्तन किया जाय तो नवोदय विद्यालय वाला रूप स्वत. ही निखर सकेगा। सरकार के पास इस नीति के क्रियान्वयन हेतु ऐसी संस्थाएँ पहले से ही कार्य कर रही हैं, अभाव है केवल उसको उचित दृष्टि से देखने व समझने का।

10 संगणक (Computer)

आदिकाल और आधुनिक काल को मिलाकर देखे तो पाएँगे कि आधुनिक काल मे हर कार्य तीव्र गति से हो रहा है। यदि कोई अपनी गति काल के अनुरूप नही रख पा रहा है तो वह निश्चित रूप से पिछड़ जाता है। गति की यह तीव्रता विज्ञान के कारण है। इस विज्ञान के युग मे जहाँ कही नजर जाती है वही पर कोई न कोई नई आविष्कृत वस्तु के दर्शन होते है। हर क्षण, हर पल नई-नई ऐसी चीजे मिलती है जिनके बारे मे हम सोच भी नही सकते। हर नया आविष्कार पूर्व के नए आविष्कार से भी नया प्रतीत होता है जिसकी तुलना मे पूर्व का आविष्कार महत्व-हीन बन जाता है। क्या कोई यत्र भी मस्तिष्क वाला हो सकता है ? ऐसा कभी सोचा गया था ? परतु आज यह सत्य है कि यत्रो मे भी बुद्धि होती है, वे सुन, बोल सकते हैं। विचार कर उत्तर भी दे सकते हैं।

इस प्रकार की एक मशीन, एक यत्र है जिसे सगणक (Computer) कहते हैं। बडी-बडी दुकानो पर, बिक्री का हिसाब-किताब करने के लिए, होटलो मे बिलो को तैयार करना आदि काम द्वारा क्षणभर में संभव है

संगणक को परिभाषित करने और उसको विश्लेषित करने से इस यंत्र की संकल्पना और अधिक स्पष्ट हो जाएगी यथा—

(1) संगणक एक इलेक्ट्रोनिक उपकरण है।

(2) यह कुछ ही सेकेंड में समस्या का समाधान कर सकने में समर्थ है।

(3) यह समस्या को शत-प्रतिशत सही परिणाम देकर प्रस्तुत करता है। जिसमे कोई त्रुटि नहीं होती।

(4) किसी समस्या से संबंधित सही सूचना प्रस्तुत करने से उसका परिणाम स्वत. ही प्रदान करता है।

(5) इसमे सूचना एकत्रित करने की क्षमता है।

(6) यह स्मृति को कुछ सीमा तक वहन कर सकता है। इसके बाद 'फ्लापी डिस्क' द्वारा स्मृति को और अधिक बनाए रख सकता है।

(7) जैसे ही आप संगणक को सूचनाएँ प्रदान करेंगे वैसे ही आपको अपेक्षित परिणाम / समाधान प्राप्त हो जाएँगे।

उक्त सभी बिंदुओं को देखने के बाद आप कह सकते है कि—

Computer is an electronic device in which raw data is processed through a programme control to get meaningful information It has a large storage capacity and is capable of performing multiple functions at the same time.

Computer is an information processing machine. It can perform arithmatic operations and take logical dicisions.

It has a memory and can store lot of information. The stored information may be read revived and operationed upon as desired.

उक्त वर्णन से स्पष्ट है कि संगणक एक यांत्रिक डिब्बे के अलावा कुछ नही है। उसे हम जो सामग्री देंगे, जैसी सामग्री देंगे उसी के अनुरूप वह फल प्रदान करेगा। यदि सामग्री शुद्ध और त्रुटि रहित है तो प्राप्त परिणाम त्रुटि रहित होंगे। इस यंत्र का कार्य दी गई सामग्री / सूचना को मात्र तोड-जोड़ कर परिणाम प्रस्तुत करना है। अपेक्षित कार्य के लिए यदि हम (प्रोग्रामर) प्रोग्राम दे सकते है तो उसे वह क्रियारूप में परिवर्तित कर सकता है, यदि अपेक्षित कर्मों के लिए प्रोग्रामर प्रोग्राम नही दे सकता है तो उसके द्वारा क्रिया रूप देना संभव नही हो सकता। मोटे तौर पर कह सकते हैं कि संगणक वह सब कर सकता है जो उससे कराया जा सकता है

सगणक का इतिहास (History of Computer)

मनुष्य के विकास की कथा मे यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि आरभ मे मानव अन्य बातो के साथ-साथ गिनती भी नही जानता था। धीरे-धीरे अपने विकास क्रम मे वह अन्य बातो के साथ गिनती करना सीखा। सगणक का जन्म वास्तव मे तभी से माना जाना चाहिए जब मे मानव ने गिनती आरभ की। शुरू-शुरू मे लकीरें खीच कर या ककड़ो को इकट्ठा कर गिनने का प्रचलन था। नौ तक कंकड होने पर उसे सरकाकर दहाई की ओर इनके स्थान पर एक ककड़ रख देना, पुनः इकाई के स्थान पर फिर नौ तक गिनना, फिर सरकाकर पुन वही क्रम सौ तक के लिए अपनाना पुरानी पद्धति रही।

3,500 वर्ष ई० पूर्व टाइग्रिस यूफ्रेटिस घाटी मे ककड़ों के स्थान पर मनको की समांतर पटटियो का प्रयोग हुआ जिसे एबेकस कहा जाता है। इन पट्टियो मे मनको की एक समान और निश्चित सख्या हुआ करती है। इसके द्वारा जोड, बाकी, गुणा और भाग किए जाते थे। वर्तमान सगणक (Computer) के मूल मे जो सिद्धात कार्य करता है, यह उसका बीज रूप था। 1642 मे Blaze pascal ने मात्र अट्ठारह वर्ष की आयु में यात्रिक सगणक का आविष्कार कर संगणक के इतिहास मे अपना नाम लिखवा लिया। यह यान्त्रिक सगणक एक प्रकार की Practical additing machine थी जिसमे घडी मे लगे दाँतेदार पहियों की व्यवस्था थी जिन्हे एक दिशा मे घुमाने पर जोड तथा दूसरी दिशा मे घुमाने पर सख्याओ का घटाना आ सकता था। इस गणना मशीन का नाम उनके नाम पर पास्कलाइन (Pascline) रखा गया।

1694 मे Gottesried leibnitz ने पास्कलाइन की भाँति का ही एक यत्र बनाया जिसमे उक्त व्यवस्था के साथ-साथ गुणा भाग और लबी सख्याओ की सही-सही गणना करने की अतिरिक्त व्यवस्था थी।

1801 मे जोसेफ जैकार्ड ने पच कार्ड सिस्टम की खोज के माध्यम से लूम पर बुनाई कार्य में धागो को चलाने की नियत्रण पद्धति को प्रस्तुत किया। इस पद्धति मे कार्डों के छिद्र द्वारा लूम मे चलने वाले धागों की गति को नियंत्रित किया जा सकता था।

1833 वास्तव मे कप्यूटर का रूप प्रस्तुत करने वाला वर्ष था। Charles Babbage को यह श्रेय जाता है इसलिए आधुनिक सगणक के पिता कहे जाते हैं। इनके द्वारा बनाया गया यत्र Nth order of equation the Nth difference are equal के सिद्धात पर बना था। इसे यात्रिक विश्लेषण इजिन (Analytical Engine) कहा जाता है। इसमे एक सग्राहक (स्मृति पटल), एक चक्की (गणित इकाई), मुद्रण और जानकारी भरने के लिए पच कार्डों की व्यवस्था थी यह एक मिनट में साठ जोड़ कर सकता था। इस मशीन द्वारा तत्कालीन गणित क्षेत्र मे

विख्यात और असाधारण प्रतिभा की धनी महिला ने Binary number system का सफल प्रयोग कर बैवेज के इस यंत्र का महत्व प्रतिपादित किया।

1889-90 मे Dr. Herman Hallarith ने अमेरिकी जनगणना का हिसाब-किताब अपनी सेंसस मशीन द्वारा तुरन्त पूर्ण कर दिखाया। 1896 में इस आधार पर उन्होंने अपनी मशीन का व्यावसायिक दृष्टि से उत्पादन आरम्भ किया। बाद में अन्य कम्पनियों के साथ मिलकर आई० बी० एम० बनाया जो आज संसार की सबसे बड़ी कम्पनी है।

प्रथम इलेक्ट्रॉनिक संगणक ENIAC Electronic Numerical Integrater and Calculater 1946 मे बना। इसका वजन तीस टन था। आरंभ मे संगणकों का प्रयोग वैज्ञानिक गणनाओं में किया जाता था। व्यापारिक क्षेत्र मे इसकी उपयोगिता देखकर 'Univac' Universal Automatic Computer बनाया गया।

1954 मे सिलिकॉन ट्रांजिस्टर ने संगणक की पीढ़ी को पुष्ट किया। 1964 मे Integrated Circuits का उपयोग करते हुए 1954 के कार्य को आगे बढाया। आठवें दशक के आरंभ मे माइक्रोचिप के निर्माण के कारण सर्वशक्तिशाली संगणक निर्माण काल कहा जा सकता है। इस यंत्र से जुडे अन्य सहायक उपकरण के निर्माण में भी क्रांति आई और संगणक सस्ता और आकार मे छोटा होकर प्रत्येक घर मे प्रवेश कर गया।

संगणक की बनावट, सिद्धांत और कार्य प्रणाली

आमतौर पर संगणक के तीन अंग होते है—

1. केंद्रीय संसाधन एकांश (Central Processing Unit या C. P. U.)
2. इनपुट डिवाइसेज (Input Devices)
3. आउटपुट डिवाइसेज (Output Devices)

यहाँ प्रत्येक का अलग-अलग वर्णन किया जा रहा है।

(1) केंद्रीय संसाधन एकांश (C.P.U या Central Processing Unit)

जिस प्रकार मनुष्य का मुख्य अंग मस्तिष्क होता है जो आँख, कान, नाक आदि इंद्रियों से सूचनाएँ प्राप्त कर, विश्लेषित कर उन्हें हाथ-पैरों के माध्यम से प्रतिक्रिया स्वरूप भेजता है। ठीक उसी प्रकार केंद्रीय संसाधन एकांश (C. P. U.) संगणक का मस्तिष्क होता है और सहयोगी अंगों—आँख, कान, नाक आदि सूचनाओं को मशीनों द्वारा पंच किए हुए कार्डों पर, पंच किए कागज टेप पर, चुंबकीय टेप या डिस्क पर भरा जाता है। इन साधनों से ये सूचनाएँ संगणक के मस्तिष्क C. P. U. में पहुँचा दी जाती हैं। इन सूचनाओं को किस प्रकार से विश्लेषित कर संगणक के

देमाग को दिया जाय यह प्रोग्रामर का कार्य होता है जो प्रोग्राम बनाकर सगणक के मस्तिष्क को दे देता है। सगणक प्रोग्रामर द्वारा दी गई सूचनाओ और कार्यक्रमो को याद रखता है, कार्यक्रम के आधार पर नतीजे, जोड आदि याद रखता है और जैसे ही आप चाहे वह अपने सहायक अगों द्वारा ये नतीजे आपको दे सकता है। स्मरण रहे कि सगणक के मस्तिष्क को मानव मस्तिष्क का भी उच्चतर रूप कहा गया है, क्योकि मानव मस्तिष्क थक सकता है, उसके द्वारा निकाला गया नतीजा त्रुटिपूर्ण भी हो सकता है जबकि सगणक के संबध में ऐसा नही हो सकता।

जैसा कि पूर्व पक्तियो मे कहा गया है कि सगणक का मस्तिष्क मनुष्य द्वारा भरे गए कार्यक्रम के अनुसार जोड आदि का कार्य बहुत तीव्र गति से करता है (यही उसकी वास्तविक कार्य प्रणाली की विशेषता है) वर्तमान युग मे विज्ञान की खोजो से सगणक की गति इतनी तेज हो गई है कि उसे 'फेम्टो' और 'नैनो' सेकेड मे नापा जा सकता है* यह सारा कार्य सगणक के मस्तिष्क की छोटी सी जगह मे होता है जिसे 'चिप' कहते है। आश्चर्य की बात है कि 'चिप' हमारे नाखून के बराबर होती है।

केंद्रीय ससाधन एकांश के तीन अंग होते हैं—

(अ) **नियंत्रण एकक** (Control Unit)

यह शेष दो अगो (स्मृति एकक और गणितीय एव तार्किक एकक) के बीच सूचना प्रवाह को नियत्रित करता है। तथा अन्य चरणो मे समायोजन का कार्य करता है।

(ब) **स्मृति एकक** (Memory Unit)

यह गणितीय एव तार्किक एकक (A. L U.) को निर्देश देता है। सगणक कार्यक्रमों को अपनी स्मृति में रखता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उपलब्ध सामग्री को विश्लेषण के लिए उपलब्ध कराता है।

(स) **गणितीय एवं तार्किक एकक** (Arithmetical and Logical Unit या A L U)

स्मृति एकक से प्राप्त सामग्री का गणितीय विश्लेषण और तार्किक तथा तुलनाएँ सम्पन्न करता है।

(A. L U performs all arithmatical operations and Logical Comparison)

---

* 1 सेकेंड=1। ,00,000 फेम्टो सेकेड
  1 सेकेंड=एक अरब नैनो सेकेड

(2) **इनपुट डिवाइसेज**

संगणक में सूचनाएँ भरने वाले अंगों को 'Input devices' कहते है जो आज-कल के छोटे संगणकों मे 'फ्लॉपी डिस्क' के रूप मे देखे जा सकते है। ये संगणक की आँखे, नाक, कान की तरह है जो देखकर, सुनकर, सूँघकर (वास्तविक देखना, सुनना, सूँघना नही) सूचनाएँ प्राप्त करते है। इसके अंगों के नाम हैं—की बोर्ड, फ्लॉपी डिस्केट, माऊस/लाइटपेन, ओ० सी० आर०, टेलिटाइपराइटर आदि।

(3) **आउटपुट डिवाइसेज**

इसके माध्यम से परिणाम प्राप्त होते है। दृश्य-पटल (Screen) जो टी० वी० के पर्दे की ही तरह का होता है, संगणक के हाथ-पैर है। पर्दे पर हम देख सकते है कि हम संगणक मे क्या भर रहे है और वह हमे क्या नतीजे दे रहा है। आउटपुट डिवाइस के रूप मे है—वी० डी० यू०, टेलिटाइपराइटर, ग्राफ प्लाटर, माइक्रोफिल्म, फ्लॉपी डिस्क, प्रिंटर सी० ओ० एम०।

इस प्रकार उक्त वर्णन से स्पष्ट है कि संगणक 'इनपुट→प्रोसेस→आउटपुट' के सिद्धांत पर कार्य करता है।

संगणक के प्रकार (Types of Computer)

संगणक के प्रकारों के लिए कुछ आधार लिए जा सकते है जैसे प्रकार्य, क्षमता एवं आकार, आदि। इस प्रकार एक दृष्टि से जो संगणक एक वर्ग मे रखा जा सकता है वही दूसरी दृष्टि से दूसरे वर्ग मे रखा जा सकेगा। इस प्रकार यहाँ हम बिना किसी आधार के उनके प्रकारों की चर्चा कर रहे हैं—

(1) डिजिटल संगणक

(2) एनालॉग संगणक

(3) माइक्रो संगणक

(4) मिनि संगणक

(5) मेन फ्रेम संगणक

(6) माइक्रो प्रोसेसर
(7) पी० सी० ट्यूटर संगणक
(8) वी० बी० सी० संगणक
(9) सिद्धार्थ संगणक
(10) हिंदी रोम संगणक

} ये वस्तुतः उक्त (1—5) तक के प्रकारों मे से ही है।

3—5 तक डिजिटल संगणक है। 3 सीमित एव विशेष प्रयोग हेतु, 4. अधिक शक्तिशाली, 5. विस्तृत व अधिक सामग्री हेतु उपयोगी हो सकता है। भाषा,

अनुवाद, कोश, साहित्य साधित काय इन्हीं पर सभव है . कभी कभी सेकडरी स्टोरेज' की सहायता से इनकी क्षमता मे आवश्यकतानुसार वृद्धि की जा सकती है।

आंकिक संगणक (Digital Computer)

इस प्रकार के सगणक से कठिन से कठिन सख्याओ की गिनती क्षण भर मे हो सकती है। चुनाव मे वोटों की गिनती, चद्रयात्रा के कार्यक्रम, अनेक प्रकार की परीक्षाओ के परिणामो की तैयारी आदि तुरत त्रुटिरहित और सूक्ष्मता के साथ सपन्न हो सकती है।

विश्लेषक संगणक (Analogue Computer)

इससे समस्याओ का समाधान हो सकता है। अनेक प्रकार के विषयों की समस्याओं के लिए अलग-अलग सगणक होते है। समस्या और उससे सबधित विषय के अनुसार संगणक के सामने रख दिया जाता है। उसका उत्तर तुरत आ जाता है। यदि उत्तर न आता हो तो सगणक कहता है—'क्षमा करें', 'मालूम नहीं', 'ऐसा कुछ नहीं' आदि।

सगणक क्या-क्या कर सकता है

संगणक की कार्य क्षमता अति व्यापक क्षेत्र लिए हुए है। जैसा पूर्व पक्तियो मे कहा जा चुका है कि सगणक वह सब कुछ कर सकता है जो उसमे करवाया जा सके। प्रशासन, लेखा, भविष्यवाणी, जन्म कुडली, कप्यूतिष (कप्यूटर साधित ज्योतिष) और कप्यूशिक्ष (कप्यूटर साधित शिक्षण—यह लेखक का अपना दिया हुआ नाम है) आदि अनेक अनुप्रयुक्त क्षेत्र है जिसमे सगणक की महत्वपूर्ण भूमिका परिलक्षित होती है। यहाँ इनका सक्षिप्त एव परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

संगणक और प्रशासन

(1) अपराध रोक सकता है, अपराधियो और उनकी उगलियो के निशान (Finger Prints) की सपूर्ण जानकारी पल भर मे देश के कोने-कोने मे पहुँचा सकता है।

(2) यातायात को नियत्रित कर सकता है।

(3) अतर्राष्ट्रीय विमान यात्राओ मे आरक्षण, आगे की यात्राओ मे आरक्षण, अलग-अलग दिनों की मनपसद तिथियो मे आरक्षण, सीट की पसद, भोजन के प्रकार का चयन, होटलो मे कमरो के रेट्स की जानकारी के बाद बुकिंग सुविधा, आदि।

(4) संगणकों द्वारा नियत्रित मशीनों की सहायता मे बैंको के बद होने के बाद भी पैसा जमा व निकालने की सुविधा।

(5) कानून और व्यवस्था की देखभाल कर सकने की क्षमता
(6) जासूसी कर सकने की विशेषता ।

संगणक और लेखा

(1) हिसाब-किताब, कर्मचारियों के वेतन, भत्तों, ऋणों की गणना व लेखा-जोखा, उत्पादन के आँकड़े और उनका संग्रह करना ।

(2) बैंकिंग प्रणाली में लेखा संबंधी अनेक कार्यों की क्षमता ।
संगणक और भविष्यवाणी / जन्मकुंडली

(3) शादी के लिए जन्मकुंडली का मिलान करके सही व उपयुक्त जोड़ों को बताना ।

(4) विमान यात्रा करते समय गंतव्य स्थान के मौसम की जानकारी ।

संगणक और मनोरंजन के साधन

(1) संगणक द्वारा शतरंज के खेल खेले जा सकते है ।
(2) टी० वी० स्क्रीन पर अन्य खेल खेले जा सकते हैं ।
(3) मनोरंजन के क्षेत्र में यह अति प्रसिद्ध हुआ है । इसलिए बच्चों के खिलौनों का स्थान लेता जा रहा है ।

संगणक और शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में अनुसंधान अब तक पूर्ण नहीं हो सके हैं । यहाँ शिक्षा से अर्थ—भाषा, भाषा व्यवहार, शिक्षण, अधिगम आदि अन्य वे सभी कार्य जो शिक्षा क्षेत्र में किसी न किसी रूप में जोड़े जा सकते हैं, लिया गया है ।

(1) संगणक अंग्रेजी में बात कर सकता है ।

(2) यह अध्यापक की तरह कार्य कर सकता है । अध्यापक तो नहीं परंतु अध्यापक का श्रम अवश्य कर सकता है । अध्यापक को छात्रों की अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है जहाँ पर संगणक इन समस्याओं को स्वयं हल कर सकने में सहायक होता है ।

(3) भाषाई कौशलों में यह लाभप्रद सिद्ध हुआ है ।

(4) भाषा, ग्राफिक, संपादन का कार्य सुगम हुआ है । अभी तक सूचना व प्रसार का माध्यम मुद्रण था परंतु अब संगणक के विकास के फलस्वरूप यह मैग्नेटिक माध्यम के रूप में परिवर्तित होता जा रहा है । संगणक का दृश्यपटल (V. D. U) इलैक्ट्रॉनिक श्याम पट्ट का कार्य करते हुए भाषा के वाचन और बोधन कौशलों के विकास में सहायक हो सकता है ।

सगणक अभिक्रमित शिक्षण सिद्धांत के अतर्गत शिक्षण सामग्री को छोटी-छोटी इकाइयो में रखकर अध्येता अपनी क्षमता व गति के अनुसार सामग्री प्रस्तुत कर सकता है। इसमें छात्र को अपनी कमजोरी स्वय ही जानने की सुविधा रहती है तथा वह अन्य साथियो के सामने सकोच की स्थिति से छूट जाता है। कुशाग्र बुद्धि वाले अध्येताओं को मद बुद्धि वाले अध्येताओं के कारण पिछड़ना नही पड़ता। सभी अध्येताओं की प्रगति का लेखा-जोखा सगणक द्वारा सर्वत्र उपलब्ध रहता है। अध्यापक का कार्य भार भी कम होता है तथा पुनरावृत्ति के उबाने वाले कार्य से भी बचा जा सकता है।

जैसा कि अब माना जाने लगा है कि शिक्षण अनुशिक्षण प्रक्रिया का केंद्र बिंदु अध्येता होना है। शिक्षण प्रक्रिया की सार्थकता इसी मे है कि वह अध्येता की शिक्षण क्रिया को सही दिशा प्रदान करे। सगणक की सहायता से सबद्ध विषय से सबंधित सूचनाओं का अधिगमन (retrieval) किया जा सकता है। आविष्कारोन्मुखी अनुशिक्षण भी सगणक आधारित शिक्षण मे सभव है। इस प्रकार संगणक—सहायक, अध्यापक, परीक्षक, नियामक हो सकता है।

देवनागरी लिपि मे भी भाषा, साहित्य सिखाने का प्रावधान है। गणित, भौतिक विज्ञान, साहित्य सिखाने के अनेक कार्यक्रम पिलानी स्थित Birla Institute of Technology and Science के छात्रो व अध्यापको ने मिलकर सॉफ्टवेयर तैयार किए हैं। छात्र प्रकाश कलम (Light pen / mouse) से फ्री हैंड चित्रकारी कर सकते हैं।

हमारे देश के अलावा विदेशों मे भी हमारे लिए अनुकूल कार्यक्रमो के पैकेजज् बनाए जा रहे है, जिससे उर्दू, हिंदी, पजाबी और गुजराती भाषाओं मे सगणक का उपयोग हो सकेगा।

थाईलैंड में बनाया गया सगणक अन्य कार्यो के साथ 'कुरान शरीफ' भी सिखा पाएगा।

व के अलावा यदि सगणक के क्षेत्र मे इसी गति से विकास होता रहा र नही जब कि सगणक ऐसे भी कार्य कर सकेगा जिसकी कल्पना आज पा रहे है। परतु वर्तमान भारत पश्चिमी देशो की तरह नए सक्षम बानी कर पाएगा। सगणक की इन्ही विशेषताओ के कारण, उसकी सद्देनजर रखते हुए ससार के अन्य देशो के साथ कंधे मे कधा मिलाकर र ने नवबर 1984 मे नई कम्प्यूटर नीति की घोषणा कर दी। जिनसे शी कम्प्यूटर उदयोग को अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं और होगी।

अतर्राष्ट्रीय क मतो पर आधुनिक टकनालाजी का उपयोग कर सकेगा कप्यूटर / सगणक उद्योग मे अतर्राष्ट्रीय साझेदारी बढेगी, देश में सगणक सस्ते मूल्यों पर उपलब्ध होगे और वह दिन दूर नही जब संगणक भारतीय घर-घर मे देखे जा सकेगे। इस प्रकार आने वाला युग सगणक के बिना अपनी शिक्षा, मनोरंजन व सामाजिक स्तर पूर्ण नही समझेगा।

सगणक और हिंदी / भारतीय भाषाएँ

संगणक जितना अँग्रेजी भाषा मे प्रचलित हो पाया है उतना हिंदी भाषा मे नही। विदेशो में सगणक के भाषा ससाधन के उपकरण के रूप में विकसित किए जाने के सबध मे जो अनेक शोध तथा अनुवाद के क्षेत्र मे कई प्रयोग हुए है वे अँग्रेजी व विदेशी भाषाओ के क्षेत्र मे हुए हैं। भारतीय भाषाओ मे सगणक अनुप्रयोगो को विकसित करने के उद्देश्य से इलैक्ट्रॉनिकी विभाग के प्रयासो से बहुभाषी / द्विभाषी शब्द ससाधको का विकास हुआ है। भारतीय भाषाओ की ध्वन्यात्मक स्तर पर मूल-भूत एकता के आधार पर ISCII (Indian Script Code for Information Interchange) का विकास कार्य हो रहा है। इधर 'हिंदी भाषा के सदर्भ मे कंप्यूटर का उपयोग' पर कई गोष्ठियाँ हुई उनके मात्र सैद्धांतिक पक्ष ही स्पष्ट हुए है उनका क्रियान्वयन अभी तक नही हो सका है। हिंदी सदर्भ मे सगणक साधित भाषा परीक्षण, बोधन पर कुछ परियोजनाएँ केंद्रीय हिंदी सस्थान, आगरा ने उपलब्ध कराई हैं जिनमे लेखक द्वारा सितंबर 1988 मे बोधन संबंधी एक परियोजना प्रस्तुत की गई है।

भाषा शिक्षण के संबंध में एक और बात का वर्णन करना अनुपयुक्त नही होगा। इस दिशा मे सर्वाधिक कमी जो खटकती है वह है उपयुक्त शिक्षण सामग्री की। इधर सामग्री निर्माणकर्ताओं ने प्रश्न बैंक, छात्र प्रगति-लेखा-जोखा आदि विभिन्न प्रकार की सामग्री का विकास किया है। संगणक साधित शिक्षण सामग्री बनाने की और आवश्यकता की लगातार बात की जाती रही है। शिक्षण के क्षेत्र मे सगणक का सही उपयोग शिक्षा शास्त्री, भाषाविद्, प्रोग्रामर, शिक्षण सामग्री निर्माण-कर्ता के मिले-जुले प्रयासो से ही सभव है। इस क्षेत्र मे N. C E R T., केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, भारतीय भाषा सस्थान मैसूर, और अँग्रेजी तथा विदेशी भाषा सस्थान, हैदराबाद के सामग्री निर्माण एकक यदि प्रयास नही करेंगे तो सगणक के प्रति अरुचि पैदा हो जाएगी तथा भारत अन्य देशो की दौड मे ऐसे ही पिछड़ जाएगा जैसे खेल-कूद के क्षेत्र में अभी हुए सियोल के ओलपिक खेलो मे। इस सबंध मे कुछ विद्वानों ने आथरिंग सिस्टम (अध्यापक शिक्षण सबधी अपनी आवश्यकताओ के अनुरूप नई सामग्री का समावेश कर सकता है, उस पर आपेक्षित प्रश्नोत्तर द्वारा अध्येता के बोधन की पुष्टि कर सकता है, दिए गए पाठाश के आधार पर अपेक्षित

शब्दावली / वाक्य साँचों का अभ्यास करा सकता है) के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है ।

संगणक के प्रयोग की सफलता—उसका सही चुनाव

वर्तमान मे सगणक निर्माता अलग-अलग तरह के सगणक बनाकर पेश कर रहे है । यह तकनीकी विस्तार और उसकी तीव्र गति के कारण हो रहा है । अतः आपको यह जानना अत्यन्त आवश्यक होता है कि किस क्षेत्र में, किस उपलब्धि को मूर्त रूप देना है तभी आप सगणक का सही चुनाव कर पाएँगे । मुख्य रूप से मिनी, माइक्रो और मेनफ्रेम तीन प्रकार के संगणक उपलब्ध है । इनका मूल्य व रख-रखाव अत्यधिक होने के कारण विकासशील देशो के लिए इनका प्रयोग इतना सरल नही है । अत माइक्रोप्रोसेसर अपने गुणो (सस्ता सुलभ, अधिक उपयोगी) के कारण सूचना टेक्नॉलॉजी की रीढ माने जाते है । ये अपने गुणो के कारण अति प्रसिद्ध हो सके है । इनके मेल से बनी सगणना प्रणाली विकसित करने की ओर इधर रुझान बढा है । ये कार्य की रफ्तार और क्षमता मे बडे संगणको का प्रतिस्थान है । 'सुपर सगणक' व 'स्टारवार' आदि सगणकों की दुनिया अलग है जो एक सेकेंड मे दस अरब तक सगणनाएँ करने मे दक्ष हैं । ये कुछ ही देशो मे उपलब्ध हैं ।

—संगणक के प्रयोग से क्या बेरोजगारी बढने की आशंका नही है ?

—सगणक के आने पर यदि रोजगार के नए क्षेत्र खुलने की सभावनाएँ बढती है तो क्या हम लोग इन नए क्षेत्रो मे कार्य कर पाने की स्थिति मे हैं ?

—भारत मे शिक्षित नागरिको का प्रतिशत देखते हुए गरीब जनता के लिए यह और अधिक गरीबी की खाई को बढावा नहीं देगा ?

—क्या इसके रख-रखाव को सफलतापूर्वक बनाए रखने के लिए वर्तमान परिस्थितियाँ अनुमति प्रदान करती है ? आदि-आदि ऐसे अनेक प्रश्न है जो भारत मे सगणक के प्रयोग / उपयोग की सफलता के लिए प्रश्न चिह्न लगाते है । उक्त प्रश्नों के मिले-जुले उत्तर नीचे दी गई सूचना / सदेह / सभावनाओ मे स्वत स्पष्ट हो जाएंगे ।

अब तक के वर्णन से सगणक का महत्व स्पष्ट हो चुका है । परतु यह कटु सत्य है कि जो दवाई एक मरीज के विशिष्ट रोग के निदान हेतु उपयोगी हो सकती है वह दूसरे मरीज के उसी प्रकार के विशिष्ट रोग के निदान हेतु भी उपयोगी हो यह आवश्यक नही । अनुसधान की चरम सीमाओ की पहुँच की स्पर्धा मे सगणक के बिना कोई भी देश पगु कहलाया जाएगा । विशेषकर भारत जैसे देश को अन्य देशो का मुकाबला ही नही करना है वरन उनसे कही आगे भी बढना है । वर्तमान सरकार

इस दिशा में जरूरत से अधिक महत्वाकांक्षी है। इसलिए सगणक रूपी काबुली घोड़े को जबरदस्त एड लगाकर दौड़ाने का प्रयास कर चुकी है और ऐसा करते समय वह भूल गई है कि सगणक रूपी इस काबुली घोड़े को सपाट और सुंदर रास्ते भी उपलब्ध हैं कि नहीं ? भारत को अपनी तकनीकी व अन्य क्षेत्रों रूपी सड़को की पूर्ण जानकारी होते हुए भी इतना जोखिम लेना चाहिए था ? यह एक अहम् प्रश्न है। भारत मात्र अन्य देशों की नकल करके दिखावा करना चाहे तो यह दीगर बात है।

विद्यालयों मे प्रदान किए गए सगणकों को विद्यालयों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। जिस देश के विद्यालयों मे आज भी भवन, श्यामपट्ट, फर्नीचर बिजली, पानी, अध्यापकों की पूरी व्यवस्था नही है वहाँ पर सगणक का उपयोग कहाँ तक होगा ? मात्र कुछ विशिष्ट विद्यालयों मे यह सुविधा सरकार की समानता वाली नीति पर क्या स्वयं प्रश्न चिह्न नही लगाती ? क्या इससे विद्यालयों का एक विशिष्ट वर्ग नही बन पाएगा ? क्या इससे असमानता के कारण कुंठा का क्षेत्र और अधिक विस्तृत नहीं हो पाएगा ? आदि-आदि ऐसे प्रश्न है जो विचारणीय हैं।

कहा जाता है कि भारत मे अभी तक इसके प्रयोग जन-सेवाओं मे सुचारु रूप से होने लगे हैं। रेलवे आरक्षण, वायुयान आरक्षण, प्रतियोगी परीक्षाओं के परिणाम निकालने, बैंक, बीमा, लेखा मे इनके प्रयोगो से कुछ राहत मिली है। परतु मेरी राय इसमे अलग है। कहावत है कि चूहे को बिल मे जाते देख यदि बिल का मुँह बद कर दिया जाय तो चूहा मर नही जाता बल्कि वह दूसरी ओर से खोद-खोद कर निकल जाता है। दिल्ली व अन्य नगरो के रेलवे स्टेशनों पर कम्प्यूटर प्रणाली यदि भ्रष्टाचार को दूर करने व समय को बचाने के लिए लगाई गई है तो कर्मचारी बेचारे बद बिल के चूहे की तरह मर तो नही जाएंगे। आज भी आप चाहे तो आरक्षण मे धाँधलेबाजी के नमूने देख सकते है। समय भी पूर्व तरह ही लग जाता है। इस प्रकार वर्तमान प्रशासन व कम्प्यूटर प्रणाली को अँगूठ दिखा रही है सरकारी कर्मचारियों की जमात। इंडियन एयर लाइन्स के आरक्षण हेतु लगाई गई कम्प्यूटर प्रणाली की दो बार विफलता ने भारत के लिए इसकी अनुकूलता सिद्ध कर दी। सगणक द्वारा परीक्षाफल मे होने वाली हेरा-फेरी जैसी घटनाएँ भी प्रकाश मे आ चुकी हैं। यह दोष संगणक का नही है अपितु इस पर कार्य करने वालो की मानसिकता का है। जब तक हम लोग स्वस्थ मानसिकता लेकर, अपने देश को अपना समझकर कार्य करने के लिए तैयार नही होंगे ये सब व्यर्थ सिद्ध होंगे। जिस देश के बडे-बडे इंजीनियर एयरकंडीशनर मे बैठकर मात्र लिपिको का कार्य करने के ही अभ्यस्त हो चुके हैं, वे मशीनो को देखते तक नही तो उनके बिगड़ने पर क्या वे उन्हे ठीक कर पाएँगे ? ऐसे देश में कम्प्यूटर की बात बंदर को आइना दिखाने की तरह है कुछ लोग यदि सगणक में कुछ जानकारी रखकर जनता के आगे

उस क्षेत्र के विशेषज्ञ होने का ढोंग करे तो यह बात वैसे ही चरितार्थ होती है जैसे कि—

जहिं सरवर मे हंस न आवा।
बगुला तहिं सर हंस कहावा ॥

संगणक से यदि भ्रष्टाचार दूर होता है, समय की बचत होती है, न्यायालयों मे ढेर सारे पड़े मुकदमों को निपटाने, अव्यवस्था की कराहट से छुटकारा पाने में कुछ राहत मिल सकती है तो भारत की जनता इसका स्वागत करेगी। इसके विपरीत यदि उक्त अपेक्षाएँ पूर्ण नहीं हो सकी तो यह प्रयास कष्टदायक सिद्ध होगा। मेरी अपनी राय में दूसरी वाली बात की सम्भावना अधिक है क्योंकि रफ्तार की शिकायत, क्षमता का अभाव, अव्यवस्था, भ्रष्टाचार तभी दूर होगा जबकि उस पर कार्य करने वाले स्वस्थ मानसिकता लिए हुए हों।

विकसित देशों में प्राप्त बड़े संगणकों को सुरक्षित रखना अपने मे एक समस्या है। भारत मे तो यह समस्या और भी है जहाँ दोषपूर्ण संचार व्यवस्था, विद्युत सप्लाई की स्थिति में सुधार आज 41 वर्षों की स्वतन्त्रता के बाद भी नहीं हो सका। इनके अभाव मे वातानुकूलित व्यवस्था रख पाने की सोचना तो दूर तक सम्भव नही है। यदि इन सबकी विकल्प व्यवस्था सोची जाय तो वह व्यावहारिक सिद्ध नही होगी, कभी नही होगी।

बेरोजगारी के संबंध मे तो बस यही कहना होगा कि यदि इसके प्रयोग से शेष लोगों को अन्य कार्यो पर लगा दिया जाएगा तो मैं समझता हूँ कि छँटनी न होना तथा नए लोगो को काम न मिलना एक ही बात है। वैसे संगणक के प्रयोग से उससे संबंधित अन्य रोजगार खुलने की आवश्यकता तो स्वयं ही बन पडती है। लेकिन प्रशिक्षण एवं अन्य सुविधाएँ हम जुटा पाएँगे? कुल मिलाकर रोजगार की समस्या पर कोई विशेष प्रभाव पड़ने वाला नही है, हाँ कुछ समय तक परिवर्तन के कारण समस्या दिखाई पड़ सकती है जो समय आने पर स्वतः ही ठीक हो जाएगी।

संगणक से पूर्व विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्ध प्रौद्योगिकी उपकरण——टेप रिकार्डर, भाषा प्रयोगशालाएँ, अन्य ऐसे कई दृश्य श्रव्य उपकरण पडे-पडे धूल चाट रहे है। जब हम लोग उनका समुचित प्रयोग नही कर पा रहे हैं तो संगणक का उपयोग कहाँ तक कर पाएँगे?

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस दृष्टि से उत्पादन क्षेत्र—कृषि, मत्स्य-पालन, खनन प्रथम स्थान पर उद्योग द्वितीय स्थान पर व जन सेवाएँ तीसरे स्थान पर आते है। उद्योग व जन सेवाओं मे 'संगणक का उपयोग' पर ऊपर काफी कुछ

लिखा गया है परंतु कृषि क्षेत्र में भारत द्वारा उसका उपयोग निकट भविष्य में होते दिखाई नहीं दे रहा है।

अंत में मेरा अपना मत है कि भारत बिना उपर्युक्त बातों पर विचार किए इस दौड़ में धावक व खिलाड़ी की तरह पूर्ण वेशभूषा के साथ मैदान में आ चुका है, दौड़ में भाग ले चुका है, दौड़ आरंभ भी कर चुका है। वह इस अंधी दौड़ में यदि मुंह के बल नहीं भी गिरा तो पिछड़ जरूर जाएगा। हमें एक अच्छे नागरिक की भांति विचार करना होगा कि जो हो चुका है—अच्छा या बुरा, उस पर न सोचकर मात्र इसे सफल बनाने पर गंभीरतापूर्वक कार्य करना है, हमें इस दिशा में देश को आगे बढ़ाने के लिए भरसक प्रयास करने होंगे। ऐसा न हो कि कंप्यूटर महज एक फैशन बनकर रह जाए।

संगणक और उसकी उपयोगिता : भारत के विशेष संदर्भ में

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में सन् 1984-85 में कक्षा परियोजना के अंतर्गत संगणक का पदार्पण हुआ। कंप्यूटर मेंटिनेंस कार्पोरेशन, एन० सी० ई० आर० टी० और बी० बी० सी० के सहयोग से अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। 250 संगणक विद्यालयों को दिए गए तथा 86-87 में 200 और विद्यालयों को देने का लक्ष्य था। बी० बी० सी० द्वारा विकसित विभिन्न साफ्टवेयर पैकेजज के माध्यम से गणित या विज्ञान के अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया गया। अन्य विषयों में भी सॉफ्ट-वेयर के विकास की दिशा में कार्य किया जा रहा है। परंतु भाषा के क्षेत्र में कोई विकास रेखा स्पष्ट नहीं हो पाई है।

भारत की अन्य योजनाओं के अनुसार 1991 तक सभी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में तथा 95 तक माध्यमिक विद्यालयों में कंप्यूटर कार्यक्रमों के विस्तार की योजना है तथा 1998 तक व्यावसायिक व सामान्य शिक्षा में संगणक शिक्षण के माड्यूल को समन्वित करना है।

अब प्रश्न उठता है कि—

—क्या भारत संगणक के प्रयोग करने की स्थिति में है ?

—क्या संगणक के प्रयोग से भारत को लाभ हो सकेगा ?

—इससे पूर्व के प्रौद्योगिकी उपकरणों का समुचित प्रयोग भारत कर सका है ?

—जहाँ तक प्रशासन में इसके प्रयोग से भ्रष्टाचार समाप्त होने की बातें कही जाती है, क्या अब तक के अनुभवों के आधार पर कहा जा सकता है कि इससे भ्रष्टाचार दूर हुआ है ?

सामान्य परीक्षा और कंप्यूटर साधित परीक्षा

	सामान्य परीक्षा व्यवस्था	कंप्यूटर साधित परीक्षा व्यवस्था
1	सामान्य परीक्षा में नकल की समस्या रहती है ।	इसमें इसकी गुंजाइश नही रहती ।
2	निरीक्षको / पर्यवीक्षकों की आवश्यकता ।	निरीक्षकों / पर्यवीक्षको की आवश्यकता नही ।
3	पुनर्बलन की तुरंत गुंजाइश नही रहती ।	पुनर्बलन की तुरत व्यवस्था हो सकती है ।
4	परिणाम की उत्सुकता रहती है जो कि मूल्याकन में अधिक समय के कारण बढ जाती है ।	तुरत परिणाम की घोषणा मूल्याकन साथ-साथ ।
5	समय का हिसाब-किताब नही रखा जा सकता। प्रति प्रश्न पर अलग-अलग समय व अक का पूर्ण हिसाब रख पाना सभव नही होता ।	यह पूर्ण रूप से प्रति प्रश्न पर अलग-अलग समय व अंक का पूर्ण हिसाब रख सकता है ।
6.	लेखा-जोखा लवी अवधि तक नही रखा जा सकता ।	फ्लॉपी पर पूर्ण लेखा लंबी अवधि तक रखा जा सकता है ।
7.	व्यक्तित्व व वैयक्तिकता का प्रभाव पड़ता है ।	इसमे ऐसा नही होता ।
8	विद्यार्थी को लज्जित होना पडता है ।	विद्यार्थी को लज्जित नही होना पडता ।
9	एक साथ कई छात्रो का परीक्षण सभव ।	एक संगणक पर एक छात्र का परीक्षण सभव ।

'हिंदी रोम' और 'सिद्धार्थ' संगणक में अतर

केंद्रीय हिंदी सस्थान, आगरा में उपलब्ध हिंदी से सबंधित दो संगणक हैं। दोनो में कुछ अतर है। दोनो की उपयोगिता अलग-अलग होते हुए भी उनके भेद से प्रारभिक अध्ययन कर्ताओं को परिचित होना आवश्यक है। यहाँ दोनो के अतर पर प्रकाश डाला जा रहा है।

हिंदी रोम	सिद्धार्थ
1. यह आकार में छोटा होता है।	अपेक्षाकृत बड़ा होता है।
2 कुंजी पटल वर्णानुक्रम में है।	कुंजी पटल वर्णानुक्रम में नहीं है।
3 एक पंक्ति में स्वर क्रम में तथा दो पंक्तियों में व्यंजन क्रम में है। इस प्रकार वर्णानुक्रम व्यवस्थित है।	कोई व्यवस्थित रूप नहीं है।
4. कुछ व्यंजन नीले रंग में हैं जिन्हें 'शिफ्ट की' से लेना पड़ता है।	ऐसा नहीं है।
5. 'रिटर्न की' दबाने से पंक्ति बदलती है।	'रिटर्न की' दबाने से मोड बदलता है।
6. इसकी क्षमता 32 के०बी० और 36 के० बी० है।	इसकी क्षमता 64 के० बी० है।
7 जब यह अँग्रेजी में कार्य कर रहा है और हिंदी में यदि कार्य करना हो तो हिंदी मोड में लाने हेतु कुछ निर्देश [*Hindi (Return) * Prepare ϕ (Return)] देने होते हैं।	इसमें 'DEVAS CONTROL E' दबाना पड़ता है।
8. जब कार्य करते-करते मोड बदलना हो तो ESCAPE दबाने से भी काम चला सकते हैं।	ऐसा नहीं कर सकते।
9 Disc Drive अलग है।	इसमें Disc Drive अलग नहीं है। (उसी में है)
10. इसकी फ्लॉपी में इतनी क्षमता नहीं होती।	इसके Diskette की 2 लाख 48 हजार कैरेक्टर क्षमता है।
11. स्वरों और मात्राओं (ई और ी) के लिए एक ही कैरेक्टर है।	स्वरों और मात्राओं के लिए अलग-अलग कैरेक्टर हैं।

प्रश्न और उत्तर अभ्यासमाला

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

(अ) सगणक के तीन भाग हैं—
की बोर्ड, सी० पी० यू० और ....

(ब) सन् 1801 में जोसेफ जैकर्ड ने बनाया था ....

(स) पहला इलैक्ट्रोनिक सगणक कहलाया..........

(द) नियत्रण एकक.............. का भाग है।

(य) स्मृति एकक, नियत्रण एकक और गणितीय एव तार्किक एकक .... के तीन अग है।

(र) फैम्टो सेकेंड.......... से बड़ी इकाई है।

(ल) नैनो सेकेंड.......... से छोटी इकाई है।

(त्र) केंद्रीय ससाधन एकाग के .... और .... तीन अग है।

2. उपयुक्त जोड़े बनाइए—

(अ) ENIAC	(1) Key board
(ब) IBM	(2) Computer Manufacturing Unit.
(स) ALU	(3) Programmer
(द) Caps Lock	(4) Analytical Engine
(य) Charles Babbage	(5) Electronic Computer
(र) Programme	(6) C. P. U

3. उपयुक्त उत्तर पर √ का निशान लगाइए—

सामग्री का अर्थ है—

(अ) घर में प्रयुक्त खाद्य सामग्री।
(ब) किसी से सबधित वास्तविक आँकड़े।
(स) दोनों गलत हैं।
(द) दोनों सही है।

4. बैंकों में—

(अ) संगणक अन्य. परेशानी / शत्रुता उत्पन्न करते हैं।
(ब) ग्राहकों के खाते बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।
(स) ग्राहकों की आने वाली सख्या बनाने का कार्य करते है।

5 रोबोट

(अ) एक प्रसिद्ध इंजीनियर है।
(ब) एक देश का राष्ट्रपति है।
(स) लकड़ी की मूर्ति का नाम है।
(द) संगणक से नियन्त्रित होता है।

6. फ्लॉपी डिस्केट में—

(अ) सूचनाएँ एकत्रित की जाती हैं।
(ब) यह सेकेंड्री स्टोरेज डिवाइस है।
(स) दोनों सही हैं।
(द) दोनों गलत हैं।

7. संगणक से—

(अ) खेल खेले जा सकते हैं।
(ब) अध्ययन-अध्यापन किया जा सकता है।
(स) हिसाब-किताब रखा जा सकता है।
(द) तीनों सही हैं।

8. संगणक—

(अ) ज्योतिष कार्य कर सकता है।
(ब) भविष्यवाणी कर सकता है।
(स) दोनों कार्य कर सकता है।
(द) दोनों में से कुछ भी नहीं कर सकता।

9. फ्लॉपी—

(अ) फ्लॉपी ड्राइव में रखी जाती है।
(ब) दृश्य पटल में रखी जाती है।
(स) कहीं पर भी रख सकते हैं।

10. 'Ch' का अर्थ है—

(अ) Chain
(ब) Character
(स) Chess

सही उत्तर—1. (अ) मॉनीटर (ब) पंचकार्ड (स) ENIAC (द) केंद्रीय संसाधन एकांश (य) केंद्रीय संसाधन एकांश (र) नैनो सेकेंड (ल) फैम्टो सेकेंड (व) स्मृति एकक, नियंत्रण एकक और गणितीय एवं तार्किक एकक

सही उत्तर :—2. अ—5, ब—2 स—6, द—1, य—4, र—3
3. ब, 4. ब, 5. द।

सही उत्तर :—6. अ, 7. द, 8 स, 9. अ, 10 अ।

संगणक शब्दावली (Computer Glossary)

Air Red	
A. L. U.	
Anaphora	
Assisted	
A. T. N.	Augment Transition Network.
A. T. S.	Analysis Transfer Synthesis.
Authering System.	
B. B. C.	
Bery test	
Bit	
Bubble Sort.	
Bugs	
Break	
Break Shift	
Bytes	
Caps Lock	
CALL	Computer Assisted Language Learning
CALP	Computer Assisted Language Processing
Centering	
Central Unit	
Character	
Chain	
Chess	
C. M. L.	Computer Managing Learning
Coball	
Colouring Keys	
Command	
Command Window	
Context Oriented	
COM	Computer Output Microfilm
Compulation linguistics	
Computer	

Analogue~
Bussiness~
Digital~
Home~
Personal~
Micro processor~
Mini~
Super~

C. P. U	Central Processing Unit
Curser	
Data base	
Debugging	
Delete Key	
Directory	
Diskette drive	
Documents	
D O S	Disc Operating System
Editing	
Escape	
Femto Second	
Field	
File name	
Floppy	
Floppy Disc	
Floppy Drive	
Flow Chart	
Formating	
Forton	
Frequency Count	
Generater	
Globle rules	
Hard ware	
Hindi Rom	
Human ware	

I B M	International Business Management
Inbuilt	
Index	
IL	Inter-mediate Language
Input	
Input media	
Ironing System	
I S C I I	Indian Script Code for Information Interchange
K b	Kilo byte
Key	
Key board	
Light pen	
List	
Live ware	
Load	
Mail merger pakage	
Master floppy	
Meenu	
Memory Unit	
Mode	
Modules	
Moniter	
Mouse	
Nano Second	
Nock ball	
O C R	Optical Character Reader
Oral data	
Output	
Package	
Parser	
P C A T	(80 m. b. Capacity)
P C Tuter	Personal Computer Tuter
P C Use	

P C X T	(20 m b. and 40 m b. Capacity)
Perifural	
Printer	
Printing	
Process box	
programme	
P S D	primary Storage Device
Quarring	
Questions bank	
Qwety System	
Records	
Replacement	
Retrieval	
Return	
Review	
Robot	
Robot Chase	
ROM	Read Only for Memory
RTN	Recursive Trasition Net work
Run	
Samhita	
Save	
सीफोलॉजी	चुनाव पूर्वानुमान शास्त्र
सीफोलॉजिस्ट	चुनाव पूर्वानुमान शास्त्री
Shift	
Shift Key	
Shift Lock	
Sidharth	
Software	
Space bar	
Space left	
Spread lord	
SSD	Secondary Storage Device
Stimulation System	
Storage	

Style Vector	
T D E	Two Dimentional Erase
Test	
Test Window	
Tracer	
Transfer	
Tutorial System	
Unit	
User	
User Defined Key	
V D U	Video Display Unit
Welcome	
Word processor	
word Star	
word wrapping	

2

1. व्याकरण और भाषा विज्ञान

	व्याकरण	भाषा विज्ञान
1.	व्याकरण का संबंध भाषा विशेष से होता है ।	भाषा विज्ञान का संबंध भाषा से होता है ।
2.	यह काल विशिष्ट व देश विशिष्ट होता है ।	यह सार्वकालिक व सार्वदेशिक होता है ।
3.	व्याकरण विवरण और वर्णन प्रस्तुत करता है ।	भाषा विज्ञान भाषा का उच्चरित रूप भी बताता है ।
4.	व्याकरण हमे बताता है कि भाषा का निष्पन्न रूप क्या है ?	भाषा का निष्पन्न रूप कब और कैसे बना ? क्यो बना ? यह भाषा विज्ञान क्षेत्र की बात है ।
5.	यह भाषा के रूप का ही अध्ययन करता है । परिवर्तन या विकास को अशुद्ध कहेगा ।	भाषा विज्ञान भाषा के परिवर्तन व विकास का भी अध्ययन करता है ।
6.	व्याकरण का संबंध केवल शिष्ट एवं साहित्यिक भाषा से होता है ।	भाषा विज्ञान का संबंध असभ्य व जंगली मनुष्यो की बोलियों से भी होता है । अपितु यो कहें कि भाषा विज्ञान उन्हें अधिक महत्व देता है तो अतिशयोक्ति न होगी । क्योंकि इनके सहारे वह भाषा के मूल रूप तक पहुँच सकता है इसलिए भाषा विज्ञान के विकास का और प्रचलन के साथ-साथ इधर इन अपवंचित बोलियों पर अधिक कार्य होने लगा है ।
7.	भाषा विज्ञान मे स्वीकृति मिलने के पश्चात् ही व्याकरण में भाषाई रूपों को स्वीकृति मिलती है जिसके लिए यह नए नियम तक बना डालता है।	भाषा विज्ञान द्वारा अशुद्धता तथा शुद्धता की विवेचना के बाद ही वे रूप व्याकरण के क्षेत्र में पदार्पण कर सकते हैं ।

8. भाषा का मानक / आदर्श रूप व्याकरण मे निहित रहता है ।	भाषा विज्ञान में आदर्श रूप निहित नही रहता ।
9. व्याकरण मे वर्णन की प्रधानता होती है ।	भाषा विज्ञान मे व्याख्या और विश्लेषण की प्रधानता होती है ।
10. व्याकरण रूढ़िवादी होता है इसकी नजर मे 'कर्म' ही शुद्ध रूप है । पूर्व विकास क्रम के रूप 'करम', 'कम्म' अशुद्ध है ।	भाषा विज्ञान प्रगतिवादी दृष्टिकोण लिए होता है इसलिए इसकी नजर मे 'करम' 'कम्म' विकास बिदुओ के ये रूप अशुद्ध नही माने जाते ।
11. व्याकरण, भाषा विज्ञान का अंग है इसका दायरा सीमित है ।	भाषा विज्ञान अंगी है इसका दायरा विस्तृत है ।
12. व्याकरण के नियम Rigid होते है । जब भाषा इस Rigidity से बाहर निकल जाती है तो भाषा विज्ञान उसे आश्रय देता है ।	भाषा विज्ञान में flexibility होती है ।

2. संयुक्त क्रियाएँ और यौगिक क्रियाएँ

संयुक्त क्रियाएँ	यौगिक क्रियाएँ
1 मुख्य क्रिया + रंजक क्रिया या कोशीय क्रिया + रंजक क्रिया	मुख्य क्रिया + सहायक क्रिया या कोशीय क्रिया + कोशीय क्रिया
2. एक ध्रुवीय (Monopolar)	द्वि ध्रुवीय (Bipolar)
3. रंजक क्रिया मुख्य क्रिया के अर्थ को उभारने का कार्य करती है । उसका अपना अर्थ मुख्य क्रिया के साथ आने पर लुप्त हो जाता है ।	सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के अर्थ को उभारने का कार्य नही करती । बल्कि मुख्य क्रिया के साथ आने पर भी उसका अपना स्वतंत्र अर्थ रहता है ।
4. संयुक्त क्रिया के दोनों घटकों (मुख्य + रंजक) के बीच मे 'कर' का प्रयोग संभव नही है, (यदि 'कर' का प्रयोग करेंगे तो वह संयुक्त क्रिया नही रहेगी) जैसे—आ जाना—आकर जाना	यौगिक क्रिया के दोनों घटको के बीच 'कर' का प्रयोग भी किया जा सकता है, जैसे :— ले जाना—लेकर जाना 'ले जाना' मे 'लेना' और 'जाना' दोनों का अर्थ है जो कि 'लेकर

	'तुम आ जाना' के 'आ जाना' मे आने का ही अर्थ है अर्थात् यह सयुक्त क्रिया है 'आकर जाना' यदि 'कर' का प्रयोग करेंगे तो में 'आने' और 'जाने' दोनो का अर्थ है। जिससे यह यौगिक क्रिया का अर्थ देती है। न कि सयुक्त क्रिया का।	जाना' के 'लेना' और 'जाना' के अर्थों की तरह है।
5.	सयुक्त क्रियाएँ निषेधात्मक वाक्यो (सरल) मे प्रयुक्त नही हो सकती, जैसे : 'बैठ जाना'—संयुक्त क्रिया 'वह नही बैठ गया' वाक्य शुद्ध नहीं है। शुद्ध वाक्य होगा—वह नही बैठा'	यौगिक क्रियाएँ निषेधात्मक वाक्यों (सरल) मे प्रयुक्त हो सकती हैं, जैसे 'ले जाना'—यौगिक क्रिया 'वह लड़की पुस्तक नहीं ले गई'
6	जिस प्रकार संयुक्त क्रिया मे मुख्य क्रिया का सयोग हर रंजक क्रिया के साथ संभव नही है, जैसे—'खाना'+'डालना' ='खा डालना' तो सभव है परतु, 'चलना'+डालना= 'चल डालना' संभव नही है।	उसी प्रकार यौगिक क्रियाओं में भी हर मुख्य क्रिया का सयोग हर सहायक क्रिया से सभव नही है, जैसे—'लाना'+'जाना'='ले जाना' सभव है। कोशीय+कोशीय=यौगिक परतु 'लेना'+'पीना'='ले पीना' (कोशीय+कोशीय) यह योग सभव नही है।

3. **व्यतिरेकी विश्लेषण** (Contrastive Analysis) **और त्रुटि विश्लेषण** (Error Analysis)

दोनों विश्लेषण पद्धतियाँ अन्य भाषा शिक्षण में प्रयुक्त होती हैं तथा सहायक भी। व्यतिरेकी विश्लेषण अपनी सीमाओ के कारण जहाँ सहायता नही कर पाता वही त्रुटि विश्लेषण सिद्धात कार्य करता है जो कि अधिक व्यापक व प्रभावी सिद्ध हुआ है। हैमरबर्ग के अनुसार दोनों सिद्धांतों मे काफी समानता है, मूलतः दोनो एक ही हैं। दोनो विश्लेषण पद्धतियाँ अन्य भाषा शिक्षण की कठिनाइयाँ खोजकर उनका समाधान प्रस्तुत करती हैं। व्यतिरेकी विश्लेषण मातृ भाषा के व्याघात के कारण उत्पन्न कठिनाइयो पर ही प्रकाश डालता है जबकि त्रुटि विश्लेषण सभी प्रकार की कठिनाइयों पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है दोनों विश्लेषण पदधतियों

के उद्दश्यो मे समानता होते हुए भी उनकी विधियो मे अतर है व्यतिरेकी विश्लेषण मातृ भाषा के व्याघात की बात करता है जब कि त्रुटि विश्लेषण वाले यह मानते हैं कि त्रुटियाँ भाषा अनुशिक्षण प्रक्रियाओ के फलस्वरूप पैदा होती हैं जिन्हें मातृ भाषेतर त्रुटियाँ कह सकते हैं जैसे—शिक्षण सामग्री, शिक्षण विधि, शिक्षण स्थिति के लक्ष्य, सीखने वाले की मन.स्थिति, अक्षमता, शिक्षक का अपेक्षित ज्ञान, उसकी योग्यता, अनुस्तरित व सरलीकृत पाठ्यक्रम / पुस्तकें शिक्षार्थी का दृढ़ विश्वास कि सीखने वाली भाषा उपयोगी सिद्ध होगी या नही आदि-आदि ।

अन्य भाषा शिक्षण मे व्यतिरेकी विश्लेषण के परिणाम कैसे भी हो फिर भी अन्य भाषा शिक्षण में इसके आधार पर निकाले गए परिणामो की उपेक्षा नहीं की जा सकती ।

आगे चलकर व्यतिरेकी विश्लेषणवादियो के दो वर्ग बन गए । एक वर्ग ऐसा है जो पूर्वानुमानवादी कहलाता है । यह वर्ग स्रोत भाषा के, लक्ष्य भाषा मे व्याघात के आधार पर अनुमान लगाते हैं कि सीखने वाला अमुक-अमुक स्थलो पर गलती करेगा । इस वर्ग मे सरचनात्मक भाषा विज्ञान और व्यवहारवादी मनोविज्ञान वाले आते हैं, जिन्होने व्यतिरेकी विश्लेषण पद्धति को जन्म दिया और बल भी । दूसरी ओर एक वर्ग ऐसा है जो मातृभाषा के व्याघात पर ही बल नही देता बल्कि अन्य कारणो की खोज तथा व्याख्या का प्रयास करता है । इस वर्ग के अतर्गत रूपांतरणवादी और बुद्धिवादी मनोविज्ञान वाले आते हैं जिन्होंने त्रुटि विश्लेषण (error analysis) पद्धति व सिद्धात को जन्म दिया और बल भी । प्रथम वर्ग जो 'पूर्वानुमान' को लेकर चलता है उसे 'स्ट्रांग वर्शन' (Strong version) दूसरा वर्ग जो 'व्याख्या' को लेकर चलता है उसे 'वीक वर्शन' (weak version) कहा गया है ।

कुछ विद्वान तो दोनों सिद्धांतो को एक-दूसरे का पूरक मानते है । जहाँ व्यतिरेकी विश्लेषण सिद्धांत का कार्य समाप्त होता है वहाँ से त्रुटि विश्लेषण सिद्धात का कार्य आरभ होता है ।

भाषा शिक्षण मे व्यतिरेकी विश्लेषण सिद्धान्त की अपनी सीमाओ के सबध मे डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव ने अपनी 'भाषा शिक्षण' नामक पुस्तक मे जो वर्णन किया है वह इस प्रकार है—

1. व्यतिरेकी विश्लेषण दो भाषाओ के बीच की असमानता पर ही बल देता है जिसके कारण उत्पन्न कठिनाइयाँ ही मात्र कठिनाइयाँ नही होती । यह शिक्षार्थी की अन्य समस्याओ और भाषा सीखने में आने वाली अन्य कठिनाइयों के प्रति उदासीन होता है ।

2. व्यतिरेकी विश्लेषण के आधार पर निर्धारित कठिनाइयो का क्षेत्र हमेशा शिक्षार्थी के लिए कठिनाई ही बन कर आता हो ऐसा आवश्यक नही ।

3 अधिकाश व्यतिरेकी विश्लेषण सैद्धांतिक परिचर्चा तक सीमित रह जाता है। वह भाषा के सार्वभौमिक तत्वों का पता देने के लिए प्रयत्नशील होने के कारण 'शैक्षिक' रूप खो देता है।

4 व्यतिरेकी विश्लेषण द्वारा अनुमानित व्याघात की संकल्पना संदेहास्पद है क्योंकि अनुमान के बाद भी वे त्रुटियाँ नही होती जिनका अनुमान लगाया जाता है। इसके विपरीत जिसका अनुमान नही लगाया जाता वे त्रुटियाँ दिखायी देती हैं। विभिन्न सिद्धातो और मॉडलों के आधार पर स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के विवरण के भिन्न होने के कारण अनुमानित व्याघात भी भिन्न होंगे।

5. व्यतिरेकी विश्लेषण के आधार पर भाषा वैषम्य और भाषा सीखने की कठिनाइयो मे कोई सीधा संबंध निर्धारित नही किया जा सकता। जिस अनुपात मे भाषा वैषम्य होगा, यह आवश्यक नही कि उसी अनुपात मे भाषा सीखने मे कठिनाई भी हो। यह भी संकेत दिया जा सकता है कि बोलने और लिखने (Productive Control) के क्षेत्र की कठिनाइयाँ, भाषा पढ़ने और समझने (Receptive Control) की कठिनाइयो से भिन्न होगी जिसकी ओर व्यतिरेकी विश्लेषण संकेत देने मे समर्थ नही।

6. भाषा सीखने मे आने वाली कई ऐसी कठिनाइयाँ है जो लक्ष्य भाषा की अपनी प्रकृति और जटिलता का परिणाम होती है। व्यतिरेकी विश्लेषण इनका पता देने मे समर्थ नहीं होता।

7. व्यतिरेकी विश्लेषण शिक्षक और शिक्षण सामग्री को केंद्र मे रखकर किसी के व्याकरण को शैक्षिक व्याकरण मे रूपातरित करता है। यह व्याकरण प्रमुखत. 'शिक्षक का व्याकरण' होता है (Teacher-oriented grammar), इसे किसी भी प्रकार शिक्षार्थी के व्याकरण (Student-oriented grammar) मे नहीं ढाला जा सकता।

अब यह माना जाने लगा है कि शिक्षण प्रक्रिया के केंद्र मे शिक्षक के स्थान पर शिक्षार्थी होता है इसलिए पढाने की प्रक्रिया को बहुत कुछ 'सीखने की प्रक्रिया' के अनुसार ढालना अत्यावश्यक है। (नई शिक्षा नीति के सिद्धांत मे भी इसका स्थान है।) शिक्षार्थी के सीखने के स्वाभाविक प्रक्रिया के अनुरूप ढला व्याकरण ही सर्वाधिक सक्षम और समर्थ शैक्षिक व्याकरण होता है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि आज व्यतिरेकी विश्लेषण के सिद्धात, प्रयोजन और प्रणाली पर कई आक्षेप उठाए जा रहे है जो कि सही है परन्तु इसके साथ यह भी एक निर्विवाद सत्य है कि आज भी भाषा शिक्षण 'व्यतिरेकी विश्लेषण' के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों की उपेक्षा नही की जा सकती। कहना न होगा कि सर्वोत्तम पद्धति यह होगी कि व्यतिरेकी विश्लेषण द्वारा जितनी सहायता मिल

सके लें तथा शष के लिए लक्ष्य भाषा की सरचना की गुत्थियो उनकी व्याख्या तथा अन्य बातों की छान-बीन करे तथा उनका उपयुक्त समाधान ढूंढें।

4. **तुलनात्मक अध्ययन** (Comparative Study) **और व्यतिरेकी अध्ययन** (Contrastive Study)

तुलनात्मक अध्ययन	व्यतिरेकी अध्ययन
1 दो या दो अधिक भाषाओं से संबधित।	केवल दो भाषाओं से सबधित।
2. लिखित सामग्री की अपेक्षा की सभावना।	लिखित सामग्री की अनिवार्यता नही।
2. समान स्रोतीय भाषाओ की अनिवार्यता।	स्रोत का बधन नही।
4. भाषा परिवार के सामीप्य में सहायक। reconstruction की सहायता से आदि रूप (proto-form) की स्थापना सभव।	भाषा शिक्षण में सहायक।
5 समानधर्मी गुणों पर विशेष बल।	असमान गुणों पर विशेष बल।
6. जीवित व अजीवित भाषाओ पर अध्ययन।	केवल जीवित भाषाओ पर अध्ययन।
7. भाषा परिवर्तन के नियमो का उद्घाटन।	सभी प्रकार के व्याघात आदि दृष्टियो से शिक्षण के लिए शिक्षण बिंदु प्राप्त करने तथा अनुवाद कला में सहायक।

5. **सामान्य कोश** (General Dictionary) **और अध्येता कोश** (Learner s Dictionary)

किसी भाषा विशेष को सीखने वालो की आवश्यकताओं को ध्यान मे रखकर लिखा गया कोश 'अध्येता कोश' कहलाता है।

सामान्य कोश	अध्येता कोश
1. शब्द के कई अर्थ देने होते हैं।	केवल एक या दो प्रचलित अर्थ तथा प्रयोग देने होते हैं।

2.	शब्दो की सख्या अधिक होती है। (सभी प्रकार के शब्द दिए जाने के कारण)	शब्दो की सख्या सीमित होती है (क्योकि अप्रचलित, पुरागत व बोलियो के शब्दो को छोड़ना पड़ता है।)
3	चित्र नही दिए जाते।	चित्रों की अनिवार्यता रहती है। कई अध्येता कोश तो चित्र कोश बन जाते है।
4.	मोटी-मोटी व्याकरणिक सूचनाएँ दी जाती है।	व्याकरणिक सूचनाओं के साथ शब्द के सामाजिक व्यवहार की सूचनाएँ भी देनी होती है। जैसे 'धोबी' के साथ 'धोबी जी आइए विराजिए' का प्रयोग नही होगा।
5.	सामान्य कोश अध्येता कोश के लक्षण ले सकता है।	परतु अध्येता कोश सामान्य कोश के लक्षण नही ले सकता।
6.	इसका प्रयोगकर्ता अर्थगत अनेक छायाएँ जानता है व उनके प्रयोग भी।	इसका प्रयोगकर्ता सीमित जानकारी रखता है। प्रयोगकर्ता का उद्देश्य भाषाई कौशलों पर अधिकार करना होता है।
7.	अध्येता कोश के लक्षणो का विकल्प।	अध्येता कोष के लक्षणों की अनिवार्यता।

कोशीय इकाई, यदि विदेशी भाषा के आगत शब्द है तो इसकी सूचना भी अध्येता कोश मे देनी आवश्यक है। अंग्रेजी शब्दों की वर्तनी / उच्चारण इतने भिन्न हो गये है कि उनको पहचानना स्वयं अँग्रेजीभाषियो के लिए कठिन हो गया है, जैसे अल्मोनियम सन (सेंट), कंदील (कैंडिल), त्रासदी (ट्रेजिडी) आदि।

अध्येता कोश में विलोम शब्द से अर्थ स्पष्टीकरण मे सहायता मिलती है। 'खिन्न' शब्द, 'प्रसन्न' देकर समझाना सरल होगा। व्याख्या में दिए गए अर्थ से जो सकल्पना बनेगी उसे पुष्ट कर पाएगा। इसके बाद 'खिन्न' शब्द के साथ 'मन', 'हृदय' तथा उनसे अन्वित होने वाली क्रियाओं का प्रयोग सीखेगा। ये सब सामान्य कोश की अनिवार्यता नही।

6. व्युत्पादक और रूपसाधक प्रत्यय

प्रत्यय (Affixes)

प्रत्ययो का वर्णन दो आधारो पर किया जाता है—प्रयोग और प्रकार्य

प्रयोग के आधार पर प्रत्यय तीन प्रकार के होते है—

(i) पूर्व प्रत्यय (Prefix),
(ii) मध्य प्रत्यय (Infix), और
(iii) पर प्रत्यय (Suffix)।

प्रकार्य के आधार पर प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—

(i) रूपसाधक / विभक्ति प्रत्यय (Inflectional Affixes)
(ii) व्युत्पादक प्रत्यय (Derivational Affixes)

दोनों के अतर को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है :—

	व्युत्पादक प्रत्यय	रूपसाधक प्रत्यय
1.	व्युत्पादक प्रत्यय शब्द की आतरिक सीमा मे आते है। कठिन + आई = कठिनाई	रूपसाधक प्रत्यय शब्द की बाह्य सीमा मे आते हैं। कठिनाई + यों = कठिनाइयों
2.	व्युत्पादक प्रत्यय के बाद अन्य प्रत्यय (व्युत्पादक / रूपसाधक) लग सकते हैं अत. ये Open Construction कहलाते हैं। इस प्रत्यय के बाद शब्द विस्तार की गुंजाइश बनी रहती है।	रूपसाधक प्रत्यय के बाद अन्य प्रत्यय नही लग सकते हैं। अत. ये Closed Construction कहलाते हैं। इस प्रकार ये प्रत्यय शब्द विस्तार (निर्माण प्रक्रिया) को रोक देते हैं। अत. ये चरम प्रत्यय होते हैं।
3.	व्युत्पादक प्रत्यय लगने से शब्दो का व्याकरणिक वर्ग (grammatical group) प्राय. बदल जाता है। धन (सं०) + ई = धनी (वि०) नगर (सं०) + इक = नागरिक (वि०) नागरिक (वि०) + ता = नागरिकता (सं०) स्वीकार (वि०) + ना = स्वीकारना (क्रि० वि०) पीसना (क्रिया) + आई = पिसाई (संज्ञा) बूढा (विशेषण) + पा = बुढ़ापा (संज्ञा)	रूपसाधक प्रत्यय लगने से शब्दों का व्याकरणिक वर्ग नही रहता है। लड़का (संज्ञा) + ए = लड़के (संज्ञा) + ओं = लड़कों (संज्ञा)

	लडका (जाति वाचक सज्ञा)+पन =लड़कपन (भाव वाचक संज्ञा) सुन्दर (वि०)+ता=सुन्दरता (सज्ञा) Nation (सज्ञा)+hood= Nationhood (सज्ञा) (वर्ग नही बदला)	
4.	व्युत्पादक प्रत्ययों के योग से निर्मित अश 'शब्द' होता है जो कि कोशीय अर्थ देता है ।	रूपसाधक प्रत्ययो के योग से निर्मित अश 'पद' होता है जो कि व्याकरणिक अर्थ देता है और ये प्रत्यय वाक्य के अन्य पदो से व्याकरणिक सबध प्रकट करते हैं ।
	सोना+आर=सुनार win+er=winner	सुनार+ओ=सुनारो winner+s=winners
5	व्युत्पादक प्रत्यय युक्त शब्द सरल शब्द की तरह भी प्रयुक्त हो सकते है। वाक्य में उन्हे एक रूपिम वाले शब्द द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है— खेल+आड़ी=खिलाडी (प्रत्यय युक्त) खिलाडी आ रहा है। लड़का आ रहा है। खिलाड़ी के स्थान पर लड़का रखा जा सकता है।	रूप साधक प्रत्यय युक्त शब्द सरल शब्द की तरह प्रयुक्त नही हो सकते। वाक्य मे उन्हे एक रूपिम वाले शब्दों द्वारा प्रतिस्थापित नही किया जा सकता— लडका+ओ=लडको (रूप साधक प्रत्यय युक्त शब्द) लड़कों ने शोर मचाया *लड़का ने शोर मचाया 'लड़कों' के स्थान पर 'लडका' नही रखा जा सकता।
6.	व्युत्पादक प्रत्यय सख्या मे अधिक होते है लेकिन प्रत्येक की व्यापकता / क्षेत्र / प्रसार कम होता है । 'आपा' प्रत्यय 'बूढ़ा' के साथ मिलकर 'बुढापा' बनाता है । इसी प्रकार एक-दो शब्द और बन सकते हैं ।	रूपसाधक प्रत्यय सख्या मे कम होते है लेकिन प्रत्येक की व्यापकता / क्षेत्र / प्रसार अधिक होता है। लिंग, वचन, विभक्ति वाले प्रत्यय लगलभ हर सज्ञा, सर्वनाम और विशेषण मे लग सकते है। मेरा (सर्व० पु०)+ई (स्त्री० प्रत्यय

=मेरी (सर्व० स्त्री०)
हरा (वि०)+ई (स्त्री० प्रत्यय)=
हरी (वि० स्त्री०)
लड़का (स०)+ए (ब० व० प्रत्यय)
=लड़के (स० ब० व०)

7 अन्य भाषा शिक्षण और विदेशी भाषा शिक्षण (उद्देश्य और लक्ष्य)

दोनो की शिक्षण विधियो के अतर्गत विशेप भेद करना सभव नही है लेकिन उनके उद्देश्यो और लक्ष्यों मे पर्याप्त भेद दिखाई देता है।

विदेशी भाषा, दूरस्थ क्षेत्र के परिभ्रमण, वहाँ की सस्कृति व साहित्य को समझने व भाषा की सामान्य जानकारी के उद्देश्य से सीखी जाती है। जबकि अन्य भाषा अपने ही क्षेत्र मे, और जीवन की आवश्यकताओ की पूर्ति के उद्देश्य से सीखी जाती है। भारत के सदर्भ मे जहाँ राष्ट्रभाषा व केंद्र की राज भाषा एक ही है प्रेम, राजनीति, कला के माध्यम से हिंदी सामान्य जन तक पहुँच सकती है। फिल्मी गीतो, गजलो, चलचित्रो के माध्यम से मनोरजन के अलावा हिंदी को जीविका का साधन भी बनाया जा सकता है। जबकि विदेशी भाषाओ के सीखने के उद्देश्य उक्त प्रकार के नही हो सकते। विदेशी भाषा के शिक्षण मे 'सुनना और पढना' कौशलो (receptive controls) पर अधिक बल होता है अभिव्यक्ति पक्ष या 'बोलना और लिखना' कौशलो (productive controls) पर अधिक बल नही दिया जाता। प्रारभ मे मात्र शब्दावली, उच्चारण, आधारभूत वाक्य साँचे आदि सीखना ही पर्याप्त होगा। अन्य भाषा शिक्षण मे, जीवन मे प्रयोग के उद्देश्य से सीखने के कारण उसका लक्ष्य होता है कम समय मे मातृभाषाभाषी जैसी दक्षता प्राप्त करना। इसम 'रिसेप्टिव कट्रोल' की भांति 'प्रोडक्टिव कट्रोल' पर भी अच्छी पकड का होना आवश्यक होता है। भाषा प्रयुक्तियो, औपचारिक अनौपचारिक, गाली, कहावतें, पैरालैंग्वेज के ज्ञान के अलावा टैबू, स्लैंग, जार्गन, आदि का ज्ञान, लेखन की गति ऐसी विशेषताएँ हैं जो विदेशी भाषा शिक्षण से बहुत अलग करने मे सक्षम हैं। इन सभी बिंदुओ को ध्यान में रखकर ही पाठ्य सामग्री तैयार करनी होगी।

8 संरचनात्मक / परपरागत व्याकरण और रूपान्तरण व्याकरण

1 सरचनावादी / व्यवहारवादी मानते हैं कि व्याकरण आदतों का समुच्चय है।	रूपान्तरण व्याकरण वाले रचनान्तरणवादी होने के कारण व्याकरण को नियमो का समुच्चय मानते हैं।
2. ये सज्ञा, सर्वनाम आदि को परिभाषित करते हैं।	ये परिभाषा नही देते अपितु ये मानते है कि सज्ञा, सर्वनाम आदि का Function (प्रकार्य) ही अलग है

3. सरचनात्मक / परपरागत व्याकरण वाले 'एकक और विन्यास' (item and arrangement) की बात करते है। उनके अनुसार वाक्य 'राम रोटी खाता है।' के शब्दो में आपसी सबध Linear होता है।	ये व्याकरण की सरचना को 'एकक और पद्धति' (item and process) द्वारा स्पष्ट करते हैं। वाक्य 'राम से रोटी खाई जाती है।' process किया हुआ वाक्य है जो कि 'राम रोटी खाता है, का ही रूपातरित वाक्य है।
4. 'सुदर फूल और पत्तियाँ' निकटस्थ अवयव विश्लेषण (I C. Analysis) द्वारा दो अर्थो को स्पष्ट करने मे सक्षम है। परतु 'राम की तस्वीर' मे निहित तीन अर्थो को स्पष्ट नही कर पाते।	रूपातरण व्याकरण 'राम की तस्वीर' मे निहित तीनो अर्थों को बखूबी स्पष्ट कर पाता है।
5 ये सतही स्तर (Surface level) पर Pattern, Syntagmatic और Paradigmatic Relation को स्थापित करता है। ये एकांगी स्वरूप का अध्ययन करता है।	ये गहन स्तर (Deep lavel) पर विश्लेपण करके भाषा के समग्र तथा एकीकृत रूपो का अध्ययन करता है।

इनके अलावा रचनातरणवादी चामस्की के अनुसार एक आदर्श व्याकरण मे—1. वर्णनात्मक सामर्थ्य (Descriptive adequacy), 2 व्यापकता (Generality) तथा 3. वर्णन की सरलता (simplicity) होनी चाहिए जो कि रूपातरण व्याकरण मे है जबकि उक्त तीनो की कमी सरचनावादी / परपरावादी व्याकरण मे स्पष्ट झलकती है।

9. चामस्की के रूपातरण प्रजनन व्याकरण के बाद फिल्मोर का कारक व्याकरण आया। चामस्की द्वारा प्रतिपादित व्याकरण और फिल्मोर द्वारा प्रतिपादित व्याकरण में निम्नलिखित अतर है—

रूपांतरण व्याकरण	कारक व्याकरण
1. रूपांतरण व्याकरण मे सरचनात्मक व्याकरण से अलग अपनी तीन विशेषताएँ वर्णनात्मक सामर्थ्य (Descriptive adequacy); व्यापकता (Generality) और वर्णन की सरलता (Simplicity) है। यह	फिल्मोर का कारक व्याकरण रचनांतरण व्याकरण का ही एक अंग है।

व्याकरण Deep Level पर भाषा के समग्र व एकीकृत रूप का अध्ययन करने वाला व्याकरण कहलाता है।	
2 रूपातरण व्याकरण, व्याकरणिक प्रकार्य (Grammatical functions) और व्याकरणिक कोटियाँ (Gramma ical Categories) मे भेद करते है। उनके अनुमार कर्ता, कर्म व्याकरणिक प्रकार्य बताते हैं जबकि सज्ञा पदबध, क्रिया पदबध (NP, VP) व्याकरणिक कोटियाँ बताते है।	2. कारक व्याकरण, वाक्य का विस्तार प्रकारता (Modality) तथा प्रतिज्ञप्ति (Preposition) मे करते हैं।
3. चामस्की के पदबध सरचना नियमों से निर्मित phrase marker केवल व्याकरणिक कोटियो का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। वे आगे कहते है कि 'कर्म' जैसे function सबधो का द्योतन, phrase marker मे आवश्यक नही है क्योंकि उनका ज्ञान व्याकरणिक कोटियो के आपसी सबधो से स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है।	Fillmore के अनुमार adverbial phrases में इस प्रकार का सबध ('कर्म' जैसे function सबधो का द्योतन) या इसे इस प्रकार भी कह सकते है कि adverbial phrase का प्रतिनिधित्व करते समय उनका विधिवत् प्रकार्यगत व कोटिगत भेद समाप्त हो जाता है। कारक व्याकरण मे ये समस्याएँ नही आती।

कारक व्याकरण की सबसे बड़ी देन है—कारको को मात्र आर्थी सत्ता के रूप मे न देखकर उन्हे सज्ञाओं और क्रियाओं के मध्य विभेदित सबंधो के रूप में ग्रहण करना। इतना होते हुए भी यह व्याकरण दोषमुक्त नही है। ससार की भाषाओं के विश्लेपण की सामर्थ्य की दृष्टि से कारको की उचित सख्या कितनी है? इस दृष्टि से कौन-कौन मे उचित कारकीय सबधों की परिकल्पना की जानी चाहिए? ऐसे प्रश्न है जो उत्तर की अपेक्षा रखते हैं।

3

1 संज्ञा शब्दों के सरल (Direct) व तिर्यक् (Oblique) रूप

जिन संज्ञा शब्दों में 'परसर्ग' (ने, को, में ...) नहीं लगते वे सरल (direct) रूप कहलाते हैं इन्हें 'मूल रूप' भी कहा गया है। तथा जिन संज्ञा शब्दों में परसर्ग लगते हैं वे तिर्यक् (oblique, रूप कहलाते हैं।

हिंदी पुल्लिंग संज्ञा शब्द सदैव आकारांत (कुत्ता आदि) न होकर अकारांत (कबूतर), इकारांत (कवि), ईकारांत (मोती), ऊकारांत (आँसू) भी हो सकते हैं।

इसी प्रकार हिंदी स्त्रीलिंग शब्द सदैव ईकारांत (घटी) न होकर अकारांत (कलम), आकारांत (चिड़िया) तथा अन्य (निधि, बहू आदि) होते हैं।*

उक्त सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों के एक वचन व बहुवचन रूप बनाने में थोड़ा-थोड़ा अंतर आता है (देखिए—भाषा विज्ञान और हिंदी संरचना—ले० डा० पीताम्बर, 1985 पृष्ठ—32) सुविधा के लिए संपूर्ण संज्ञा शब्दों को आठ+एक= नौ वर्गों में बाँटा गया है। इन नौ वर्गों के प्रथम आठ वर्गों के एक-एक शब्द को उस वर्ग का प्रतिनिधि शब्द मान कर एक वचन व बहु-वचन के रूप समझ लें तो संपूर्ण शब्दावली के सभी रूप सरलता से याद हो सकते हैं। नवें वर्ग (स्त्रीलिंग) में कुछ अलग प्रकार की संज्ञाओं को रखा गया है।

वर्ग—1 आकारांत पुल्लिंग

सरल/मूल रूप—	एक वचन	लड़का
	ब० वचन	लड़के
तिर्यक् रूप—	एक वचन	लड़के (ने)
	ब० वचन	लड़कों (ने)

इस वर्ग के अन्य शब्द, जिनके रूप इसी प्रकार चलते हैं, निम्नलिखित हैं :—

अण्डा, कुत्ता, कपड़ा, कछुआ, कीड़ा, कौआ, गधा, घड़ा, घोड़ा, घंटा, चश्मा, चीता, छाता, डिब्बा, पेड़ा, पैसा, पौधा, बेटा, भेड़िया, भैंसा, महीना, मुर्गा, रस्सा, लोटा, समोसा और साला।

---

* विस्तृत अध्ययन के लिए लेखक की पुस्तक 'भाषा विज्ञान और हिंदी रचना' देखिए।

वर्ग—2 अकारांत पुंल्लिंग

सरल/मूल रूप— एक वचन घर
ब० वचन घर

तिर्यक् रूप— एक वचन घर (में)
ब० वचन घरों (में)

इस वर्ग के अन्य शब्द, जिनके रूप इसी प्रकार चलते हैं, निम्नलिखित है :—

ऊँट, कबूतर, कागज़, खटमल, खेत, गाँव, घर, टमाटर, दिन, पत्थर, पुत्र, पेड़, वस्त्र, बाघ, बाजार, बालक, बैल, मकान, मच्छर, मोर, शेर, सप्ताह, साँप, सूअर ।

वर्ग—3 इकारांत पुंल्लिंग

सरल/मूल रूप— एक वचन कवि
ब० वचन कवि

तिर्यक् रूप— एक वचन कवि (ने)
ब० वचन कवियों (ने)

इस वर्ग के अन्य शब्द, जिनके रूप इसी प्रकार चलते हैं, निम्नलिखित है :—

पूँजीपति, पति, जाति ।

वर्ग—4 ईकारांत पुंल्लिंग

सरल/मूल रूप — एक वचन हाथी
ब० वचन हाथी

तिर्यक् रूप — एक वचन हाथी (ने)
ब० वचन हाथियों (ने)

इस वर्ग के अन्य शब्द, जिनके रूप इसी प्रकार चलते है, निम्नलिखित है —

पक्षी, माली, मोती, पड़ोसी, शरणार्थी ।

वर्ग—5 ऊकारांत पुंल्लिंग

सरल/मूल रूप— एक वचन आँसू
ब० वचन आँसू

तिर्यक रूप — एक वचन आँसू (से)
ब० वचन आँसुओं (से)

इस वर्ग के अन्य शब्द, जिनके रूप इसी प्रकार चलते हैं, निम्नलिखित हैं :—

उल्लू, चाकू, डाकू, नींबू, लड्डू ।

वर्ग—1 ईकारांत स्त्रीलिंग

सरल/मूल रूप— एक वचन पत्नी
ब० वचन पत्नियाँ

तिर्यक् रूप— एक वचन पत्नी (को)
ब० वचन पत्नियों (को)

इस वर्ग के अन्य शब्द, जिनके रूप इसी प्रकार चलते है, निम्नलिखित हैं :—

कचौडी, गिलहरी, घटी, घाटी, घोडी, चिट्ठी, टोपी, डिब्बी, तितली, नदी, नाली, नौकरी, पुत्री, पूड़ी, बकरी, मक्खी, मछली, रस्सी, रानी, रोटी, लड़की, शादी, स्त्री, दवाई, पत्ती।

वर्ग—2 अकारांत स्त्रीलिंग

सरल/मूल रूप— एक वचन कलम
ब० वचन कलमे

तिर्यक् रूप— एक वचन कलम (से)
ब० वचन कलमों (से)

इस वर्ग के अन्य शब्द, जिनके रूप इसी प्रकार चलते है, निम्नलिखित है :—

किताब, कोयल, गाय, चट्टान, चील, छत, जड़, झील, डाल, तस्वीर, तहसील, दाल दुकान, पुस्तक, बहिन, बात, रात, शाम, सरकार।

वर्ग—3 आकारांत स्त्रीलिंग

सरल/मूल रूप— एक वचन कन्या
ब० वचन कन्याएँ

तिर्यक् रूप— एक वचन कन्या (को)
ब० वचन कन्याओ (को)

इस वर्ग के अन्य शब्द जिनके रूप इसी प्रकार चलते है, निम्नलिखित है :—

चिड़िया, डलिया, डिबिया, दवा, प्रार्थना, माता, मैना, लता, सजा, हवा।

वर्ग—4 अन्य स्त्रीलिंग

इस वर्ग मे जो शब्द रखे गए हैं उनकी रूपावली एक तरह से नहीं बनती इसलिए इस वर्ग के सभी शब्दो को यहाँ दिया जा रहा है।

सरल/मूल रूप		तिर्यक् रूप	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	बहु वचन
अशुद्धि	अशुद्धियाँ	अशुद्धि (को)	अशुद्धियों (को)
तिथि	तिथियाँ	तिथि (में)	तिथियो (मे)

दुनियाँ	दुनियाँ	दुनियाँ (में)	दुनियाँ (में)
बहू	बहुएँ	बहू (को)	बहुओं (को)
रीति	रीतियाँ	रीति (से)	रीतियों (से)
वस्तु	वस्तुएँ	वस्तु (का)	वस्तुओं (का)

2. समास, संधि और रूपस्वनिमिक

समास

दो या दो से अधिक शब्द मिलकर जब एक हो जाते है, तब वे समस्त पद कहलाते हैं। इस मेल का नाम समास है, जैसे :—

पिता + पुत्र = पिता-पुत्र, नौ + रत्न = नवरत्न, पीत + अंबर = पीतांबर।

संधि

दो अक्षरों के मेल से जो विकार होता है उसे संधि कहते है, जैसे :—

विद्या + आलय = विद्यालय, पीत + अंबर = पीतांबर।

यदि अक्षरों के मेल से विकार नहीं होता तो उसे संधि नहीं कहेंगे अपितु संयोग कहेंगे, जैसे :—

कीर्ति + लता = कीर्ति लता।

समास और संधि को देखने से स्पष्ट होगा कि संधि ध्वनि विकार से संबंधित है जबकि समास अर्थ / व्याकरण से। [समास में ध्वनि विकार हो भी सकता है और नहीं भी]

संधि और रूपस्वनिमिक

संधि ध्वनि परिवर्तन / विकार से संबंधित है (डाक + घर = डाग्घर, मास्टर + साहब = मास्साब) जबकि रूपस्वनिमिक ध्वनि व व्याकरण दोनों से। अतः कह सकते हैं कि रूपस्वनिमिक में व्याकरणिक परिवर्तन के कारण ध्वनि परिवर्तन होते हैं। जैसे :—

बहू + एँ = बहुएँ, डाकू + ओं = डाकुओं

3. मूलांश और प्रातिपदिक (Root and Stem)

मूलांश और प्रातिपदिक को स्पष्ट करने से पहले यह बताना आवश्यक है कि संस्कृत में इनकी संकल्पना हिंदी से भिन्न है।

खा, पी, उठ्, कर्...... आदि धातुएँ हैं। धातुओं से भिन्न सार्थक इकाइयाँ विभक्ति प्रत्यय रहित अंश प्रातिपदिक कहलाते हैं।

संस्कृत में—

पत् → मूलांश

पत् + अ = पत → प्रातिपदिक

पत + ति = पतति → शब्द

'पत' प्रातिपदिक है, शब्द नही। चूँकि इसका स्वतत्र प्रयोग नही होता।

हिंदी में → मूलांश (Root) अर्थ का मुख्य सवाहक होता है। प्रातिपदिक, मूलांश (Root) से बड़ा और शब्द से छोटा होता है।

[हिंदी का प्रातिपदिक सस्कृत के प्रातिपदिक से भिन्न है। हिंदी में इस प्रकार का प्रातिपदिक नही होता]

प्रातिपदिक शब्द एक होते हुए भी सस्कृत और हिंदी में एक नही है।

प्रातिपदिक मूलांश से बड़ा और शब्द से छोटा होता है। अर्थात् प्रातिपदिक, मूलाश और शब्द के बीच की चीज है।

When all inflectional affixes are stripped from the words of a language, what is left is strock of stems —*C F Hockett*

अँग्रेजी के 'friends' शब्द मे 'friend' प्रातिपदिक है और मूलाश भी। / -s / रूपसाधक प्रत्यय है। इस रूपसाधक प्रत्यय / -s / को हटाने के बाद friendship, मूलाश नहीं है [इसमे दो रूपिम / friend / और / ship / है] वरन् यह प्रातिपदिक है। इस प्रातिपदिक / friendship / मे / friend / मूलाश है। अत: शब्द friendships मे *friend* → मूलाश, + ship = friendship → प्रातिपदिक हुआ। कुछ प्रातिपदिको या शब्दो मे दो या दो से अधिक मूलांश होते है उन्हे compound कहते हैं। अँग्रेजी के Black bird मे दो मूलाश Black और Bird है। शब्द Blackbirds मे Black bird Compound प्रातिपदिक है और / -s / प्रत्यय।

मूलाश और प्रातिपदिक को हिंदी के उदाहरण द्वारा भी समझा जा सकता है

घुड़सवारी = घुड़सवार + ई = घोड़ा + सवार + ई

/ -ई / रूपसाधक प्रत्यय हटाने के बाद / घुड़सवार / प्रातिपदिक हुआ। / घुड़सवार / मे से / सवार / हटाने के बाद / घुड़ ~ घोड़ा / मूलाश हुआ।

इसी प्रकार धोबी + इन = धोबिन + एँ = धोबिनें में धोबी—मूलाश, + इन = धोबिन—प्रातिपदिक + एँ = धोबिनें—शब्द हुआ।

4 शब्द और रूपिम

न्यूनतम मुक्त अर्थवान इकाई जिसे पुन विभाजित न किया जा सके, शब्द कहलाता है जैसे—

घर, मकान, घड़ी, आदि।

न्यूनतम **मुक्त या आबद्ध** अर्थवान इकाई जिसे पुनः विभाजित न किया जा सके, रूपिम कहलाता है।

जैसे '—डाकघरों=डाक+घर+ओं=तीन रूपिम ।
डाक और घर=दो शब्द या दो रूपिम ।
ओं+[बहुवचन अर्थ का प्रत्यय है] एक रूपिम ।

स्पष्ट है कि शब्द और रूपिम में अंतर मात्र मुक्त और मुक्त या आबद्ध का है । अर्थात् शब्द के लिए मुक्त होना अनिवार्य है जब कि रूपिम के लिए नहीं । रूपिम मुक्त भी हो सकता है और आबद्ध भी । इसी बात को इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि शब्द वाक्य मे प्रयोग के योग्य ही होगा जबकि रूपिम वाक्य मे प्रयोग योग्य हो भी सकता है और नही भी ।

इससे स्पष्ट करने के लिए ऐसा भी कहा जा सकता है कि शब्द एक या एक से अधिक रूपिमों का हो सकता है (लताएँ=लता+एँ=2 रूपिम, घोड़ा=घोड़ा=1 रूपिम] परतु रूपिम का शब्द होना आवश्यक नही होता । लताएँ=लता+एँ मे 'लता' एक रूपिम है और शब्द भी परतु दूसरा रूपिम 'एँ' रूपिम है शब्द नही ।

5. पद और उनके प्रकार

पदों के प्रकार के सबध मे विद्वानो के एकमत न होने पर भी कुछ विशेष पदो के नाम गिनाए जाते है । उन्हे यहाँ सक्षेप मे बताने का प्रयास किया जाता है ।

(1) शून्य पद (Zero Morph)

ऐसा पद जो मात्र अर्थ देता है । इस अर्थ देने वाले पद का कोई रूप नही होता । अतः रूप रहित अर्थवान पद शून्य पद (Zero Morph) कहलाता है । जैसे—

fish, hair, deer, sheep के बहुवचन रूप भी fish, hair, deer, sheep ही बनते है । यहाँ बहुवचन का अर्थ देने वाला पद शून्य (o) पद है ।

हिंदी मे शून्य पद के उदाहरण स्पष्ट रूप से नहीं मिलते । पाठकों को 'शून्य पद' की धारणा स्पष्ट हो इसके लिए यहाँ कुछ उदाहरण दिए जा रहे है ,—

ऊँट, कबूतर, कागज, आदि के बहुवचन (परसर्ग रहित) में 'शून्य पद' देखा जा सकता है ।

1 ऊँट आ रहा है ।
2 ऊँट आ रहे है ।

दूसरे वाक्य मे 'ऊँट' में बहुवचन का अर्थ 'शून्य पद' द्वारा प्रकट हो रहा है। परतु 'ऊँट शब्द' के परसर्ग सहित रूप यह शून्य पद नही है । जैसे —

ऊँट को देखो ।
ऊँटों को देखो ।

यहाँ 'ऊँटो' मे ओ प्रत्यय बहुवचन का अर्थ दे रहा है जो कि एक बद्ध रूप है।

(2) **निरर्थक पद** (Empty morph)

यह शून्य पद के विपरीत होता है। इस पद का रूप तो होता है परतु कोई अर्थ नही होता। अत अर्थ रहित रूप युक्त पद निरर्थक पद (Empty morph) कहलाता है। इसके नाम से भी स्पष्ट है कि जो पद अर्थ न देता हो या अर्थ के स्तर पर वे रिक्त रह जाते है। इसलिए इसे 'Empty' (रिक्त / खाली) कहा गया है।

Child का बहुवचन Children
Ox का बहुवचन Oxen

दोनों को ध्यानपूर्वक देखने से स्पष्ट होगा कि '-en' बहुवचन के लिए है तो Child-r-en में '-r-' की क्या भूमिका है ? यह अर्थ रहित / अनावश्यक / रिक्त पद ही माना जाएगा। इस प्रकार Children मे -'r-' पद, निरर्थक पद (Empty morph) कहलाता है।

(3) **संपृक्त रूप** (Portmanteau)

इसे 'अनेक पदार्थक पद' भी कहा गया है। जब अनेक पदग्रामो का प्रतिनिधित्व एक ही पद करता है तो इस प्रकार का पद अनेक पदार्थक पद (Portmanteau morph) कहलाता है।

Walk का भूतकाल walk+ed=walked परतु Take का भूतकाल take+ed=taked न होकर took होता है। यहाँ 'took' मे take+ed दोनो का अर्थ है। इस प्रकार 'took', 'take' और '-ed' (भूतकाल का अर्थ देने वाला प्रत्यय) का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

ब्लूमफील्ड 'ए' के स्थान पर 'उ' को प्रतिस्थापित परिवर्त (Substitution alternant) कहते हैं, हाकेट इसे 'सपृक्त रूप' कहते है।

इसी प्रकार—

mice = mouse + बहुवचन
radii = radius + बहुवचन
teeth = tooth + बहुवचन
saw = see + भूतकाल
better = good + more
गया = जाना + भूतकाल
दरअसल = वास्तव + में

(4) **समाविष्ट पद** (Included Morphs)

ऐसा पद जो किसी अन्य पद मे समाविष्ट होकर पदग्राम बन जाता है उसे समाविष्ट पद कहते हैं। जोक (Zoque) भाषा मे जब मूल रूप -hay- के साथ-'pa'

का संयोग होता है तब बनने वाला रूप 'hapya' होता है। यहाँ 'pa' समाविष्ट पद होगा।

इनके अलावा बद्धरूप (bound morph) मुक्त रूप (free morph) आदि हैं जिनका वर्णन यहाँ नही किया जा रहा है।

6. विभक्ति और परसर्ग

विभक्ति प्रातिपदिक (शब्द / धातु) के साथ लगाकर नए शब्द / व्याकरणिक सबंधो को स्पष्ट करती है। ये एक प्रकार के प्रत्यय ही है जिनका वर्णन 'रूपसाधक प्रत्यय और व्युत्पादक प्रत्यय' शीर्षक के अन्तर्गत किया गया है।

परसर्ग उन अशो को कहते है, जो स्वय मे कोई अर्थ नही रखने बल्कि संज्ञा या सर्वनाम आदि के साथ प्रयुक्त होकर वाक्य में कारक सबधो को स्पष्ट करते है, उदाहरणार्थ—

'लोथा ने सियाली को पढाया'

वाक्य मे 'ने', 'को' परसर्ग हैं, जो क्रमशः लोथा (कर्ता) और सियाली (कर्म) को स्पष्ट कर रहे हे।

7 शब्द वर्ग और व्याकरणिक कोटियाँ

शब्द वर्ग और व्याकरणिक कोटि के भेद को जानना आवश्यक है। प्रायः छात्रों के लिए इन दोनो मे अतर कर पाना कठिन होता है। कुछ छात्र दोनों को एक ही समझते हैं।

शब्द—जो 'रूप' स्वतंत्र होकर वाक्य में प्रयुक्त होता है उसे शब्द कहते है। ('रूप' ≠ रूपिम, रूप Morpheme, Morph)

वाक्य या पदबंध मे प्रयुक्त वह स्वतत्र इकाई जो अन्य इकाइयो से अलग होकर पहचानी जा सके 'शब्द' है।

शब्द वर्ग—शब्दों का समूह है। प्रत्येक भाषा के शब्दो को अनेक वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है। कुछ लोग मात्र विकारी और अविकारी दो वर्ग मानते है। कुछ लोग विस्तृत वर्ग—आठ मानते है।

सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया—विकारी।

क्रिया विशेषण, समुच्चयबोधक, सयोजक और विस्मयादि बोधक—अविकारी।

विकारी शब्दो में परिवर्तन होता है।

संज्ञा—लड़का से लड़के, लड़कों

विशेषण—मोटा से मोटी, मोटों, मोटे

लेकिन अविकारी शब्दो मे परिवर्तन नही होता।

क्रि० वि०—'धीरे' से 'धीरे' ही बनेगा उसके धीरी, धीरो, धीरो नही बन सकने।

व्याकरणिक कोटियाँ

मोहन के घर मे चोर है ।

उक्त वाक्य में हम देखते हैं कि 'मोहन', 'घर' और 'चोर' एक प्रकार के अश है और 'के' तथा 'मे' दूसरे प्रकार के। मोहन, घर और चोर 'अशो' से अर्थ प्राप्त होता है जबकि 'के' और 'मे' अशो से सबधो का बोध होता है।

इन दो प्रकार ने अशो को क्रमश· शब्दकोशीय अंश व व्याकरणिक अश (अर्थ तत्व व सबध तत्व) कह सकते है।

व्याकरणिक अंशों से वाक्यगत शब्दों या पदबधो के अन्वय का बोध होता है। वाक्य मे व्याकरणिक अश द्वारा अन्वय की या सबध की अनेक विशेषताएँ ज्ञात होती है। जैसे—बच्चे का खिलौना—बच्चे के खिलौने, मे 'खिलौना' व 'खिलौने' क्रमश एकवचन और बहुवचन है। ये अन्वय की विशेषता बताते है। व्याकरणिक अश द्वारा व्यक्त होने वाले इस प्रकार के अर्थ को ही व्याकरणिक अर्थ कहा जाता है। इसी प्रकार लिग, काल, पुरुष आदि-आदि व्याकरणिक अर्थ देने वाले अश है। इन्हे ही व्याकरणिक कोटियाँ कहा गया है। प्रत्येक भाषा मे ये कोटियाँ अलग-अलग होती है क्योकि प्रत्येक भाषा अलग-अलग सस्कृति से सबधित होती है। व्याकरणिक कोटियाँ इसी सस्कृति की भिन्नता के कारण अलग-अलग होती हैं। उदाहरण के लिए नागालैड की 'आओ' भाषा और हिंदी मे 'पुरुष कोटि' मे उत्तम पुरुष बहुवचन मे बहुत अतर है। आओ भाषा मे—

'हम' का विस्तार कई प्रकार से दृष्टिगोचर होता है जैसे—

वक्ता + उपस्थित एक से अधिक अन्य व्यक्ति = असेनोक ⎫ हिंदी मे इन सभी
वक्ता + उपस्थित एक अन्य व्यक्ति = आना ⎬ स्थितियो मे 'हम'
वक्ता + उपस्थित श्रोता से भिन्न अन्य व्यक्ति = ओनोक ⎪ का प्रयोग होता
वक्ता + उपस्थित श्रोता से भिन्न एक व्यक्ति = केना ⎭ है।

हिंदी मे व्याकरणिक कोटियाँ—लिग, वचन, पुरुष, काल, वाच्य, अर्थ और कारक मानी गई है।

यहाँ हमारा उद्देश्य मात्र शब्द वर्ग और व्याकरणिक कोटियो के अतर को बताना है। अत· स्पष्ट है कि सज्ञा, सर्वनाम, क्रिया…… शब्द वर्ग और लिग, वचन, पुरुष· …… आदि व्याकरणिक कोटियाँ हैं।

8 संयुक्त काल और सयुक्त क्रिया

हिंदी मे वर्तमान निश्चयार्थ का बोध क्रिया की सयुक्तता [वर्तमान कृदती + सहायक वर्तमान तिडती] से होता है। इसे सयुक्त काल कहते हैं।

मैं आता हूँ।	तू आता है.	वह आता है।
हम आते हैं।	तुम आते हो.	वे आते हैं।

मैं आती हूँ ।	तू आती है,	वह आती है ।
हम आती हैं ।	तुम आती हो,	वे आती हैं ।

*उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि वर्तमान कृदती कर्ता के लिंग और वचन से प्रभावित है पुरुष से नहीं, जबकि सहायक क्रिया रूप तिङती होने के कारण पुरुष-वचन से प्रभावित है लिंग से नहीं।

एक से अधिक क्रियाओं के योग से संयुक्त क्रिया की रचना होती है। वाक्य में अर्थ-बोध को दृष्टि में रखकर ही संयुक्त क्रियाओं की सिद्धि मानी जाती है। जब परवर्ती गौण क्रिया / क्रियाएँ अपना अर्थ विलीन कर मुख्य क्रिया पद के अर्थ में नवीनता उत्पन्न करें, वे संयुक्त क्रियाएँ कहलाती है। अर्थ की दृष्टि में संयुक्त क्रिया एक इकाई होती है।

संयुक्त क्रिया रचना में सम्मिलित क्रियाओं में से प्रथम क्रिया सामान्यतया मुख्य होती है और अन्य गौण। मुख्य क्रिया या तो धातु रूप में मिलती है या कृदती रूप (वर्तमान, भूत या कृदती संज्ञा) में। वर्तमान और भूत कृदती रूपों को छोड़कर अन्य मुख्य क्रिया रूप सब वाच्य, अर्थ, काल आदि में यथावत् रहते है, वाच्य, अर्थ, काल, लिंग, पुरुष, वचन आदि का प्रभाव गौण क्रियाओं पर पड़ता है। वह सब खा गया / गई लेकिन वर्तमान और भूत कृदती रूप जब मुख्य क्रिया स्थान पर होते है तो वे रचनात्मक प्रवृत्तियों से प्रभावित देखे जाते है।

वह पढ़ता रहता है / पढ़ती रहती है।

आँखे फटी जाती है / सिर फटा जाता है।

9 **समापिका और असमापिका क्रिया रूप**

क्रिया स्थान पर सुलभ क्रिया रूप समापिका प्रकार के है और अन्यत्र प्राप्त होने वाले असमापिका प्रकार के है। समापिका प्रकार के क्रिया रूप दो कोटि के है—

तिङती—जिनकी रूप रचना कर्ता के पुरुष, वचन के अनुसार होती है लिंग का प्रभाव नहीं होता।

कृदती—जिनकी रूप रचना कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार होती है पुरुष का प्रभाव नहीं होता।

असमापिका प्रकार के अंतर्गत कृदती संज्ञा —चलना, दौड़ना
कृदती विशेषण —चलता/रहता (पानी)
पूर्वकालिक कृदती—चलकर दौड़कर
तत्कालिक कृदती —चलते ही, दौड़ते ही

आदि रूप आते है जिनका प्रयोग क्रिया स्थान पर न होकर वाक्य में अन्यत्र होता है।

10 संयुक्त (Compound) यौगिक (Conjuct), और मिश्र (Complex) क्रियाएँ

संयुक्त क्रियाएँ

दो क्रियाओं के योग से बनती हैं, जिसमे पहली क्रिया धातु रूप (चला जाना—अपवाद) मे और दूसरी क्रिया वृत्ति, पक्ष और कालरूप-प्रत्यय लिए होती है। प्रथम क्रिया (धातु रूप) कोशीय अर्थ लिए हुए रहती है इसलिए इसे कोशीय क्रिया भी कहते है। दूसरी क्रिया कोशीय अर्थ लिए नही रहती यह केवल पहली क्रिया के अर्थ को उभारती है या अधिक स्पष्ट करती है इसे रंजक क्रिया (Intensifier / Explicater / vecter verb) कहते है जैसे, 'फेंक देना', बैठ जाना, आदि। इन उदाहरणो मे देना', 'जाना' का अर्थ निहित नही है (जबकि अन्यत्र इनका स्वतन्त्र अर्थ है)। यहाँ संयुक्त क्रियाओ मे रंजक की तरह प्रयुक्त होने के कारण अपना अर्थ छोड देती है। हिंदी मे 'उठना', 'बैठना', 'लेना', 'देना', 'आना', 'जाना', 'डालना', 'निकालना', 'पढना', 'मारना' आदि रंजक क्रियाएँ मानते हैं जो मुख्य कोशीय अर्थ वाली क्रियाओ के साथ प्रस्तुत होती है। [यह आवश्यक नही है कि उक्त सभी रंजक क्रियाएँ सभी मुख्य क्रियाओं के साथ प्रयुक्त हो, जैसे 'खाना' के साथ रंजक क्रिया 'डालना', 'खा डालना' संभव है लेकिन 'चल डालना' संभव नही] संयुक्त क्रियाएँ एकध्रुवीय (monopolar) कहलाती हैं क्योंकि मुख्य क्रिया कोशीय क्रिया होती है दूसरी (रंजक क्रिया) कोशीय नही होती।

यौगिक क्रियाएँ

दो क्रियाओ के योग से बनती है, जिनमे पहली क्रिया धातु के रूप में और दूसरी क्रिया वृत्ति, पक्ष और काल रूप—प्रत्यय लिए होती है। दोनो क्रियाएँ कोशीय अर्थ लिए हुए रहती है, जैसे :—'ले जाना', 'लिख भेजना', 'उखाड फेंकना', 'कर दिखाना' आदि। यौगिक क्रियाओ मे दोनो (मुख्य और सहायक) क्रियाओं मे कोशीय अर्थ होते है इसलिए इन्हें द्विध्रुवीय (Bipolar) कहते है। संयुक्त क्रिया में रंजक क्रिया की तरह मुख्य क्रिया को उभारने का काम, यौगिक क्रियाओ में सहायक क्रिया (दूसरी क्रिया) नहीं करती। इन क्रियाओ के दोनों घटकों के बीच 'कर' निहित रहता है जैसे :—ले आना=लेकर आना, ले डूबना=लेकर डूबना, खीच निकालना =खींचकर निकालना आदि।

मिश्र क्रियाएँ

डॉ० सूरज भान सिंह (1985 · 49) मिश्र क्रियाओ का एक अलग वर्ग मानते हैं जबकि डॉ० कैलाश चन्द्र अग्रवाल (1970 · 81) इसे यौगिक धातुओं के अंतर्गत नामिक क्रियाओ के वर्ग मे रखने के पक्ष मे है। वे यौगिक धातुओ के प्रेरणार्थक व नामिक दो वर्गो को मानते है।

मिश्र क्रियाएँ संज्ञा, विशेषण या क्रियांगी शब्दो (मिश्र क्रियाओ के अंतर्गत

घटक, जिन्हें संज्ञा या विशेषण के रूप में अलग करना सम्भव न हो) के साथ 'कर', 'हो' आदि क्रियाकरों (Verbalizers) को जोड़कर बनती है; जैसे 'प्रतीक्षा करना', 'स्वीकार करना', 'मालूम होना' आदि। [प्रतीक्षा, स्वीकार, मालूम का प्रयोग क्रियाकर के बिना सम्भव नहीं] मिश्र क्रिया के **प्रथम घटक** को **क्रिया मूल** (Pre-verb), दूसरे घटक को **क्रियाकर** (verbalizer) कहते हैं। इसका कार्य संयुक्त क्रिया के दूसरे घटक (रंजक क्रिया) की तरह न तो मुख्य क्रिया के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करना है और न ही यौगिक क्रिया के दूसरे घटक (कोशीय क्रिया) की तरह अपने अर्थ को भी बताना होता है बल्कि इसका कार्य **क्रिया मूल** (Pre-verb) को क्रिया रूप प्रदान करना होता है। मिश्र क्रियाएँ **क्रियामूल** और **क्रियाकर** से मिलकर एक इकाई का निर्माण करती हैं।

11. **अक्षर और आक्षरिक रचना** (Syllable and Syllabic Structure)

भाषा विज्ञान के अध्ययन से पूर्व अक्षर और वर्ण के अलग-अलग होने की जानकारी प्रायः कम विद्यार्थियों को ही होती है। प्रारंभिक कक्षाओं में भ्रमवश वर्ण और अक्षर पर्यायवाची शब्दों के रूप में समझे जाते हैं जो कि त्रुटिपूर्ण है। वस्तुतः वर्ण (Letter) और अक्षर (Syllable) से भिन्न है।

उच्चरित ध्वनि को लिपि द्वारा आलेखन में प्रस्तुत किया जाता है। तब वर्ण होता है। यथा—क, ख, घ, ङ आदि। (हिंदी की प्रकृति के कारण ये अक्षर भी हैं क=क्+अ) अतः वर्ण, स्वर, 'अ', 'इ'……या व्यंजन 'क्', 'ख्',……या व्यंजन +स्वर 'क्+अ', 'ख्+अ' (क, ख) हो सकता है, परंतु अक्षर में एक स्वर या एक या अधिक व्यंजन के साथ कम से कम एक स्वर का होना अति आवश्यक है। इस प्रकार जहाँ वर्ण के लिए एक स्वर का होना अति आवश्यक नहीं है (क् = वर्ण) वहाँ अक्षर में एक स्वर का होना अति आवश्यक होता है।

इस प्रकार वर्ण और अक्षर का वैज्ञानिक अंतर स्पष्ट हो गया। अतः इस भ्रम में, कि वर्ण और अक्षर पर्याय है, नहीं रहना चाहिए।

एक ही नाड़ी स्पंदन (Chest pulse) में उच्चरित ध्वनि या ध्वनि समूह को अक्षर कहते हैं।

"All that is spoken by one chest pulse, Constitute a Single Syllable."

ऊपर हमने बताया कि अक्षर के लिए एक स्वर का होना जरूरी है। अक्षर मात्र स्वर से, या स्वर और व्यजन से या व्यजन और स्वर से बन सकते है। स्वर के पूर्व एक, दो····व्यजन स्वर के बाद एक, दो····व्यंजन या स्वर के पूर्व और बाद एक, दो·········व्यंजन भी अक्षर का निर्माण कर सकते हैं।

स्वर व्यजनों की अपेक्षा अधिक मुखर (Sonorous) होते हैं। [मुखर ध्वनियाँ वे ध्वनियाँ होती है जिनका उच्चारण अधिक देर तक किया जा सकता है।] यदि हम 'अ' और 'क' का उच्चारण करे तो पाएँगे कि 'अ' का उच्चारण क' के उच्चारण की अपेक्षा अधिक देर तक किया जा सकता है। अतः स्वरो को व्यजनो की अपेक्षा मुखर माना गया है।

मुखर ध्वनियाँ (स्वर) शिखर (Peak) का निर्माण करती है। एक ही शब्द मे जितने शिखर (मुखर ध्वनियाँ अर्थात् स्वर) होगे उतने ही अक्षर (Syllable) बनेगे। उदाहरणार्थ '—

शब्द 'काला' मे दो अक्षर है। इसका विवेचन इस प्रकार हो सकता है '—
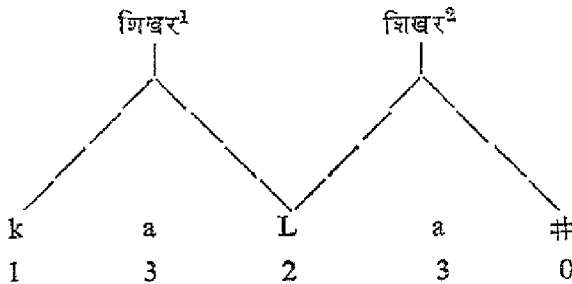
उक्त शब्द के वर्णों मे k की मुखरता 1, L की मुखरता 2 (स्थान भेद से मुखरता मे अतर है), स्वर a की मुखरता 3 (स्वर सबसे अधिक मुखर होते है) तथा अन्त मे # की मुखरता शून्य (शब्द के अत मे कुछ न होने के कारण शून्य मान लेते है) तो

अक्षर¹ = दो कम मुखर ध्वनियो (k और L) के बीच एक अधिक मुखर ध्वनि (a) मिलकर एक शिखर बनाती है जिससे एक अक्षर बनता है। इसलिए 'kal' एक अक्षर हुआ।

अक्षर² = दो कम मुखर ध्वनियो (L और #) के बीच एक अधिक मुखर ध्वनि (a) मिलकर एक शिखर बनाती है जिससे एक और अक्षर बनता है। इसलिए La एक अक्षर हुआ। इस प्रकार 'kala शब्द मे दो अक्षर हुए।

आक्षरिक रचना (Syllabic Structure)

किसी शब्द मे एक या एक से अधिक अक्षर हो सकते हैं। एक अक्षर के लिए एक स्वर (जो शिखर निर्माण करता है) आवश्यक होता है। स्वर के साथ-साथ व्यंजन भी हो सकते है। व्यजन स्वर के साथ कई तरह से जुडे हो सकते हैं। जैसे—

kal	= CVC	= काल्
krodh	= CCVC	= क्रोध
ja	= CV	= जा
ag	= VC	= आग
a	= V	= आ

इस प्रकार हमने देखा कि प्रत्येक शब्द एक अक्षर का शब्द है क्योंकि प्रत्येक शब्द / अक्षर मे एक स्वर है। व्यजनो की व्यवस्था के कारण प्रत्येक अक्षर की रचना में भिन्नता है। शब्द के अक्षर / अक्षरो की रचना को (स्वर और व्यजनो की व्यवस्था की भिन्नता के कारण) आक्षरिक रचना कहते है।

C = Consonant = व्यजन
V = Vowel = स्वर

4

1 हिंदी के कुछ अस्पष्ट / द्विअर्थक वाक्य

भाषा की प्रकृति के अनुसार प्रायः हर भाषाओं में कुछ ऐसे वाक्य होते हैं जिनके दो या कभी-कभी तीन अर्थ निकलते है। जिनके कारण वे स्पष्ट अर्थ नही देते। इसलिए इन्हे अस्पष्ट वाक्य (ambiguous sentences) भी कहते है। हिंदी-भाषी तो अभ्यास व संदर्भ से उनका उचित अर्थ निकाल लेते है परंतु अहिंदी भाषियो के लिए यह कठिन होता है। अहिंदी भाषियों को जो हिंदी शिक्षण कार्य मे लगे हुए हैं इनकी जानकारी हेतु यहाँ कुछ ऐसे वाक्य और उनके अपेक्षित विभिन्न अर्थ दिए जा रहे है। भाषा व्यवहार और अर्थ संप्रेषणीयता हेतु ये सहायक सिद्ध होंगे।

यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता हूँ कि नीचे दिए वाक्य सहज प्रयोग में आने वाले वाक्य हैं और पत्र / पत्रिकाओं में उनका प्रयोग भी देखा जा सकता है। द्विअर्थकता / अस्पष्टता दूर करना कुछ वाक्यो के संबंध में ही संभव है जैसे—

मेरा भाई डॉ० दास का इलाज कर रहा है।

इस वाक्य के दो अर्थ हैं—

(i) मेरा भाई बीमार है और डॉ० दास उनका इलाज कर रहा है।

(ii) डॉ० दास बीमार है उनका इलाज मेरा भाई कर रहा है।

मुख्य द्विअर्थक / अस्पष्ट वाक्य मे अस्पष्टता दूर करने के लिए उक्त वाक्य को इस प्रकार कहने से अस्पष्टता समाप्ति की संभावना बन सकती है—

मेरा भाई डा० दास से इलाज करवा रहा है।

परंतु अन्यत्र ऐसा करना संभव नहीं है, जैसे—

1. सिपाही ने दौड़ते हुए चोर को पकड़ लिया।
   (अ) सिपाही दौड़ रहा था और चोर खड़ा था / जा रहा था या
   (ब) चोर दौड़ रहा था और सिपाही ने उसे पकड़ लिया।
2. माँ ने पढ़ते हुए मुझे देखा।
   (अ) माँ पढ़ रही थी तब उन्होंने मुझे देखा या
   (ब) मैं पढ़ रहा था तब माँ ने देखा।

3. बच्चे को आँखे खोलकर दवा डालना ।

(अ) बच्चे को सावधानीपूर्वक दवा डालना या

(ब) बच्चे की आँखों मे दवा डालना ।

4. पुलिस द्वारा भगाई गई लड़की का उद्धार ।

(अ) लड़की को भगाने का काम पुलिस ने किया और उसे छुड़ाया किसी अन्य व्यक्ति ने या

(ब) लड़की को भगाने का काम किसी अन्य व्यक्ति ने किया और उसे छुडाया पुलिस ने ।

5. मीरा बहुत अच्छा लिखती है ।

(अ) मीरा का लेखन (band writing) अच्छा है या

(ब) मीरा को स्वय द्वारा लिखे गए विषयों की जानकारी अच्छी है।

6 राम के पास एक कुत्ता है ।

(अ) राम के नजदीक एक कुत्ता है या
राम के स्वामित्व मे एक कुत्ता है ।

7. उसने मुझे अपने मित्र को दिखाया ।

(अ) उसने कहा कि वह मेरा मित्र है उसको देखो या

(ब) अपने मित्र से कहा कि इसे (मुझे) देखो ।

8. राम ने सब लोगो के बराबर काम किया ।

(अ) हर व्यक्ति के बराबर राम द्वारा किया गया काम या

(ब) सब लोगों द्वारा किए गए कुल काम के बराबर राम द्वारा किया गया काम ।

9. मोहन को मुझे दस रुपए देने हैं ।

(अ) मोहन मुझे दस रुपए देगा या
मैं मोहन को दस रुपए दूंगा ।

10 सबसे पहले जैमिनी सर्कस गोरिल्ला लाया ।

(अ) गोरिल्ला को सबसे पहले लाने वाला था जैमिनी सर्कस या

(ब) जैमिनी सर्कस को सबसे पहले लाने वाला था गोरिल्ला ।

11. मुझे तुम्हारा खाना बनाना पसंद नही है ।

(अ) तुम खाना बनाओ यह मैं नही चाहता या

(ब) तुम जो खाना बनाती हो वह अच्छा नहीं होता ।

12. कच्चे आम और अमरूद ।

    (अ) आम और अमरूद दोनों ही कच्चे हैं या
    (ब) आम कच्चे है तथा अमरूद पके हुए हैं ।

13. डॉ० सहाय जी कल से ज्यादा जँच रहे हैं ।

    (अ) कल की अपेक्षा आज जँच रहे है या
    (ब) उनका कल से ही जँचना आरभ हुआ है । (पहले वे सादे रहा करते थे ।)

14 कल से अधिक गर्मी है ।

    (अ) कल की अपेक्षा आज अधिक गर्मी है या
    (ब) कल से ही गर्मी का अधिक होना आरभ हुआ है ।

15 राम की पुस्तक ।

    (अ) राम द्वारा लिखी हुई पुस्तक या
    (ब) राम के स्वामित्व वाली पुस्तक या
    (राम नामक किसी चरित्र पर लिखी पुस्तक)

16. जामलियाना की लोहे की दुकान ।

    (अ) जामलियाना की वह दुकान जिसमे लोहे का सामान बिकता है या
    (ब) जामलियाना की वह दुकान जो लोहे की बनी हुई है ।

17. राम की तस्वीर ।

    (अ) राम द्वारा बनाई गई तस्वीर या
    (ब) राम के स्वरूप की तस्वीर या
    (स) राम के स्वामित्व वाली तस्वीर ।

2 शुद्ध/अशुद्ध हिंदी वाक्य सांचे

अहिंदी भाषी अपने ज्ञान के अनुसार हिंदी भाषा के प्रयोग मे भूले करते हैं ये भूले लिंग, वचन, शब्द प्रयोग, तथा व्याकरण सबधी, होती हैं । कभी-कभी अर्थ से संबंधित (प्रयोग) तथा वर्तनी की भूले भी हो जाती है। विस्तार मे न जाकर हम कुछ संभव भूले और सुधार यहाँ दे रहे है जो भाषा परिमार्जन मे सहायक होंगे ।

1.	हमने आपसे कई वायदे करे ।	हमने आपसे कई वायदे किए ।
2.	आप केवल कार्य करिए ।	आप केवल लेखन कार्य कीजिए ।
3.	राम ने पाँच आम तोड़ा ।	राम ने पाँच आम तोड़े ।

4.	आज मैंने ऑफिस नही जाना।	आज मुझे आफिस नही जाना।
5.	मैंने खाना खाना है।	मुझे खाना खाना है।
6.	मेरी घर दूर है।	मेरा घर दूर है।
7.	वह सिगरेट खाता है।	वह सिगरेट पीता है।
8.	मैं ऊपर में था।	मैं ऊपर था।
9.	मेरा पेट दर्द है।	मेरे पेट में दर्द है।
10.	वह पीछे में है।	वह पीछे है।
11.	निदेशकजी को अभी-अभी ऊपर उठते देखा।	निदेशकजी को अभी-अभी ऊपर जाते देखा।
12.	हमने शाम को बहुत चला।	हम शाम को बहुत चले।
13.	तुम रात को कहानी सुनाए।	तुमने रात को कहानी सुनाई।
14	हम खुशी है।	हमें खुशी है।
15.	हम पिकनिक जाएगा।	हम पिकनिक जाएँगे।
16	बिल्ली चूहा से कुत्ता हो गया।	बिल्ली चूहे से कुत्ता हो गई।
17.	वह लडकी से लड़का हो गया।	वह लडकी से लडका हो गई।
18.	मौसम बहुत अच्छी है।	मौसम बहुत अच्छा है।
19.	तुमने तुम्हारा काम कर लिया।	तुमने अपना काम कर लिया।
20	आज मेरे को जाना है।	आज मुझे जाना है।
21.	पानी की धारा लडके को बहा ले गया।	पानी की धारा लडके को बहा ले गई।
22	तुम तेरा / तुम्हारा पाठ पढते हो।	तुम अपना पाठ पढते हो।
23.	यह पुस्तके अच्छी हैं।	ये पुस्तकें अच्छी हैं।
24	ये पुस्तक अच्छी है।	यह पुस्तक अच्छी है।
25.	हाथी गन्ना खा रही है।	हाथी गन्ना खा रहा है।
26.	सीता पिक्चर देख रहा है।	सीता पिक्चर देख रही है।
27.	लडका ने खाना खाया।	लडके ने खाना खाया।
28.	गुरु लोग आ रहे हैं।	गुरुजन आ रहे हैं।
29	अध्यापक लोग पढ़ा रहे हैं।	अध्यापकगण पढा रहे हैं।
30.	अनिल से कहो कि आज न जाओ।	अनिल से कहो कि आज न जाए।

31. हम चाहते हैं कि बरात का स्वागत 'पान पराग' से कीजिए।

		हम चाहते हैं कि बरात का स्वागत पान पराग से करें ।
32.	मैं यहाँ आने नही सकता ।	मैं यहाँ आ नही सकता ।
33	इस कायलिय मे पांच क्लर्कें है ।	इस कार्यालय में पाँच क्लर्क है ।
34.	कर्मठो के लिए कुछ भी सभव नही ।	कर्मठो के लिए कुछ भी असभव नहीं ।
35	वह नही पढता है ।	वह नही पढता ।
36.	मैथिलीशरण गुप्त बड़ा कवि था ।	मैथिलीशरण गुप्त बडे कवि थे ।
37	कृपया मेरी अर्जी स्वीकार करने की कृपा करे ।	कृपया मेरी अर्जी स्वीकार करने का कष्ट करे या कृपया मेरी अर्जी स्वीकार करे ।
38.	सीमा कही रही ।	सीमा ने कहा था ।
39.	सबो को मुझसे दुश्मनी है ।	सभी को मुझसे दुश्मनी है ।
40.	मेरे भाई कल को गाएँगे ।	मेरे भाई कल गाएँगे ।
41.	उनके लेख मे कइयो / अनेको भूले थी ।	उनके लेख मे कई / अनेक भूले थी ।
42.	कृपया करके मेरा काम कर दीजिए ।	कृपा करके मेरा काम कर दीजिए ।
43.	यह खेल अच्छी है ।	यह खेल अच्छा है ।
44.	यह गाडी दस बजे खुलेगी ।	यह गाडी दस बजे छूटेगी ।
45.	यह जानकर मै विस्मय हुआ ।	यह जानकर मुझे विस्मय हुआ ।

3. अनेक शब्दों का एक शब्द

भाषा पर अधिकार व गति के लिए यह आवश्यक होता है कि उसे प्रभावी बना कर बोला जाय । इसके लिए कभी-कभी एक शब्द मे सपूर्ण विचार रखने की आवश्यकता पड़ती है । प्राय. सभी भाषाओ मे उसकी व्यवस्था होती है ! हिंदी के कुछ 'शब्द-समूहों' के एक अर्थ वाले 'शब्द' यहाँ दिए जा रहे है । इसके अभ्यास व प्रयोग से भाषा पर दक्षता प्राप्त करने का एक पक्ष पूर्ण हो सकेगा ।

1.	ईश्वर मे विश्वास रखने वाला ।	आस्तिक
2.	ईश्वर में विश्वास न रखने वाला ।	नास्तिक
3.	जिसका वर्णन किया जा सके ।	वर्णनीय
4.	जिसका वर्णन न किया जा सके ।	अवर्णनीय

5. जिसका चरित्र अच्छा हो। — चरित्रवान
6. जिसका चरित्र अच्छा न हो। — चरित्रहीन
7. जिसका आचरण अच्छा हो। — सदाचारी
8. जिसका आचरण अच्छा न हो। — दुराचारी
9. जिस पर विश्वास किया जा सके। — विश्वसनीय
10. जिस पर विश्वास न किया सके। — अविश्वसनीय
11. जो पाठ / अंश पढ़ा हुआ हो। — पठित
12. जो पाठ / अंश पढ़ा हुआ न हो। — अपठित
13. दूसरो पर उपकार करने वाला। — परोपकारी
14. दूसरो का उपकार मानने वाला। — कृतज्ञ
15. दूसरो का उपकार न मानने वाला। — कृतघ्न/अकृतज्ञ
16. एक दिन मे होने वाला। — दैनिक
17. एक सप्ताह मे होने वाला। — साप्ताहिक
18. एक मास मे होने वाला। — मासिक
19. एक वर्ष मे होने वाला। — वार्षिक
20. पन्द्रह दिन मे एक बार होने वाला। — पाक्षिक
21. तीन माह में एक बार होने वाला। — त्रैमासिक
22. छ माह मे एक बार होने वाला। — अर्द्ध-वार्षिक
23 जिसकी उपमा किसी से न दी जा सके। — अनुपम
24 जो सब कुछ जानता हो। — सर्वज्ञ
25 जिसके समकक्ष कोई दूसरा न हो। — अद्वितीय
26. जो वास्तविक रूप मे दिखाई दे। — प्रत्यक्ष
27. जो वास्तविक रूप मे दिखाई न दे। — अप्रत्यक्ष
28. इस लोक / जगत मे संबंधित। — लौकिक
29. इस लोक / जगत से बाहर से संबंधित। — अलौकिक
30. पश्चिम मे सबंधित। — पाश्चात्य
31. दूसरो से ईर्ष्या करने वाला। — ईर्ष्यालु
32. वेतन के विना सेवा करने वाला। — अवैतनिक
33. जिसकी गणना की जा सके। — गणनीय
34 जिसकी गणना न की जा सके। — अगणनीय
35. जो सहन करने की शक्ति रखता हो। — सहनशील/सहिष्णु
36. जिसे सहन न किया जा सके। — असहनीय
37. जिनका वर्णन करने के लिए शब्द न हों। — अनिर्वचनीय
38 स्थल / जल / वन मे रहने वाला। — स्थलचर / जलचर / वनचर

39. माँस खाने वाला । माँसाहारी
40. माँस न खाने वाला / शाक-सब्जी खाने वाला । शाकाहारी
41. केवल फल खाने वाला । फलाहारी
42. जिसकी कीमत न आंकी जाय । अमूल्य
43 जिसकी कीमत अधिक हो । बहुमूल्य
44. जो दूसरों की शिकायत / चुगली करता हो । चुगलखोर
45. जिसकी आकृति हो । साकार
46. जिसकी आकृति न हो । निराकार
47. उच्च कुल से संबंधित । कुलीन
48. जो परिश्रम से काम करता हो । परिश्रमी
49. जो बहुत काम करता हो । कर्मठ
50. जो काम न करता हो / जी चुराता हो । कामचोर
51. जानने की इच्छा रखने वाला । जिज्ञासु
52. कठिनाई से उपलब्ध वस्तु । दुर्लभ
53. दूसरों के मन की बात जानने वाला । अन्तर्यामी
54 जो परीक्षा मे सफल हुआ हो । उत्तीर्ण
55. जो परीक्षा मे असफल हुआ हो । अनुत्तीर्ण
56 शिव की उपासना करने / मानने वाला । शैव
57. विष्णु की उपासना करने / मानने वाला । वैष्णव
58. जिस औरत का पति मर गया हो । विधवा
59. पति मरने के बाद बिताया हुआ जीवन । वैधव्य
60. जिस पति की पत्नी मर गई हो । विधुर
61. जिन बच्चों के माँ-बाप मर गए हो । अनाथ
62. अनाथो के रहने की जगह । अनाथालय
63. जिसकी शक्ल-सूरत अच्छी न हो । कुरूप
64. सदैव / हर स्थिति में सत्य बोलने वाला । सत्यवादी
65. जिस स्थान पर पहुँचने मे कठिनाई हो । दुर्गम
66. जो किसी का भी पक्ष न ले । निष्पक्ष
67. दूर की सोचने वाला । दूरदर्शी
68. जिसमे रस, बल, लज्जा / जिसको भय न हो । नीरस/निर्बल/निर्लज/निर्भय
69. नई खोज करने वाला । आविष्कारक

70. जिस भूमि मे अच्छी उपज हो। — उपजाऊ भूमि
71. जिस भूमि मे उपज न हो। — बजर (भूमि) / ऊसर
72. जो पढा-लिखा हो। — शिक्षित
73. जो पढा-लिखा न हो। — अनपढ / अशिक्षित
74. जो कभी न मरे। — अमर
75. जिसमे धैर्य न हो। — अधीर
76. जिसका अत न हो। — अनत
77. जिसे देखा न जा सके। — अदृश्य
78. जो काम सरलता से न हो। — दुष्कर
79. किसी विषय विशेष मे विशेष ज्ञान रखने वाला। — विशेषज्ञ
80. जो पूजा / वदना करने योग्य हो। — पूजनीय / वदनीय
81. दस मुखो वाला। — दशानन
82. जो ग्रहण किया जा सके। — ग्राह्य
83. जहाँ कोई न हो। — निर्जन
84. जिसमे जान न हो। — निर्जीव

4. विवृत्ति/संहिता/सक्रमण (juncture) के कारण अर्थ भेद

नफीस	न # फीस
दोना	दो # ना
नदी	न # दी
पीलिया	पी # लिया
पीली	पी # ली
तुम्हारे	तुम # हारे
खाली	खा # ली
सिरका	सिर # का
मनका	मन # का }*
बरछी ने	बर # छीने}
बतासा ले	बता # साले
आजाऊँगा	आज # आऊँगा
नलकी	नल # की
काम मे नरम	काम मे न # रम

* करका मनका डारि के मन का मनका फेरि।
तेरी बरछी ने बर छीने हैं लखन के।

बंदर # रखा गया	बंदर # खा गया
रोको # मत जाने दो	रोको मत # जाने दो
सोओ # मत उठो	सोओ मत # उठो
वह # घोडागाडी खींच रहा है	वह घोडा # गाडी खींच रहा है
कहता # नपूरा है	वह # तानपूरा है

भाषा विज्ञान में दो प्रकार के स्वनिम बताए गए हैं—खंडीय स्वनिम (Segmental Phoneme) और खंडेत्तर स्वनिम (Supra-segmental Phoneme) खंडेत्तर स्वनिम में संहिता/संक्रमण एक स्वनिम है क्योंकि इसके कारण अर्थ भेद हो सकता है इसलिए इसे स्वनिम कहा गया है।

हिंदी के संपर्क मे रहने वाले या हिंदी भाषियों को शब्दों, पदबंधो और वाक्यों मे कहाँ ठहरना है कहाँ नहीं प्रायः ज्ञात ही रहता है। परन्तु हिंदी भाषा से एकदम अनभिज्ञ व्यक्ति के लिए परेशानी हो जाती है कि वाक्य, पदबंध या शब्द का उच्चारण कैसे करे ? यदि शब्द लंबा है तो कहाँ ठहरना है कहाँ नहीं, वाक्य में शब्दों के क्रम मे यदि एक शब्द के अंतिम ध्वनि का उच्चारण आगे वाले शब्द के प्रथम वर्ण / ध्वनि के साथ कर ले तो क्या होता है, यदि शब्द छोटा भी हो तो तोडकर बोलने मे क्या अंतर आता है ये सभी बाते भाषा शिक्षण मे महत्वपूर्ण है। इसी दृष्टिकोण को मद्देनजर रखते हुए हिंदी के कुछ शब्दो, पदबंधों और कुछ वाक्यो को ऊपर दिया गया है। भाषा सीखने वाले विद्यार्थियो के लिए इसकी उपयोगिता है ही। '#' चिह्न विवृत्ति / संहिता / संक्रमण के लिए है। इसका अर्थ है कि इस स्थान पर ठहराव है या शब्द को तोडना है।

5. संस्कृत और उर्दू की शब्दावली में भेद

अन्य भाषा भाषियों के लिए हिंदी शिक्षण सामग्री निर्माण मे सावधानीपूर्वक प्रस्तुतीकरण की अपेक्षा की जाती है। कभी-कभी अभ्यास मालाओ के निर्माण मे इसे नजरंदाज़ किया जाता है जो कि अनुचित है। उदाहरणार्थ—

अकारांत शब्दों में '-ई' प्रत्यय लगाकर ईकारांत शब्दों को बनाने का अभ्यास करवाया जाता है—सुख—सुखी, बीमार—बीमारी। क्या यहाँ किसी प्रकार की त्रुटि है ? मेरे विचार से 'सुख' से 'सुखी' बनाने की क्रिया मे संज्ञा से विशेषण हो जाता है जबकि 'बीमार' मे 'बीमारी' बनाने की प्रक्रिया मे विशेषण मे संज्ञा हो जाता है। ऐसा क्यो हो रहा है ? तनिक विचार करके देखे तो हम पाएँगे कि संस्कृत शब्दावली के इस प्रकार के शब्द और उर्दू शब्दावली के इस प्रकार के शब्दों के कारण ही ऐसा हो रहा है जिसका ध्यान रखना अति आवश्यक है।

संस्कृत के इन शब्दों में '-ई' प्रत्यय लगने पर वे संज्ञा से विशेषण हो जाते हैं, जैसे—

संज्ञा	विशेषण
सुख	सुखी
दुख	दुखी
अभ्यास	अभ्यासी
अनुराग	अनुरागी
ज्ञान	ज्ञानी
राग	रागी
दंभ	दंभी

उर्दू शब्दावली के इन शब्दों में—'-ई' प्रत्यय लगने पर वे विशेषण से संज्ञा बन जाते हैं, जैसे—

विशेषण	संज्ञा
बीमार	बीमारी
परेशान	परेशानी
ईमानदार	ईमानदारी
गरीब	गरीबी
अमीर	अमीरी
खुश	खुशी

अतः पाठ सामग्री वैज्ञानिक हो इसके लिए यह आवश्यक है कि इसकी सावधानी रखें।

6 **सह-प्रयोग** (Collocation)

इसे संगत संबंध भी कहा गया है। हिंदी भाषा पर अधिकार हेतु यहाँ शब्दों के साथ अन्य निश्चित शब्दों का प्रयोग दिया जा रहा है। ये सह-प्रयोग कई स्तरों पर देखे जा सकते हैं :—

(i) **सशक्त-सह प्रयोग** (Strong Collocation)

विशेषण और विशेष्य के इस प्रकार के सह प्रयोग में विशेषण के साथ निश्चित विशेष्य का प्रयोग ही संभव है, जैसे—चिलचिलाती धूप, संकीर्ण विचार-धारा, गगनचुंबी इमारत, प्रकांड पंडित, चिकनी-चुपड़ी बातें, रमणीक स्थल, मनोरम दृश्य (स्थल), मधुर संगीत, निर्बाध गति, अविरल धारा, सत्वर गति, दिलचस्प बातें, फटा-पुराना कपड़ा, कटा-फटा नोट, रोचक बातें, घनघोर घटा, उत्तम कोटि,

नाजुक स्थिति अड़ियल टट्टू शरीफ आदमी अप्रिय घटना

अन्य सशक्त सह-प्रयोग जीभ लपलपाना, घड़ी टिक् टिक् करना, दिल धुक-धुक करना, आँसू छलकना, दाँत कटाना, पाँव पटकना, नाव डगमगाना, बादल गरजना, तारे टिमटिमाना, पंख फड़फड़ाना।

(2) **अशक्त सह प्रयोग** (Weak Collocation)

इस प्रकार के प्रयोग मे एक ही शब्द अन्य कई शब्दों को ग्रहण कर सकता है। जैसे—

शुभ लाभ / घड़ी / दिन / नाम।
घोर अंधकार / अन्याय / अत्याचार।
चंचल / बालक / कन्या / महिला।
बासी रोटी / खाना / सब्जी।
कटु अनुभव / आलोचना / वचन।

(3) **यौगिक और मिश्र क्रियाओ के सह-संबंध-प्रयोग**

आदाब बजाना, बलि चढ़ाना, ढाँढस बँधाना, धक्का [illegible] रसीद करना, आ धमकना, घर पकड़ना, कर बैठना, मार डालना, धू[illegible] आग लगाना, जल उठना, मुकर जाना, हो आना, गोल कर जाना, [illegible], समझ जाना।

मुहावरों के प्रयोग भी सह-प्रयोग के अन्तर्गत आते हैं ये निश्चित संबंध समूह (Set Collocation) होते है, जैसे—

टोपी उछालना, नाच न जाने आँगन टेढ़ा, ठोकर खाना, दाँत [illegible], हाथ धोना, गर्दन झुकना, पानी फेर देना, आदि।

[आँख मूँदकर, दिल खोलकर, [illegible]]

परसर्गों के साथ क्रियाओं के सह-प्रयोग

पर	झपटना, फबना, टाँगना, थोपना, यकीन करना।
के लिए	तरसना, तड़पना।
की ओर	लपकना।
से	कतराना, गुजरना, घिरना, लड़ना, भिड़ना, रूठना, चिपकना, चिढ़ना, जुड़ना डरना, छीनना, पूछना, मिलना, कहना, प्यार करना।
मे	गाड़ना, घुसना, घुसाना।
को	कहना [स]

का/की   प्रतीक्षा / इनजार करना, सकल्प, उम्मीद, आशा, इरादा, व्यवस्था, अपेक्षा, ठानना ।

जीव / प्राणियो और उनके घरो के नाम भी सह सबध / प्रयोग के अतर्गत रखे जा सकते है, जैसे —

आदमी घर मे रहता है । इसी प्रकार कबूतर—दडबा, शेर / सियार—माँद, चिडिया—घोसला, तोता—कोटर, मधुमक्खी—छत्ता, गाय—गौशाला. घोड़ा—घुडसाल, मकडी—जाला, बन्दर—पेड, साँप—बाबी, चूहा—बिल ।

मानवेतर प्राणियों के आवाज़ के सह-प्रयोग

बकरी / भेड़—मिमियाना, मेढक—टर्राना, गाय—रभाना, घोड़ा—हिनहिनाना कोयल—कूकना, चिडिया—चूँ चूँ करना / चहचहाना, कबूतर—गुटर-गूँ करना. पपीहा—पियु-पियु करना, ऊँट—बलबलाना, मोर—कुहकना, भैस—डकराना, मक्खी—भिनभिनाना, हाथी—चिंघाडना, साँप—फुँकारना, गधा—रेकना ।

7 '-इक' प्रत्ययात शब्दावली

'-इक' प्रत्यय लगकर बनने वाले शब्द—

हिंदी मे कई शब्द ऐसे है जिनमे — '-इक' प्रत्यय लगकर नए रूप बनते है । साथ ही साथ कुछ ध्वन्यात्मक परिवर्तन दिखाई देते है कुल मिलाकर रूप स्वनिमिक परिवर्तन (Morphophonemic Change) होते हैं । इनसे लेखन में हुए सूक्ष्म परिवर्तन की ओर ध्यान दिलवाना ही इस प्रसग का उद्देश्य है । वर्तनीगत त्रुटियो से बचने के लिए इन पर ध्यान देना अति आवश्यक है ।

अर्धविवृत—विवृत (अ > आ) ।

समाज—सामाजिक, स्वभाव—स्वाभाविक, व्यवहार—व्यावहारिक, परिवार—पारिवारिक, अलकार—आलकारिक, परिभाषा—पारिभाषिक, तर्क—तार्किक, शब्द—शाब्दिक, अर्थ—आर्थिक, समूह—सामूहिक, वर्ष—वार्षिक, सप्ताह—साप्ताहिक, व्यापार—व्यापारिक, भाषा—भाषिक, नाम—नामिक, काल—कालिक, व्याकरण—व्याकरणिक, मास—मासिक ।

(पश्च) सवृत—(पश्च) विवृत (उ, ऊ, ओ > औ)

पुराण—पौराणिक, भूगोल—भौगोलिक, लोक—लौकिक ।

(अग्र) सवृत (अग्र) अर्धविवृत (इ, ई > ऐ)

इतिहास—ऐतिहासिक, विज्ञान—वैज्ञानिक, सिद्धात—सैद्धातिक, पिता—पैतृक, जीव—जैविक, दिन—दैनिक, शिक्षा—शैक्षिक ।

8 अनुस्वार चद्र बिंदु सहित और रहित

हिंदी में अनुस्वार और चद्र बिंदु का सूक्ष्म अतर महत्वपूर्ण है। आज कल इसकी उपेक्षा (लेखन मे) की जा रही है। पत्रिकाओ में चद्र बिंदु 'ँ' के स्थान पर भी अनुस्वार 'ं' का चलन इधर बहुत तेजी से रहा है। 'हंस'—एक पक्षी और 'हँस' 'हँसना' क्रिया का धातु रूप है फिर दोनो को एक जैसा लिखा जा सकता है ? जहाँ मात्रा आदि के कारण स्थान के अभाव मे 'ँ' नही लगाया जा सकता (झोंका= झोका) वहाँ पर अनुस्वार 'ं' की छूट है।

इनके सूक्ष्म दिखाई देने वाले अतर से अर्थ मे होने वाले बडे अतर के लिए कुछ उदाहरण देखें—

वही—वहीं, कही—कहीं, यही—यहीं, बच्चो—बच्चों, फलो—फलों, फूलो—फूलों, आती—आतीं, भाइयो—भाइयों, सुनाती—सुनातीं, झोका—झोंका, समझे—समझें।

अहिंदी भाषियो को अनुस्वार और चद्र बिंदु मे जिन उदाहरणो के द्वारा समझाया जाता है वे तो समझाने के लिए ठीक ही है परतु मैंने वे अति सूक्ष्म अतर दिखाई देने वाले उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जिन्हे हिंदी भाषी भी प्राय. नजरदाज कर जाते है।

'तू आती' और 'तुम आतीं'

प्राय लोग 'तू और 'तुम' रूपो को एक ही प्रकार का वजन देते हुए 'तू आती' के सादृश्य पर 'तुम आती' लिखना ही उचित समझते है परतु मेरे विचार से ऐसा ठीक नही होगा। 'तुम' मूलतः बहुवचन की तरह क्रियाएँ लेता है भले वह एकवचन ही मे क्यो न प्रयुक्त होता हो, देखिए—

हम आते।	हम आतीं।
तुम / आप आते।	तुम / आप आतीं।
वे आते	वे आतीं।
मैं आता।	मैं आती।
तू आता।	तू आती।
वह आता।	वह आती।

अत: 'तुम आती' के स्थान पर 'तुम आतीं' ही होना अधिक तर्कसगत व वैज्ञानिक होगा।

9. हिंदी में प्रयुक्त कुछ शब्दों की वर्तनी

अन्य भाषा शिक्षण मे जहाँ वर्तनी सबधी शिक्षण भी आवश्यक है वही हिंदी भाषियो द्वारा वर्तनी सबधी मान्यता हिंदी शिक्षार्थियो मे भ्रम पैदा कर देती है। हिंदी

ाकार के कई शब्द मिलेंगे जिनकी वर्तनी के दो रूप चलते हैं। जहाँ अर्थ म ही होता (दूकान दुकान) वहाँ तो कोई समस्या विशेष नहीं है, लेकिन जहाँ अन्तर होता है (कार्रवाई, कार्यवाही) वहाँ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता । इन दोनों स्थितियों के बीच एक तीसरी स्थिति और दिखाई देती है जहाँ ध्यान देने की आवश्यकता ही नहीं समझता । वह स्थिति ऐसे शब्दों की वर्तनी है जब दो वस्तुओं के लिए प्रयुक्त शब्दों की वर्तनियाँ भिन्न होते हुए भी को नहीं मालूम रहता है कि किस वस्तु के लिए किस शब्द की कौन-सी ही [सेव—सेंव, काफी—काफी] ।

यहाँ हम मात्र अपनी बात की पुष्टि में कुछ उदाहरण और विवेचन सहित तुत करेंगे । लेखक का यह आशय बिल्कुल नहीं है कि उनके अलावा इस विषय र विस्तार नहीं किया जा सकता ।

काफी—काफी→'काफी' शब्द 'पर्याप्त' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाना चाहिए न कि अंग्रेजी के Coffee के लिए। पेय पदार्थ के लिए 'काफी' शब्द ही उचित है ।

कार्रवाई—कार्यवाही→'कार्रवाई' शब्द 'आपके विरुद्ध विभागीय कार्रवाई की जाएगी' में निहित अर्थ के लिए तथा 'कार्यवाही' 'बैठक की कार्यवाही (प्रोसीडिंग) प्रस्तुत है' में निहित अर्थ के लिए उचित है ।

कोश—कोष→'कोश' और 'कोष' दोनों 1952 तक 'शब्द कोश' के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं। लेकिन 'कोश' शब्द कोश (dictionary) तथा 'कोष' (treasury) के लिए उचित है ।

सेंव—सेव→'सेंव' नमकीन के रूप में प्राप्य खाद्य पदार्थ तथा 'सेब' फल के रूप में प्राप्य खाद्य पदार्थ के लिए उचित है ।

दुकान-दूकान→दोनों वर्तनियाँ ठीक हैं परन्तु चलन के आधार पर आजकल 'दुकान' ही उचित है। (प्रेमचंद साहित्य में 'दूकान' अधिक मिलता है)

बुद्धि—बुद्धि—'बुद्धि' वर्तनी अधिक वैज्ञानिक है। 'बुद्धि' अवैज्ञानिक है क्योंकि हलन्त्' का अर्थ है स्वर रहित व्यंजन। जब 'द्' स्वर रहित व्यंजन है तो लेखन की दृष्टि से इसमें स्वर मात्रा 'ि' कैसे हो सकती है ? इस शब्द की पुरानी वर्तनी बुद्धि' भी मान्य है ।

वापस—वापिस→'वापस' बोलने में भी अस्वाभाविक लगता है। अन्य कोई ठोस कारण न होते हुए 'वापिस' ही उचित है। अलग-अलग स्रोत

होते हुए भी 'बहिन' ('बहन' नही) के सादृश्य में 'वापिस' ही सरल होगा ।

वेश—वेष→'वेश' ही उचित है, 'वेष' नही । 'वेशभूषा' में 'ष' तो पहले से ही है दूसरा 'ष' 'वेष' मे लगने से 'वेषभूषा' नही हो सकता । उच्चारण की दृष्टि से भी 'ष' का उच्चारण अब नही रहा ।

निदेशक-निर्देशक→'निदेशक' (Director) किसी संस्थान का उच्च अधिकारी । जैसे—केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा का 'निदेशक' होता है 'निर्देशक' (Guide) जो पी-एच० डी० के लिए मार्ग दर्शन करता है ।

सीधा~सादा/सीधा-साधा→'सीधा-सादा' ही उचित है । 'सीधा-साधा' प्रथम शब्द के महाप्राण के कारण उच्चारण में 'सादा' के 'द' अल्प प्राण का महाप्राणीकरण हो जाता है जिससे लेखन मे भूल हो जाती है ।

10. भ्रांत-महिला मित्र (False Girl-Friend)

अहिंदी भाषियो को हिंदी शिक्षण के अनुभव मे कभी-कभी बहुत रोचक बाते सामने आ जाती है । इसी प्रकार की एक घटना का संक्षिप्त वर्णन यहाँ प्रस्तुत है—

नागालैंड के हिंदी अध्यापकों को पढ़ाने समय छात्र से 'छाता' का स्त्रीलिंग शब्द पूछने पर उसने बताया 'छाती' । हँसी तो आई पर आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि 'लडका' से 'लडकी', 'घोडा' से 'घोड़ी', 'गेंदा' से 'गेंदी' स्त्रीलिंग बन सकते है तो 'छाता' से 'छाती' क्यो नही ? छात्र बेचारे ने सादृश्य के आधार पर रचनात्मक कार्य कर दिया वह बधाई का पात्र होना चाहिए । परंतु हिंदी मे इस प्रकार के रचनात्मक कार्यो की अनुमति हिंदी व्याकरण नही देता । कोश विज्ञान के अध्ययन मे एक शब्द भ्रात मित्र (false friends) का प्रयोग होता है जिसकी व्याख्या है—विभिन्न भाषाओं मे पाए जाने वाले वे शब्द जो रूप की दृष्टि से समान लगते है किंतु प्रयोग की दृष्टि से भिन्न हो । जैसे—हिंदी 'शिक्षा'='ज्ञान प्राप्ति' और मराठी 'शिक्षा' ='दंड' ।

हिंदी में ऐसे कई शब्द मिलते हैं जो रूप और ध्वनि में काफी हद तक समानता लिए हुए होते है परंतु अर्थ की दृष्टि से इनमें दूर-दूर तक का भी संबंध नही होता मैंने इन्हे भ्रात महिला मित्र (false girl friend) कहा है । अहिंदी भाषियो को स्पष्ट करने के लिए उन्हे अर्थों सहित यहाँ दिया जा रहा है ताकि उन्हे भाषा व्यवहार, भाषा पर अधिकार और संप्रेषण संबंधी दक्षता प्राप्त हो सके ।

घड़ा—घड़ी→'घड़ा' मिट्टी का बर्तन जो पानी ठंडा करने के काम आता है, 'घड़ी' समय बताने वाला यंत्र ।

कब्जा—कब्जी→'कब्ज़ा' दरवाजे में लगने वाला लोहे का बना एक आइटम, 'कब्जी' शारीरिक बीमारी, मल त्याग क्रिया का असामान्य होना ।

कोठा—कोठी→'कोठा' वैश्यालय, वैश्या का कमरा, 'कोठी' बड़ा मकान ।

छाता—छाती—'छाता' वर्षा / धूप से बचाव का साधन, 'छाती' महिलाओं का उरोजों वाला भाग (breast) ।

अँगूठा—अँगूठी→'अँगूठा' हाथ का (उँगलियों के पास वाला) अवयव, अँगूठी उँगली में पहनने के लिए धातु (प्राय सोने/चाँदी से निर्मित) का एक आभूषण ।

पाना—पानी→'पाना' एक प्रकार का औजार, 'पानी' पीने के लिए प्रयोग आने वाला द्रव ।

माला—माली→'माला' गले में पहना जाने वाला फूलों या धातु / मोतियों का हार, 'माली' बगीचे को ठीक-ठाक रखने वाला ।

बाला—बाली→'बाला' कन्या / लड़की, 'बाली' कान में पहनने का आभूषण/ गेहूँ, बाजरे, ज्वार की बाली ।

11 **अर्द्ध समान शब्द** (Partial Similar Words)

भाषाओं में थोड़ी-बहुत वर्ण भिन्नता के कारण ऐसे शब्द प्राय: मिलते हैं जिनका समान होने का भ्रम होता है । जल्दी या असावधानी से उन पर दृष्टि गुजर जाती है परंतु अर्थ में भेद (जमीन आसमान का) होने के कारण यदि सावधानी न रखी जाय तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है । हिंदी भाषा में भी ऐसे शब्दों की कमी नहीं है । हिंदी सीखने वालों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि उन शब्दों पर सरसरी निगाह डालें तथा प्रयोग के समय ध्यान रखे । इस प्रकार भाषाई कौशलों पर अधिकार के साथ-साथ संप्रेषण में दक्षता प्राप्त हो सकेगी ।

ऊपर शीर्षक में 'अर्द्धसमान' मेरा अपना दिया हुआ नाम है । यह अर्द्ध-समानता रूप की दृष्टि में है जिसके कारण हिंदी भाषियों को भी कभी-कभी अल्पतम समय के लिए रुक जाना पड़ता है ।

अपेक्षा—उपेक्षा→'अपेक्षा' आशा करना से तात्पर्य, 'उपेक्षा' तिरस्कार ।

प्रमाण—परिमाण→'प्रमाण' सबूत, 'परिमाण' मात्रा । 'परिणाम' एक और शब्द है जिसका अर्थ है 'फल' या 'रिज़ल्ट' ।

प्रासाद—प्रसाद→'प्रसाद' भगवान के मन्दिर में मिलने वाला खाद्य, 'प्रासाद' महल ।

चर्म—चरम→'चर्म' जीव की खाल, 'चरम' आखिरी ।

घाट—घाटी→ 'घाट' नदी तट का एक स्थान विशेष। 'घाटी' पहाड़ों के बीच का स्थान।

मत—मति→ 'मत' नकारात्मक अव्यय। 'मति' बुद्धि।

दस्त—दस्ता→ 'दस्त' पेट खराब होने के कारण बार-बार लैट्रिन जाना। 'दस्ता' किसी औजार का हत्था / 48 बड़े कागजों के समूह का नाम।

बाल—बाली→'बाल' शरीर के बाल, बाली' कानों में पहनने का आभूषण/गेहूँ, बाजरे ज्वार की बाली।

कटक—कंटक→'कटक' सेना 'कंटक' काँटा।

गृह—ग्रह→'गृह' घर, 'ग्रह' नक्षत्र।

तुरग—तरग→ तुरग' घोड़ा, 'तरग' लहर।

कमर—कमरा→'कमर' शरीर का एक भाग, 'कमरा' मकान का एक भाग।

कलई—कलाई→ 'कलई' बर्तनों पर की जाने वाली पालिश, 'कलाई' बाँह और हाथ का संधि स्थान।

पक्ष—पक्षी→'पक्ष' दो समुदायों या दो भागों में से एक, 'पक्षी' एक चिड़िया।

शोर—शोरा→'शोर' हल्लागुल्ला / आवाज का व्यवधान, 'शोरा' एक प्रकार का रसायन।

किश्त—किश्ती→'किश्त' देय धन राशि को एक साथ न देकर थोड़ा-थोड़ा देना। 'किश्ती' नाव, जल मार्ग तय करने में प्रयुक्त साधन।

कोयल—कोयला→'कोयल' एक चिड़िया, 'कोयला एक प्रकार का ईंधन।

पान—पानी→ पान' खाने के लिए प्रयोग आने वाला, 'पानी' पीने के लिए प्रयोग आने वाला द्रव।

हाथ—हाथी→'हाथ' शरीर का एक अंग 'हाथी' एक जानवर।

12 अंग्रेजी शब्दों का हिंदीकरण

हिंदी में कई ऐसे शब्द घुल-मिल गए हैं कि यह सहज रूप से नहीं जाना जाता कि वे अंग्रेजी के हैं। इस प्रकार के कुछ शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं।

हिंदीकृत	अंग्रेजी
तिजोरी	ट्रेजरी (Treasury)
कंदील	कैंडिल (Candle)
बैरंग	बीयरिंग (Bearing)
रौंद	राउंड (Round)

सपरेटा	सेपरेटर (Seperator)
अलमारी	अलमीरा / अलमाइर (Almirah)
त्रासदी	ट्रेजिडी (Tragedy)
गोदाम	गोडाउन (Godown)
लाट (साहब)	लार्ड (Lord)
संत	सैंट (Saint)
लालटेन	लैंटर्न (Lantern)
मील	माइल (Mile)
पतलून	पैनलून (Panataloon)
पिस्तौल	पिस्टल (Pistal)
पलटन	पिलाटून (Platoon)
कोलतार	तारकोल (Tarcol)
तुरप	ट्रम्प (Trump)
बरामदा	बराण्डा (Varandah)
वास्कट	वेस्कोट / वेस्टकोट (Waistcoat)
बकसुआ	बक्ल्स (Buckles)
कनस्तर	कैनिस्टर (Canister)
संतरी	सेन्ट्री (Sentry)
तमलेट, गिलास	टम्बलर (Tumbler)
गार्डर	गर्डर (Girder)

13. प्रोक्तियाँ (Discourses)

"भीड़ को शक्ति का नाम नहीं दिया जा सकता। भय दिखाने पर भीड़ भाग भी सकती है और उकसाने पर ऊधम भी मचा सकती है। उसमें कुछ भी स्थायित्व नहीं रहता। समर्थक व अनुयायियों की पर्याप्त मात्रा रहने पर भी उसे शक्ति का नाम देना उचित नहीं। शक्ति तो उसे कहते हैं, जो प्रतिकार करने का साहस रखे, अन्याय के विरुद्ध लड़ कर संघर्ष कर सके, जिसमें विजिगीषु वृत्ति हो और सब प्रकार की कुर्बानी देने की हिम्मत हो।" —स्व० रामनरेश सिंह

"मानव जीवन में [illegible] है। जिसमें लाभ है, वह बुरा भी हो तो स्वागत है; जिसमें लाभ नहीं, [illegible] वह स्वागत भी [illegible] है।"

[illegible] लेना है तो पाप की आँखों की [illegible] है।" —प्रेमचंद

"दौलत का जाल वह पिंजरा होता है, जिसमें फँसकर आदमी तोते से भी गया बीता हो जाता है, द्वार खुल जाने पर भी उड़ कर नहीं जा पाता।"

"अपने घोड़े की तेज दौड़ अकेले में देखना और उसी घोड़े को दूसरे के घोड़े से आगे निकल जाते देखना, दोनों अलग-अलग बातें हैं। एक में आत्म संतोष है दूसरे में स्पर्धा का अहंकार।"

"मैदान में नदी की गति धीमी पड़ जाती है पर ले चलने की क्षमता बढ़ जाती है, जिनकी गति धीमी है, वे भी साथ हो लेते हैं।"

"कंचन जितना कच्चा होता है, उतना ही पानीदार होता है। मनुष्य जितना सहज होता उतना ही निष्कपट भी।"

"अतिविनम्र व्यक्ति धूर्त होता है।"

"कमजोर सिपाही ताल तो ठोक लेता है, अखाड़े में भी उतर पड़ता है, पर तलवार की चमक देखते ही उसके हाथ-पैर फूल जाते हैं।"

"जो वस्त्र जितना ही स्वच्छ होता है उसमें स्पर्श उतना ही शीघ्रता से संक्रमित होता है।"

"इस दुनिया में जो लोग जिन्दा हैं, उन्हें कम से कम मरने वालों को बचाने का प्रयास तो करना ही चाहिए। इससे जीवन की सार्थकता कुछ हद तक तो सिद्ध हो सकती है।"

अच्छा व्यवहार मूर्ख की मूर्खता को तथा बुरा व्यवहार विद्वान की विद्वता को दबा देता है। विद्वान का अच्छा व्यवहार उसकी विद्वता से 'सोने में सुहागे' का सा काम करता है, जबकि मूर्ख की मूर्खता और उसका बुरा व्यवहार उसे ऐसे गड्ढे में धकेल देते हैं जहाँ से उसका उठना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है।'

गलत ढंग से अर्जित धन के उपयोग से व्यक्ति विवेकहीन हो जाता है, उसे अपने, परायों से भी पराए लगते हैं।

"औरत जब पुरुष में कामुकता रहित आकर्षण पैदा कर लेती है तो वह उस पुरुष के लिए दैवीय रूप हो जाती है।"

"शतरंज के हर मोहरों की अपनी-अपनी चाल होती है परंतु वर्तमान समाज में कुछ लोग ऐसे मोहरे की तरह होते हैं जो हर चाल चल लेते हैं।"

"मूर्ख अपने से अधिक मूर्ख और विद्वान अपने से अधिक विद्वान का सत्संग पसंद करता है।"

"अति सफलता दाम्पत्य जीवन की दुश्मन होती है।"

"वही तलवार जो केले को भी नहीं काट सकती, सान पर चढ़कर लोहे को भी काट देती है।"

"पाप की आवाज को उठते ही हवा पकड़ लेती है। और फिर एक-एक झोंका भी गवाह बन जाता है।"

"गाँठ मे हीरा हो तो सोने-चाँदी का बोझ क्यो बढ़ाया जाय ?"

"शत्रु की हानि मनुष्य को अपने लाभ से भी अधिक प्रिय होती है।"

"बहुत तेज दौडने वाला मनुष्य प्राय. मुँह के बल गिरता है।"

"नम्रता से मतलब दब्बूपन से नहीं।" —आचार्य शुक्ल

"लोटे के थोडे से दूध मे अंगीठी पर धरते ही उफान आ जाता है, परंतु कढाव मे पड़े दूध मे इतनी जल्दी उफान नही आता।"

"अतृप्त कामनाएँ अक्षमता से टकरा-कर कलह मे बदल जाती है।"

"घायल मन संवेदना से बहुत जल्दी प्रभावित होता है।"

कुछ लोग ऐसे कंकड़ की भाँति होते है, जो किसी दाल मे नहीं गलते।

"समुद्र मे तो थोड़ा ठहरा हुआ पानी ही अच्छा होता है, कुछ कमल तो खिल ही जाते है।"

क्या कभी मछली से भी पूछना चाहिए कि पानी की धार किधर है ?

"प्रोत्साहन पर आश्रित न रहो, आत्म विश्वास ही सबसे बडा हथियार है।"

समझ

"सूखे दरख्त की उस शाखा पर नही बैठना चाहिए, जिसमे कभी भी दीमक लग सकने की आशका हो।"

'Children can not be made good by making them happy, but they can be made happy by making them good.'

"When God closes one door, he opens another."

"Small minds discuss people great minds discuss ideas."

"A person who changes himself according to the majority is reasonable, a person who changes majority according himself is unreasonable, but change comes by unreasonables."

"Silence is the only answer and prayer to the welfare of mankind."

"God keeps his promises."

"Helpful is hopeful and helpless is hopeless."

"It is very easy to be an angel, when no body ruffles your feathers."

"Lives should be counted by smiles not by tears. Age should be counted by friends not by years."

14. कहानी

खरगोश और शेर

(पुरानी कथा नया संदर्भ)

शेर जो जंगल का राजा था, के इस आदेश से कि प्रतिदिन एक जानवर मेरे पास आकर मेरा आहार बनेगा, से सभी जानवर चिंतित हो गए। कोई हल न निकल पाने के कारण प्रतिदिन एक जानवार शेर की माँद में जाने लगा। जब खरगोश का नंबर आया तो वह जानबूझकर शेर के पास विलंब से पहुँचा। शेर के पास दुःखी मन से पहुँच कर प्रणाम किया।

शेर—तुमने बहुत देर कर दी मेरा भूख के कारण बुरा हाल है।

खरगोश—हुजूर ! रास्ते में एक और शेर मिल गया वह अपने को जंगल का राजा बता रहा है। इसलिए मुझे आपके पास आते-आते देर हो गई।

शेर—गुस्सा होकर बोला—जंगल का राजा तो मैं हूँ ! चलो बताओ कहाँ है दूसरा शेर ?

खरगोश—कुएँ के पास जाकर रुक गया। शेर से बोला—हुजूर, वह इसके अंदर है।

शेर ने कुएँ के अंदर झाँककर देखा। उसे अपनी परछाई दिखाई दी। खरगोश ने सोचा कि शेर कुएँ में अपनी परछाई को दूसरा शेर समझ कर कूद पड़ेगा और मैं बच जाऊँगा, परन्तु वह खरगोश की चालाकी समझ गया। उसने खरगोश की पूँछ पकड़कर कहा—"कुएँ के अंदर बैठे शेर से हम संधि करना चाहते हैं तुम हमारे दूत बनकर जाओ। शेर के पास यह प्रस्ताव लेकर जाओ।" और खरगोश को कुएँ के अंदर फेंक दिया।

15. चुटकुले

(1) एक पार्टी मे एक व्यक्ति विस्कुट बाँट रहा था। वह आदमी एक लडके को बिस्कुट देने लगा। लड़के ने कहा—'मेरा पेट भरा हुआ है।' लडके के पास उसकी माँ बैठी हुई थी। माँ ने धीरे से कहा—'अरे! लेकर जेब मे रख लो।' लडके ने कहा—'माँ जेब तो पहले से ही भरी हुई है।

शब्दावली

जेब—Pocket। बाँटना—To distribute। भरा हुआ—Full बैठा हुआ—Seated।

(2) एक विमान चालक था। वह अपना विमान अपने घर की छत के ऊपर से ले जाता था। जब उसका विमान घर के ऊपर से जाता तब उसकी पत्नी अपने बच्चे से कहती—'देखो, तुम्हारे डैडो जा रहे हैं।' एक दिन कई विमान घर के ऊपर से निकले। बच्चा अपनी मम्मी से पूछने लगा—"मम्मी मेरे कितने डैडी है?"

शब्दावली

विमान—Aeroplane। विमान चालक—Pilot। छत—Roof। निकलना—To pass। कई—Many।

(3) एक मजदूर का पैर एक कार के नीचे कट गया। उसने कारवाले के विरुद्ध हर्जाने का दावा किया। जब केस अदालत मे गया तो जज ने पूछा—'तुम लाठी के विना चल सकते हो या नही?' नौकर ने कहा—"मैं दुविधा में हूँ, हुजूर! मेरा डाक्टर कहता है कि मैं चल सकता हूँ, परतु मेरा वकील कहता है कि मैं नही चल सकता।"

शब्दावली

मजदूर—Labourer। पैर—Foot। कटना—To cut। विरुद्ध—Against। हर्जाना—Compensatoin। दावा—Claim। अदालत—Court। लाठी—Stick। नौकर—Servent। दुविधा—Suspense। हुजूर—Sir।

(4) एक कार वाला रास्ता भूल गया और कच्ची सड़क पर चला गया। सड़क पर बहुत [illegible] कार फँस गई। उसने पास [illegible] खेत पर काम करते हुए किसान को बुला लिया। किसान व बैलों की सहायता से कार कीचड़ से निकाल दी। [illegible] रुपये की माँग की। कार वाला बोला—'[illegible] कि तुम दिन भर [illegible] काफी पैसा कमा लेते होगे।' किसान ने [illegible]—'[illegible] पाता हूँ? रात भर तो कच्ची सड़क पर पानी डालता रहता हूँ।'

शब्दावली

कच्ची—Unmetaled । कीचड—Slush । फँसना—Stuck ; खेत—Field बैल—Ox । परिश्रम—Labour ।

(5) एक व्यक्ति की घडी बंद हो गई । वह एक घडीसाज के पास गया । घडी खोलकर घडीसाज ने एक मरी हुई मक्खी निकाली । उसने दूसरी मक्खी पकड़ी । उस मक्खी को घडी में डालते हुए घडीसाज ने कहा—'भाई साहब, इसका ड्राइवर मर गया था । मैंने ड्राइवर बदल दिया है ।

शब्दावली

घडीसाज—Watch-maker । घडी—Watch । मक्खी—Fly । निकालना —To remove ।

(6) एक पागल ने डाक्टर से कहा—'डाक्टर साहब, मैं अब ठीक हो गया हूँ । अब मुझे छुट्टी दे दीजिए । डाक्टर ने कहा—अच्छा बताओ, यहाँ से जाने के बाद तुम क्या करोगे ? पागल ने कहा—सबसे पहले बाहर जाकर सडक पार करने के लिए दाएँ-बाएँ देखूंगा । फिर मैं सडक पार करूँगा । सडक के उस पार जाकर मैं इस इमारत को नमस्कार करूँगा । डाक्टर ने मन में सोचा, अब यह आदमी ठीक हो गया है । डाक्टर ने फिर पूछा फिर क्या करोगे ? पागल ने कहा—फिर सडक पर पडे हुए छोटे-छोटे पत्थर चुनूँगा और इस इमारत के सभी शीशे तोड़ दूंगा ।

शब्दावली

पागल—Mad । पागलखाना—Mental Hospital । डाक्टर—Doctor । सडक—Road । दाएँ—Right side । बाएँ—Left side । इमारत—Building । नमस्कार—Compliment । पत्थर—Stone । शीशे—Glasses । चुनना—Pick up ।

(7) एक व्यक्ति चश्मे में शीशा लगवाने गया लेकिन दुकानदार द्वारा लगाए गए शीशे उसे पसंद नहीं आ रहे थे । ग्राहक कहने लगा कि ऐसे शीशे लगाओ कि मुझे प्रत्येक वस्तु बड़ी नजर आने लगे । दुकानदार ने उस चश्मे में दुरबीन के शीशे लगा दिये । चश्मा पहनकर ग्राहक निकला उसने एक अंगूर बेचने वाले से पूछा—श्रीमान जी, ये तरबूज कैसे हैं ?

शब्दावली

चश्मा—Goggle । शीशे—Lense । ग्राहक—Customer । नजर—Sight । दुरबीन—Binocular । अंगूर—Grape । तरबूज—Water melon । नजर आना—Seems । प्रत्येक—Everyone । कैसे (क्या भाव) —To ask about Price।

(8) एक कार के नीचे एक चूजा दब कर मर गया। 'चूजे के मालिक ने कहा—'आपने मेरा चूजा मार दिया। कार वाले ने कहा—'मुझे बहुत ही अफसोस है।' मालिक बोला 'साहब अफसोस करने से काम नहीं चलेगा। यह चूजा 5 रुपये का है। तीन साल बाद इसका मूल्य पच्चीस रुपये हो जाता। अब आप मुझे पच्चीस रुपये दीजिए। कार वाले ने जेब से चैक बुक निकाली और पच्चीस रुपये का चैक काट कर दे दिया। परंतु उसमें तीन साल बाद की तारीख डाली।

शब्दावली

चूजा—Chicken। दबना—Crushed। अफसोस—Regreat। मूल्य—Value। जेब—Pocket। साल—Year। तारीख—Date।

(9) एक संपादक के पास एक कहानीकार गया। परंतु उस वक्त संपादक ने मिलने से इंकार कर दिया। एक घंटे के बाद चपरासी ने संपादक से कहा 'आपसे कोई साहब मिलना चाहते हैं।' संपादक ने फिर मिलने से इंकार कर दिया। इस प्रकार संपादक ने दस लोगों से मिलने से इंकार कर दिया। ग्यारहवीं बार संपादक ने मिलने वाले व्यक्ति को बुलाया और कहा—'आप बहुत भाग्यशाली हैं इससे पहले मैंने दस कहानीकारों को वापस कर दिया।' इस बात को सुनकर कहानीकार ने कहा—वे दसों कहानीकार मैं ही था।

शब्दावली

संपादक—Editor। कहानीकार—Story writer। इंकार करना—To refuse। चपरासी—Peon। मना—Deny। भाग्यशाली—Lucky।

(10) एक नेताजी की पत्नी ने कहा—सुना है कि आपका भाषण सुनकर लोगों को नींद आ जाती है। इस समय आप एक भाषण सुना दीजिए। मुन्ना सो नहीं रहा है।

शब्दावली

नेताजी—Leader। भाषण—Speech।

(11) एक डाक्टर जब कभी पार्टी में जाते थे, तो वहाँ भी लोग उनका पीछा नहीं छोड़ते थे और वहाँ वे उनसे मुफ्त सलाह लेते रहते थे। डाक्टर ने इस परेशानी से पीछा छुड़ाना चाहा और उन्होंने एक तरकीब सोची। जब कभी कोई व्यक्ति पार्टी में उनसे कहता कि मुझे अमुक शिकायत है, तो वे उनसे तुरंत कहते—कपड़े उतारिए तो देखूँ।

शब्दावली

मुफ्त—Free । सलाह—Advice । परेशानी—Trouble । तरकीब—Trick । अमुक—So & so । शिकायत—Complaint । पीछा छुड़ाना—To get rid of ।

(12) एक भुलक्कड व्यक्ति अपने भुलक्कडपन के इलाज के लिए डाक्टर के पास गया और कहा—डाक्टर, मुझे अपने भुलक्कडपन से परेशानी है। आप इसका इलाज करे। डाक्टर ने इलाज शुरू कर दिया। थोडी देर तक रोगी को इधर-उधर देखने के बाद डाक्टर ने पूछा—आपको यह परेशानी कब से है भुलक्कड़ ने उत्तर दिया 'कौन सी परेशानी ?'

शब्दावली

भुलक्कड—Absent minded । परेशानी—Trouble । इलाज—Treatment । पन्द्रह—Fifteen ।

(13) एक बार एक सुखाग्रस्त इलाके का दौरा करते हुए एक मंत्रीजी ने भाषण दिया। उन्होंने हाथ उठाकर भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवान ! इस क्षेत्र में पानी बरसा, नही तो मुझे अपने पास बुला लो। श्रोतागणो ने उसी समय हाथ उठाकर भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवान, 'इन्हे अपने पास बुला लो।'

शब्दावली

सूखाग्रस्त—Drought । इलाका—Area । क्षेत्र—Area । भाषण—Speech । प्रार्थना—Prayer । श्रोतागण—Audience । दौरा करना—Tour । एक बार—Once upon a time । नही तो—Otherwise ।

(14) दो मित्र चलचित्र देखने गए। चलचित्र में जब घोडो की दौड शुरू हुई तो एक मित्र ने दूसरे मित्र से शर्त लगाई 'जिसका घोडा जीतेगा, उसे दस रुपए हारने वाला देगा' एक ने कहा सफेद घोडा जीतेगा, दूसरे ने कहा काला घोडा जीतेगा। अंत मे सफेद घोडा जीत गया। दूसरे मित्र ने पहले मित्र को दस रुपये देते हुए पूछा—अच्छा। यार तुम यह बताओ, 'तुमने कैसे जाना कि सफेद घोडा जीतेगा'। पहले मित्र ने कहा—'मैटिनी शो मे भी यही घोडा जीता था।'

शब्दावली

चलचित्र—Picture । घोडो की दौड—Horse Race । शर्त—Bet । काला—Black । सफेद—White । यार—Friend । जीतना—Win । शर्त लगाना—To bet । हारना—Loose

(15) साहब के सहायक ने एक क्लर्क से कहा—लगता है, अपने बौस आफिस में किसी से बातें करते रहते हैं, परंतु आफिस में तो कोई होता भी नहीं। क्लर्क ने कहा—'वे अपने आप से बातें करते होंगे।' सहायक बोला—तो जोर-जोर से बात क्यों करते हैं? क्लर्क ने कहा—'वे ऊँचा सुनते होंगे।'

शब्दावली

साहब—Boss । सहायक—Assistant । ऊँचा सुनना—Hard of learning ।

(16) एक प्रेमिका को उसके प्रेमी ने जन्मदिन पर एक हीरे की अंगूठी भेंट की। प्रेमिका ने कहा—'डार्लिंग, तुमने तो मुझे कार भेंट करने का वायदा किया था।' प्रेमी ने तुरत उत्तर दिया—'क्या करूँ नकली कार कहीं मिलती ही नहीं है।'

शब्दावली

प्रेमिका—Beloved । प्रेमी—Lover । अँगूठी—Ring । हीरा—Dimond । भेंट—Present । वायदा—Promise । नकली—Duplicate

(17) एक लडका 'सु' (अच्छा) से परिचित था, जैसे सुअवसर, सुलेख आदि। वह अपनी ससुराल गया। वहाँ पर सभी उसे 'कुँवर साहब' 'कुँवर साहब', कहने लगे। इस पर वह चिढ कर बोला—'आप मुझे कुँवर साहब कहकर मेरी बेइज्जती कर रहे हैं। कृपया आप मुझे 'सुवर साहब' कहें।

शब्दावली

चिढना – To be irritated । ससुराल – In laws । बेइज्जती—Insult ।

(18) दरोगाजी ने एक जुआरी से कहा—'बेटा तेरा भला इसी में है कि तू आज से जुआ खेलना छोड दे, क्योंकि एक दिन जीतेगा दूसरे दिन हारेगा फिर एक दिन जीतेगा तो दूसरे दिन हारेगा। इस बात को सुनकर जुआरी ने उत्तर दिया—अच्छा, आज से मैं एक दिन छोडकर जुआ खेला करूँगा।'

शब्दावली

भला—Welfare । जुआ—Gambling । जुआ खेलना—To play gambling । दरोगा—Sub inspector of police । खेला करना—Use to play ।

(19) एक व्यक्ति सुबह अपने कुत्ते के साथ पार्क में जा रहा था वहाँ पर एक व्यक्ति ने कहा—'सुबह-सुबह इस गधे को लेकर कहाँ जा रहे हो?' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—'तुम्हे दिखाई नहीं देता है कि यह कुत्ता है, गधा नहीं।' इस पर उस व्यक्ति ने कहा—'मैं आपसे नहीं आपके कुत्ते से यह सवाल पूछ रहा हूँ।'

शब्दावली

कुत्ता—Dog। गधा—Ass।

एक चोर किसी घर से चोरी करके जैसे ही चला, मालिक ने उसे पकड़ लिया। चोर ने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। जब मालिक उसे पुलिस चौकी ले जा रहा था तो चोर ने कहा "हुजूर आप मुझे पुलिस चौकी जरूर ले चलिए, परन्तु मेरा कुरता आपके घर रह गया है। मैं उसे ले आऊं।" मालिक ने सोचा—"चोर ने अपनी चोरी तुरत स्वीकार कर ली है। अत वह ईमानदार मालूम पड़ता है।" ऐसा सोचकर उसने कहा—'अच्छा ले आओ अपना कुरता मैं यहाँ खड़ा हूँ।' चोर गया तो फिर लौटा नही। एक लंबे अरसे के बाद वही चोर फिर उसी घर में चोरी करते हुए पकड़ा गया। इस बार भी उसने चोरी स्वीकार कर ली लेकिन पहले की ही तरह वह इस बार अपनी कमीज भूल गया। अतः वह मालिक से बोला—'मैं अपनी कमीज आपके घर भूल आया हूँ। यदि आप मुझे थोडी देर के लिए मुक्त करे, तो वह ले आऊँ।' मालिक ने कहा—'तुम पहले की तरह भाग जाओगे। इसलिए तुम यही ठहरो अब की बार कमीज मैं लाऊँगा।'

शब्दावली

जुर्म—Offence। पुलिस चौकी—Police station। हुजूर—Sir। कुर्ता—Shirt। अर्से—Period। कमीज—Shirt। मुक्त—Free। रह गया है/छूट गया है—Had remain।

एक मुवकिल वकील के पास गया और कहा 'वकील साहब, मेरा केस आप ले लीजिए और मेरी तरफ से पैरवी कीजिए।' मुवकिल ने वकील साहब से पूरी बात कह दी। वकील साहब ने पूरी बात सुनने के बाद उसे सुझाव दिया कि जब अदालत मे दण्डाधिकारी कोई बात पूछे तो तुम ऐं—ऐं कर देना। मुवकिल ने कहा—'ठीक है। इसमे क्या मुश्किल काम है। ऐसा ही करूँगा। 'अदालत मे दडाधिकारी के सामने मुवकिल से उसी तरह किया, जिस तरह वकील साहब ने समझाया था। दडाधिकारी ने मुजरिम (मुवकिल) को पागल समझकर छोड दिया (बरी कर दिया)। वकील साहब ने मुवकिल से कहा—'मैंने आपको बरी करा दिया। अब आप मेरी फीस दे दीजिए। मुवकिल ने वकील साहब से कहा—ऐं… ऐं।

शब्दावली

मुवकिल—Client। वकील—Advocate। केस—Case। पैरवी—Pleading। सुझाव—Suggestion। अदालत—Court। दडाधिकारी—

Magistrate। मुश्किल Difficult। मुजरिम Criminal। पागल Mad। बरी—Released। फीस—Fees। मेरी तरफ से—From my side।

एक हलवाई की दुकान पर बहुत भीड थी। एक छोटा बच्चा आकर बोला—"माँ ने मिठाई मँगाई है, वैसी ही मिठाई देना जैसी मिठाई कल दी थी।" हलवाई बडा प्रसन्न हुआ और ग्राहकों से कहने लगा—"अच्छी चीज की कद्र होती ही है। तभी लोग दुबारा मेरी दुकान पर आते हैं .... अच्छा, अभी मिठाई तौलता हूँ बच्चे।" इसके बाद बच्चे ने फिर कहा—"मिठाई वैसे ही हो जैसे पिछली बार दी थी। हमारे यहाँ कुछ मेहमान आये हैं। अम्मा यह नही चाहती कि ये मेहमान बार बार हमारे यहाँ आये।"

शब्दावली

हलवाई—Halvai। दुकान—Soap। भीड़—Rush। बच्चा—Child। मिठाई—Sweet। प्रसन्न—Happy। ग्राहक—Customer। कद्र—Importance। माँगना—Get it। दुबारा—Again। तौलना—To weight। मेहमान—Guest। बार-बार—Again and again। पिछली बार—Last time।

रात को पति ने दियासलाई जलाई तो पत्नी ने पूछा, "क्या ढूंढ रहे हो ?" पति ने कहा—आजकल मिट्टी के तेल की कमी है, मैं देख रहा हूँ कही लालटेन तो जलती नही रह गई।

शब्दावली

दियासलाई—Match stick। मिट्टी का तेल—Kerosene oil। कमी—Shortage। लालटेन—Lantern।

एक बार एक व्यक्ति को बादामों की आवश्यकता पडी। बाजार बन्द होने का समय था इसलिए वह जल्दी-जल्दी गया। सभी दुकानें बन्द हो चुकी थीं केवल एक दुकान खुली थी। उस व्यक्ति ने एक रुपये का नोट देते हुए कहा—आठ आने के बादाम दो और आठ आने वापस करो। दुकानदार ने कहा—कल ले जाना। खुले पैसे नहीं है। ग्राहक दुकान से बाहर आकर दुकान को पहचानने के लिए कोई निशानी ढूँढने लगा। उसने देखा एक बैल दुकान के सामने बैठा है। उसने इसे ही निशानी मान लिया। दूसरे दिन वही बैल एक दर्जी के दुकान के सामने बैठा था। उस दुकान का मालिक सरदार था। ग्राहक ने सरदार से कहा—'कल के मेरे आठ आने पैसे वापस करो।' सरदारजी ने कहा—किस बात के आठ आने ? ग्राहक

ने कहा—'क्यों झूँठ बोल रहे हो ?' रात भर में पसारी से दर्जी तो बन गए, परन्तु यह तो बताओ कि रात भर में तुमने दाढी कैसे बढा ली।

शब्दावली

बादाम—Almond। पहचानना—To recognise। निशानी—Sign। ढूँढना—To search। बैल—Ox। दर्जी—Tailor। सरदार—Sardar। बढाना—Produce। मालिक—Owner। झूँठ—Lie। पसारी—Kirana Merchant। दाढ़ी—Shave। के सामने—In front of। दुकान—Shop। खुले पैसे—Change।

(25) एक भिखारी ने एक सेठ से कहा—सेठजी एक पैसा दो। सेठ ने कहा—नहीं है। भिखारी ने कहा—अच्छा एक रोटी दे दो। सेठ जी ने फिर कहा—रोटी भी नहीं है। भिखारी भी मक्कार था। वह पीछा छोड़ने वाला नहीं था उसने फिर कहा—अच्छा कोई कपड़ा ही दे दो। सर्दी लग रही है। झुँझलाकर सेठ ने उत्तर दिया—'मेरे पास कुछ भी नहीं है।' तब भिखारी ने कहा—फिर तुम बैठे क्यों हो ? आओ मेरे साथ। हम दोनों मिलकर भीख माँगेंगे।

शब्दावली

भिखारी—Beggar। रोटी—Chapati। मक्कार—Cunning। सर्दी—Cold। झुँझलाकर—With off mood। भीख—Alm।

(26) एक व्यक्ति के घर कुछ मेहमान आये। उनके लिए खाना बनाना जरूरी था। इसलिए वह पडोसी के यहाँ से एक बडा बर्तन ले आया और पडोसी से कहा कि शाम को लौटा दूँगा। शाम को जब पडोसी आया तो उस व्यक्ति ने उस बर्तन के साथ एक छोटा बर्तन देते हुए कहा—'श्रीमान जी, आपके बर्तन ने बच्चा दिया है। पडोसी खुश होकर दोनों बर्तन ले गया। कुछ दिनों पश्चात एक दिन उसी व्यक्ति के यहाँ फिर मेहमान आये। इस बार भी वह पड़ोसी के यहाँ से बडा बर्तन यह कह कर ले आया कि कल वापिस कर दूँगा। दूसरे दिन जब बर्तन के लिए पडोसी आया तो उसने कहा कि तुम्हारा बर्तन तो मर गया। इस पर पडोसी ने कहा—कहीं बर्तन भी मरते है ? तब जवाब मिला—जब बर्तन बच्चे पैदा कर सकते हैं तो बर्तन मर भी सकते हैं।

शब्दावली

वापस करना/लौटाना—To return। पश्चात्—After। इस बार भी—

This time also । मेहमान—Guest । बर्तन—Pot । शाम—Evening । पड़ोसी—Neigobour । पैदा करना—To produce । बच्चा देना—To give birth ।

एक लड़का लदन मे रहता था। उसके माँ-बाप दिल्ली मे रहते थे। एक बार लड़के ने लदन से अपने माँ-बाप के लिए कुछ गोलियाँ भेजी, जिसको खाने से आयु कम हो जाती थी। कुछ समय बाद लडका लदन से वापस दिल्ली पहुँचा। हवाई अड्डे पर अपने माँ-बाप को न देखकर वह दुखी हुआ। जैसे ही वह बाहर आया एक लड़की ने उसे रोका और कहा, बेटा, तुमने मुझे पहचाना नही ? लड़का उस लड़की को गौर से देखने लगा। यह लडकी 20 वर्ष की मालूम पड़ती थी। इसके गोद मे एक बच्चा था। लडके ने कहा—आप कौन है ? मुझे नही मालूम। लड़की ने कहा—मैं तुम्हारी माँ हूँ। तुमने जो गोलियाँ भेजी थी, उसको मैंने खा लिया था। इसलिए मेरी उम्र कम हो गई। लडके ने कहा—यह गोद में बच्चा किसका है ? लडकी ने उत्तर दिया—ये तुम्हारे पिताजी है। इन्होने गलती से दो गोलियाँ खा ली थीं। इसलिए इनकी उम्र और कम हो गई।

शब्दावली

गोलियाँ—Tablets । उम्र—Age । हवाई अड्डा—Aerodrome । वापस—Back । गौर—Minutely । पहचानना—To recognise । गोद—Lap । एक बार—Once upon a time । रहना—To live ।

एक भिखारी था वह काना था। परतु भीख माँगते समय दूसरी आँख भी बद कर लेता था। जब कोई व्यक्ति उसे पैसे देता तो वह थोडी देर बाद आँख खोलकर उस पैसे को देख लेता और देखकर जेब मे रख लेता था। एक दिन उसने एक बाबू से कहा—बाबूजी एक रुपया दे दो, भूख लगी है, खाना खाऊँगा, मैं बिल्कुल देख नही सकता। बाबूजी ने एक रुपया दे दिया। थोडी देर के बाद भिखारी ने आँख खोली। इसी समय उस बाबू ने उसका यह कृत्य देख लिया और रुपया वापिस ले लिया तथा कहा—तुम तो देख भी सकते हो भीख नही मिलेगी। भिखारी ने कहा—बाबूजी, मैं एक आँख से तो नहीं देख सकता इसलिए आठ आने ही दे दो।

शब्दावली

भिखारी—Beggar । भीख—Alm । वापिस—Return । काना—Having one eye । कृत्य—Action । जेब—Pocket ।

(29) स्कूल निरीक्षक एक स्कूल मे निरीक्षण के लिए गए। कक्षा अध्यापक से कहा कि मैं आपके विद्यार्थियो से कुछ सवाल / प्रश्न पूछूगा, अत मुझ कक्षा में ले चलिए। कक्षा अध्यापक उन्हे कक्षा मे ले गए। स्कूल निरीक्षक ने सोचा कि प्रश्न ऐसा पूछना चाहिए जिसका जवाब कोई विद्यार्थी न दे सके। उन्होने पूछा—जिस गाड़ी से मैं आया हूँ उसकी गति 60 मील प्रति घटा है। मेरी उम्र क्या होगी ?

सभी सोचने लगे गाड़ी की गति से साहब की उम्र का क्या संबंध हो सकता है ? यह साहब जरूर पागल है। अतः एक लड़के ने कहा—सर ! मैं बता सकता हूँ। आपकी उम्र 42 वर्ष है। सयोग की बात कि साहब की उम्र 42 वर्ष ही थी। अतः साहब बहुत प्रसन्न हुए और उस विद्यार्थी से प्यार से पूछा—बेटे ! पर यह बताओ कि इस प्रश्न का जवाब तुमने कैसे ढूँढा ?

विद्यार्थी ने उत्तर दिया—सर ! मेरा भाई आधा पागल है और उसकी उम्र 21 वर्ष है।

शब्दावली

स्कूल निरीक्षक—School Inspector। कक्षा अध्यापक—Class teacher। विद्यार्थी—Student। सवाल / प्रश्न—Question। गति—Speed। 60 मील प्रति घटा—60 miles per hour। साहब—Sir। सयोग—By chance। आधा पागल—Half mad।

(30) बच्चे को रोता देख रास्ते मे एक व्यक्ति ने पूछा—क्यों रो रहे हो ? बच्चे ने बताया—मेरा एक रुपया गिर गया है, अब माँ मारेगी। आदमी ने उसे अपनी जेब मे रुपया निकाल कर दिया और कहा—जाओ ! अब घर जाओ। बच्चा फिर रोने लगा। उसी आदमी के पूछने पर उसने कहा—अंकल, माँ को यह किस्सा सुनाऊँगा तो इस बात पर मारेगी कि मैने एक रुपए के बजाय पाँच रुपए क्यो नही कहे ?

शब्दावली

किस्सा—Story। बजाय—In stead of।

(31) दो पहलवानो मे बराबर की कुश्ती के कारण फैसला नही हो पा रहा था। तब एक पहलवान ने निर्णायक से नजर बचाते हुए दूसरे पहलवान को काटा। पहलवान ने पूछा—क्यों काट रहे हो ? तब पहले पहलवान ने कहा—तुम्हें साबुत निगलना बहुत मुश्किल है।

शब्दावली

कुश्ती—Wrestling। पहलवान—Wrestler। फैसला—Decision।

निर्णायक—Refree। नजर बचाकर-छिपाकर काटना—To bite। साबुत —Complete। निगलना—To swallow।

(32) किराए पर मकान लेने वाला मकान मालिक से अपनी अच्छाइयाँ बता रहा था। मैंने जब पुराना मकान छोड़ा तो मकान मालिक रो पड़े। तब नए मकान मालिक बोले—मेरे साथ ऐसा नहीं होगा क्योंकि मैं किराया पेशगी ले लेता हूँ।

शब्दावली

मकान मालिक—Land lord। किराएदार—Tenant। अच्छाइयाँ—Good qualities। पेशगी—Advance।

(33) जनगणना के लिए आए एक अधिकारी ने एक घर में उपस्थित लड़की से पूछा—तुम्हारे पिताजी कहाँ हैं?

लड़की—जेल में।

अधिकारी— और माँ।

लड़की—पागलखाने में।

अधिकारी—क्या कोई भाई-बहिन भी है?

लड़की—बहिन, बाल सुधार घर में है और भाई विश्वविद्यालय में।

अधिकारी—अच्छा, तो तुम्हारा भाई विश्वविद्यालय में अध्ययन करता है।

लड़की—अभी तो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ही उसका अध्ययन कर रहे हैं।

शब्दावली

जनगणना—Sensus। अधिकारी—Officer। अध्ययन—Study। प्रोफेसर—Professor।

16. राशि (Zodiac), रत्न (Precious stones) और ग्रह (Planets) के नाम

राशि (Zodiac) .—

1. मेष	Aries एअरीज
2. वृष	Taurus टारस
3 मिथुन	Gemini जेमिनी
4. कर्क	Cancer कैंसर
5. सिंह	Leo लिओ
6. कर्कशा	Virgo विरगो
7 तुला	Libra लिब्रा

8. वृश्चिक	Scorpio	स्कार्पिओ
9. धनु	Saggitarius	सैजिटेरिअस
10. मकर	Capicorn	कैपीकार्न
11. कुम्भ	Aquarius	अक्वेअरिअस
12. मीन	Pisces	पेसीज्

रत्न (Precious Stones)

1. हीरा	Diamond	डायमड
2. मोती	Pearl	पर्ल
3. मनिक	Ruby	रूबी
4. पुखराज	Topaz	टोपाज
5. नीलम	Spphire	स्फायर
6. पन्ना	Emerald	एमराल्ड
7. मूँगा	Coral	कोरल

ग्रह (Planets)

1. बुद्ध	Mercury
2 शुक्र	Venus
3. पृथ्वी	Earth
4. मगल	Mars
5. बृहस्पति	Jupiter
6. शनि	Saturn
7. यूरेनस (हर्शल)	Uranus
8. नेप्च्यून	Neptune
9. प्लूटो	Pluto

17. हिंदी महीनों के नाम

अहिंदी भाषी छात्रों को कभी-कभी हिंदी महीनों के नाम जानने की इच्छा होती है। हालांकि इनकी आवश्यकता आजकल नहीं होती फिर भी जिज्ञासु छात्रों की जिज्ञासा का कोई अंत नहीं होता। इसी विचार से इन्हें यहाँ दिया जा रहा है। इस संबध मे एक बात स्पष्ट किया जाना आवश्यक है कि हिंदी माह ठीक अंग्रेजी माह के विभाजन की तरह नहीं होता या यों कहे कि अंग्रेजी माह ठीक हिंदी माह के विभाजन की तरह नहीं होता। अर्थात् हिंदी माह चैत अंग्रेजी के कुछ मार्च व कुछ अप्रैल के दिनों को मिलाकर बनता है इसी प्रकार अप्रैल माह हिंदी के कुछ चैत व कुछ बैसाख के दिनों को मिलाकर बनता है।

हिंदी माह	अंग्रेजी माह
चैत (चैत्र)	मार्च-अप्रैल
वैशाख (वैसाख)	अप्रैल-मई
ज्येष्ठ (जेठ)	मई-जून
आषाढ़ (आसाढ़)	जून-जुलाई
श्रावण (सावन)	जुलाई-अगस्त
भाद्रपद (भादो)	अगस्त-सितम्बर
आश्विन (क्वार)	सितम्बर-अक्तूबर
कार्तिक (कातिक)	अक्तूबर-नवम्बर
मार्गशीर्ष (अगहन)	नवम्बर-दिसम्बर
पौष (पूस)	दिसम्बर-जनवरी
माघ	जनवरी-फरवरी
फाल्गुन	फरवरी-मार्च

5

भाषा विज्ञान की लिखित मौखिक परीक्षाओं तथा भाषा विज्ञान पदों के साक्षात्कार हेतु उपयोगी प्रश्नोत्तर

प्रस्तुत प्रश्नोत्तरमाला में लगभग 150 प्रश्न और उनके उत्तर दिए गए हैं। ये प्रश्नोत्तर सभी स्तरो को ध्यान मे रखकर व्यवस्थित किए गए है। जैसे, केंद्रीय हिंदी संस्थान की गहन, पारगत, निष्णात की लिखित परीक्षाओं के लिए तथा निष्णात व गहन की मौखिक परीक्षाओ के लिए। इन प्रश्नोत्तर के सबध में दो बातो की ओर विशेष ध्यान दिलवाना अप्रासंगिक न होगा—पहली बात यह कि इन प्रश्नोत्तर मे बिल्कुल प्रारम्भिक प्रश्नों को नही लिया गया है। जैसे—स्वर, व्यजन की परिभाषा, भाषा क्या है ?, यादृच्छिकता आदि-आदि। इसका कारण यह है कि हम मानकर चलते हैं कि एक वर्ष के अध्यापन के पश्चात् छात्रो को इन प्रश्नो के उत्तर मालूम होंगे। अत प्रश्नों की संख्या की वृद्धि के भय से उन्हे यहाँ छोडा गया है। दूसरे लिखित परीक्षाओ के लिए ये उत्तर अति संक्षिप्त होने के कारण अधिक नम्बर दिलवाने में सहायक नही होंगे। हाँ ! इनके द्वारा इन विषयो की संकल्पना स्पष्ट होगी, छात्र इन्हे अपनी ओर से विस्तार देकर लिखित परीक्षा हेतु उपयोगी बना सकेंगे। इनमे से कई प्रश्नो के उत्तर इसी पुस्तक मे यथास्थान विस्तार से भी दिए गए है।

एम० ए० (हिंदी, भाषा विज्ञान), निष्णात-गहन पाठ्यक्रमो की मौखिक तथा भाषा विज्ञान क्षेत्र मे विभिन्न रिक्त पदों के साक्षात्कार के लिए ये प्रश्नोत्तर अति उपयोगी सिद्ध होंगे, यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है।

मौखिक परीक्षाओ मे कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जो साक्षात्कार का वातावरण सामान्य बनाने में सहायक होते हैं। इन प्रश्नो के अभ्यर्थियों के संदर्भ में दो आधार बनाए जा सकते है :—

(i) यदि आप अहिंदी भाषी क्षेत्र में हिंदी शिक्षण कार्य कर रहे हैं तो शिक्षणेत्तर प्रश्नो (नाम- प्रदेश, अनुभव, क्यो निष्णात/पारंगत/गहन में प्रवेश लिया आदि-आदि) के पश्चात् सामान्य प्रश्न इस प्रकार के हो सकते है :—

(अ) अब तक आप जो अध्यापन कार्य कर रहे थे, इस पाठ्यक्रम के पश्चात् उसे किस प्रकार और अधिक उपयोगी/सुधार सकते हैं ?

(ब) (व्यतिरेकी अध्ययन/विश्लेषण को ध्यान में रखकर) पूछा जा सकता है कि ध्वनि स्तर, शब्द स्तर और वाक्य स्तर पर हिंदी शिक्षण में क्या और कैसे सुधार कर सकेंगे ?

(स) यदि आपको अंग्रेजी भाषी को हिंदी सिखानी हो तो किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखेंगे।

(द) इस प्रकार के और भी प्रश्न हो सकते हैं (आपके लघु शोध प्रबंध / परियोजना / आपकी भाषा व हिंदी भाषा के अंतर में संबंधित) इन प्रश्नों के बाद प्रश्नोत्तरमाला के प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

(11) यदि आप साक्षात्कार हेतु बुलाए जा रहे हैं तो अभ्यर्थियों के संदर्भ में पुन: दो आधार बन सकते हैं —

(अ) यदि आप अध्ययन कार्य पूर्ण करके साक्षात्कार में जा रहे हैं। (इससे पूर्व कहीं कार्य नहीं किया है)

(ब) कहीं किसी पद (अनु० सहायक, लेक्चरार, रीडर आदि-आदि) पर पहले कार्यरत हैं।

प्रथम स्थिति में शैक्षिकेत्तर प्रश्नों के बाद प्रश्न हो सकते हैं :—

—आपके पेपर्स कौन से थे ?

—सबसे अच्छा लगने वाला विषय कौन सा था ?

—यह विषय आपको क्यों अच्छा लगता था ?

—यदि यही विषय अच्छा लगता था तो उसमें

—नम्बर कम (यदि हैं तो) क्यों हैं ?

—भाषा विज्ञान में एम० ए० करने का कारण ?

लघु शोध प्रबंध का विषय सामने ध्यान रखें उससे सम्बन्धित सभी प्रश्नों पर पूर्ण जानकारी आपको स्वयं करनी होगी। ध्यान रहे कि प्रश्नकर्ता को उत्तरों के माध्यम से मात्र यह जानना होता है कि आपने जो अनुसंधान किया है उसमें आपकी कितनी गहराई है ? यहाँ यह ध्यान देना अति आवश्यक है कि प्रश्नोत्तर काल में यदि आपका प्रश्नकर्ता से किसी बात पर मतभेद है तो आप उन्हें स्वस्थ तर्कों से संतुष्ट करने का प्रयास करें, किसी भी दशा में अपना संतुलन न खोएँ। आपके दयनीय बनने से वह आपसे कोई रियायत नहीं करेगा। यह भी न भूलें कि वह आपको अपने तर्क से भटकाने का प्रयास नहीं करेगा।

दूसरी स्थिति में शैक्षिकेत्तर प्रश्नों के बाद प्रश्न हो सकते हैं—

—वर्तमान में आप किस [illegible] में पदस्थ हैं ?

—किस योजना पर कार्य कर रहे हैं ?

—योजना के संबंध संभावित सभी प्रश्नों के संबंध में उत्तरों की पूर्ण जानकारी।

—पी० एच० डी० की विस्तृत जानकारी।

—यदि शोध पत्र प्रतुस्त किए है या प्रकाशित हुए है तो उनकी पूर्ण एव स्पष्ट जानकारी ।

इन प्रश्नों पर आपकी पकड ऐसी होनी चाहिए ताकि प्रश्नोत्तर काल मे प्रश्नकर्ता को लगे आप वास्तव मे कुछ जानते है, कुछ कर सकते हैं ।

और इसके बाद इस प्रश्नोत्तरमाला के प्रश्न पूछे जा सकते है ।

यहाँ एक बार पुन: स्पष्ट कर दूं कि 'अच्छा साक्षात्कार होना' और 'आवेदन किए गए पद के लिए चयन होना' दो अलग-अलग बाते हैं । विशेषकर वर्तमान सदर्भ मे ।

प्रश्नोत्तरमाला

प्रश्न—भारोपीय भाषाओं के दो वर्गों 'सतम्' और 'केंटुम' मे से हिंदी किस वर्ग मे आती है ?

उत्तर—'सतम्' वर्ग ।

प्रश्न—भारत में बोली जाने वाली भाषाएँ कितने भाषा परिवारो की है ?

उत्तर—चार (i) भारतीय आर्य भाषा परिवार—हिंदी, सिंधी आदि ।

(ii) द्रविड़ भाषा परिवार—तमिल, तेलुगु आदि ।

(iii) आस्ट्रिक भाषा परिवार की मुण्डा शाखा—कोरकू (यह म० प्र० की जनजाति की बोली है)

और (iv) चीनी तिब्बती और तिब्बती-बर्मी उपशाखाओ की नागा भाषाएँ ।

प्रश्न—भारत के संविधान मे स्वीकृत कितनी भाषाएँ है ?

उत्तर—पंद्रह—तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, हिंदी, सिंधी, गुजराती, मराठी, उर्दू, संस्कृत, असमिया, कशमीरी, उडिया, बंगला और पंजाबी ।

प्रश्न—संविधान में स्वीकृत अंतिम भाषा कौन सी है ? और उसे संविधान मे कब स्वीकृति मिली ?

उत्तर—सिंधी, 1967, 7 अप्रैल ।

प्रश्न—संविधान मे स्वीकृत उक्त पंद्रह भाषाओं में से किन भाषाओ का भारत में भाषाई क्षेत्र नही है ?

उत्तर—सिंधी, संस्कृत और उर्दू ।

प्रश्न—भारतवर्ष में बोली जाने वाली भाषाओं को कितनी लिपियो मे लिखा जाता है ?

उत्तर—दस लिपियों में—(i) देवनागरी [हिंदी, सिंधी और मराठी के अलावा नेपाली और डोगरी (पंजाबी) के लिए भी नागरी लिपि स्वीकृत हो चुकी है ।] (ii) बंगला [असमिया और मणिपुरी के लिए भी] (iii) पंजाबी, (iv) गुजराती, (v) उड़िया, (vi) कन्नड [तेलुगु के लिए भी] (vii) तमिल, (viii) मलयामलम, (ix) उर्दू (सिंधी और कश्मीरी के लिए भी) और (x) रोमन (पूर्वांचल की भाषाओं के लिए)

प्रश्न—संविधान में स्वीकृत कौन सी भाषा है जो अब तक दो लिपियों में लिखी जाती है ?

उत्तर—सिंधी भाषा—उर्दू और देवनागरी लिपि में ।

प्रश्न—उक्त दस लिपियों के मुख्य स्रोत कितने हैं ?

उत्तर—दो—ब्रह्मी और अरबी लिपि।

प्रश्न—किस भारतीय भाषा में अंग्रेजी की तरह पदक्रम (S-V-O) है ?

उत्तर—कश्मीरी में ।

प्रश्न—किस भारतीय भाषा में मध्य प्रत्यय की प्रवृत्ति है ?

उत्तर—आस्ट्रिक वर्ग मुंडा परिवार की संथाली भाषा में—मझि (मुखिया ए. व.) +/-प-/=मपझि (मुखिया ब० व०) ।

प्रश्न—किन भारतीय भाषाओं में संस्कृत की तरह तीन लिंग मिलते हैं ?

उत्तर—गुजराती और मराठी में (ये लिंग संस्कृत की तरह व्याकरणिक (रूप के आधार पर) है न कि द्रविण भाषाओं की तरह तार्किक (अर्थ के आधार पर)] ।

प्रश्न—संविधान में स्वीकृत वे कौन सी भाषाएँ हैं जो उर्दू लिपि में लिखी जाती हैं ?

उत्तर—सिंधी, कश्मीरी और उर्दू ।

प्रश्न—किन भारतीय भाषाओं में अंतः स्फुटित ध्वनियाँ मिलती हैं ?

उत्तर—सिंधी, कश्मीरी और लहंदा ।

प्रश्न—भारतीय भाषाओं पर कार्य करने वाले विदेशी विद्वानों के नाम बताइए ?

उत्तर—जॉन बीम्स और जार्ज ग्रियर्सन ने लगभग सभी भाषाओं पर कार्य किया है । इनके अलावा

सिंधी भाषा पर कैप्टन स्टैक, ई० टम्प

बंगला भाषा पर नैथिल ब्रौमी, येट्स तथा बंगलादेश के मोहम्मद, क्यू. डी.

तमिल—काल्डवैल, तेलुगु-कैली, मलयालम-कैम्पिल और कन्नड़ पर गुन्डर्ट ने कार्य किया है ।

—हिंदी व्याकरण लिखने वाले विदेशी विद्वान कौन से हैं ?
—कैलॉग, एच एस.—ग्रामर ऑफ हिंदी लैंग्वेज।
मैग्रेगर, आर एच —आऊट लाइन्स ऑफ हिंदी ग्रामर।
दीमशित्स, ज म —हिंदी व्याकरण की रूप रेखा।
—राष्ट्रभाषा और राज भाषा में क्या अंतर है ?
—राष्ट्र की पहचान की भाषा राष्ट्रभाषा होती है तथा काम-काज की भाषा को राज भाषा कहते है।
—स्पष्ट कीजिए—
Alien language, Vernacular language, isolating language, Aglutinating language, Inorganic language, pan Indian language, Cognate languages, non-cognate languages, Inter-language, Metalanguage, Para language, Contemparory languages and child language.
—Alien language विदेशी भाषा को कहते हैं और Vernacular language देशीय भाषा को कहते हैं। Isolating language वह भाषा होती है जिसमें प्रत्ययों का योग नहीं होता है जिसमें प्रत्ययों का योग होता है उसे Agglutinating language कहते है। भाषा के अखिल भारतीय रूप को Pan Indian language कहा जाता है। हिंदी pan Indian language है।
Cognate Languages समान स्रोतीय भाषाएँ तथा Non-Cognate Languages जो समान स्रोतीय भाषाएँ न हों। Inter Language की संकल्पना अन्य भाषा शिक्षण प्रक्रिया मे की गई है। सिलेकर द्वारा दिए इस नाम को पिटकार्डर ने इडिओसिंक्रेटिक डायलेक्ट कहा है तथा सामान्य रूप से इसे संक्रांतिपरक भाषा (Transitional Language) कहा जा सकता है। अन्य भाषा सीखते समय सीखने की प्रक्रिया के संदर्भ की भाषा को Inter Language कहते है। Meta Language 'निरूपक भाषा' की संकल्पना कोपेनहागेन सम्प्रदाय [Glossmatic के जन्मदाता] के भाषाविद् येल्मस्लव की है। उनके अनुसार निरूपक भाषा या अधिभाषा उस भाषा को कहते हैं जिसके द्वारा भाषा पर विचार किया जाता है। Language of Language is metalanguage.
Paralanguage भाषा का व्यवहार करते समय वक्ता Gestures 'हाव-भाव द्वारा संप्रेषण को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। यह हाव-भाव की भाषा ही पैरा लैंग्वेज कहलाती है। Contemporary Language एक ही काल की भाषाएँ समकालिक भाषाएँ Contemporary Languages कहलाती है।

Child Language 4-5 वर्ष की आयु मे स्कूल जाने से पूर्व बच्चा अपनी शब्दावली और व्याकरण के अनुसार जो भाषा बोलता है, बाल भाषा Child Language कहलाती है।

प्रश्न—विश्व मे बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या कितनी है ?

उत्तर—लगभग 2,796।

प्रश्न—नाम पद प्रक्रिया (Declension) और क्रिया पद प्रक्रिया (Conjugation) मे अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—ये दोनो पद निर्माण प्रक्रियाएँ है। जब नाम शब्दो मे (संज्ञा आदि शब्दो में) रूप साधक प्रत्यय (Inflectional suffixes) लगकर पद बनते हैं तो ये पद, नाम रूप (Declined) कहलाते हैं। इसी प्रकार क्रिया रूपो मे ये प्रत्यय जब जुडते है तो क्रिया पद (Conjugated) कहलाते हैं।

प्रश्न—कुछ भारतीय भाषा विज्ञान शोध पत्रिकाओं के नाम बताइए।

उत्तर—(i) गवेषणा—केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा। (ii) भारतीय साहित्य—क. मु. हिंदी एवं भाषा विज्ञान विद्यापीठ, आगरा। (iii) भाषा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली। (iv) इण्डियन लिंग्विस्टिक्स—डेकन कालेज, पूना। (v) गगनाञ्चल—भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् नई दिल्ली।

प्रश्न—कुछ विदेशी भाषा विज्ञान शोध पत्रिकाओं के नाम बताइए।

उत्तर—(i) An Anthropological Linguistics—Indiana University

(ii) ACTA Linguistica—Budapest

(iii) Glossa—An International Journal of Linguistics—Canada

(iv) International Journal of American Linguistics—Chicago

(v) I R A L—International Review of Applied Linguistic in Language teaching—Heidelberg

(vi) Journal of Linguistics—Cambridge University

प्रश्न—भाषा शिक्षण हेतु सामग्री निर्माण के लिए उपयोगी पुस्तकें कौन-कौन सी है ?

उत्तर—R. Lado—Linguistic across culture.
Language Testing.

Mackey—Language Teaching Analysis.

C. C. Fries—Teaching and Learning English as a Foreign—Language,

Weinreich, U—Languages in contact.

लक्ष्मी नारायण शर्मा—शिक्षण सामग्री निर्माण, प्रक्रिया और प्रयोग।
लक्ष्मी नारायण शर्मा—शिक्षण सामग्री निर्माण, सिद्धांत और प्रविधि।
हागेन—Problems of Bilingualism Description.
Wilgum rivers—Teaching Foreign Language skills.

प्रश्न- दोष (lapse), गलती (Mistake) और त्रुटि (Error) मे अतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भाषा शिक्षण मे अन्य भाषा भाषी जो गलतियाँ करता है भाषा विज्ञान उन गलतियो के तीन वर्ग करता है, उन्हे अलग-अलग नाम दिए गए है—प्रथम प्रकार की गलतियाँ व्यवहार सदर्भित गलतियाँ होती है जिनका सबध अव्यक्त व्याकरण से न होकर उस व्याकरण के व्यवहार मे लाने के समय की गई/हुई असावधानी से रहता है [जैसे प्राय हम लोग कहते हैं अरे ! भाई जुबान ही तो है फिसल गई] इस प्रकार की गलती को दोष (lapse) कहा गया है।

दूसरे प्रकार की गलतियाँ अज्ञान संदर्भित गलतियाँ होती हैं जिनका संबंध सीखी जाने वाली भाषा के नियमो की सही जानकारी के अभाव मे होने वाली गलतियो से होता है। जैसे—अन्य भाषा सीखने वाला यदि आदर-सूचक शब्द 'आप', 'आइए' का प्रयोग जान भी लेता है तो भी यदि वह यह नही जानता कि हिंदी समाज किसे आदर की दृष्टि से देखता है और किसे नही, उस दशा में वह कह सकता है—नौकर जी बैठिए/पधारिए।

तीसरे प्रकार की गलतियाँ अंतर भाषा (Inter-Language) सदर्भित गलतियाँ होती हैं। ये अशुद्ध प्रयोग अतर भाषा की अपनी व्यवस्था से संबधित होति हैं। वास्तव में अन्य भाषा शिक्षार्थी के लिए ये ही वास्तविक त्रुटियाँ होती हैं। [Contrastive Analysis जो इन त्रुटियो का विश्लेषण नहीं कर पाता था आगे चलकर Error Analysis ने इन त्रुटियो की ओर ध्यान आकर्षित किया] इन्ही त्रुटियों को ध्यान मे रखकर शिक्षक शिक्षण सामग्री व पाठो का निर्माण करता है जिसके फलस्वरूप ही भाषा सीखने की प्रक्रिया के सही परिणाम निकल सकते है।

प्रश्न—हिंदी व्याकरण पर उपलब्ध पुस्तकें कौन-सी हैं ?

उत्तर—

पुस्तक	लेखक
हिंदी व्याकरण	—प० कामता प्रसाद गुरु
हिंदी व्याकरण की रूपरेखा	—दीमशित्स, ज० म०
हिंदी शब्दानुशासन	—वाजपेयी, किशोरीदास
ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिंदी	—शर्मा, आयेन्द्र
आधुनिक हिंदी व्याकरण	—अग्रवाल, कैलाशचन्द्र
आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना	—प्रसाद, वासुदेव नंदन

ए ग्रामर आफ हिंदी लैंग्वेज —कैलास, एच० एस०
आउट लाइन आफ हिंदी ग्रामर —मैग्रेगर, आर० एस०
रिफरेंस ग्रामर आफ हिंदी —बहल, के० सी०

-हिंदी मे स्वनिमो की सख्या कितनी है ?
-40→10 स्वर स्वनिम+30 व्यजन स्वनिम=40 (मतभेदो के आधार पर एक-दो संख्याएँ घट / बढ सकती है।)

-भाषाविज्ञान मे कितने त्रिकोणो से परिचित हैं ?
दो त्रिकोण —एक स्वर त्रिकोण (Vovel Triangle)
दूसरा—अर्थ त्रिकोण (Semio Triangle)।
स्वर त्रिकोण स्वरों के उच्चारण स्थान का निर्धारण करने के लिए हैलवेग ने दिया और Semio Triangle अर्थ निर्धारण करने के लिए सन् 1952 Ogden और Richards द्वारा प्रतिपादित किया गया है। Semio Triangle अर्थ त्रिकोन मे दिखाया गया है कि शब्द व वस्तु के बीच प्रत्यक्ष सबंध नही है बल्कि अर्थ के माध्यम से दोनो मे सबध स्थापित होता है।

-मानस्वर और उनके प्रकार बताइए।
मानस्वर (Cardinal Vowels) काल्पनिक स्वर लिपि चिह्न हैं। किसी भी भाषा मे उच्चारण स्थान निर्धारित करने का पैमाना है। प्रधान मान स्वर (Primary Cardinal Vowels) और गौण मान स्वर (Secondary Cardinal Vowels) इनके दो प्रकार माने गए है। इनमे मुख्य अंतर है—प्रधान मान स्वर के अग्र स्वरों के उच्चारण में होठो की स्थिति अवृत्ताकार और पश्च स्वरों के उच्चारणों मे होठो की स्थिति वृत्ताकार होती है जबकि गौणमान स्वरो के अग्रस्वरो के उच्चारण मे होठो की स्थिति वृत्ताकार और पश्च स्वरो के उच्चारणो मे होटो की स्थिति अवृत्ताकार होती है।

--स्वनिम विज्ञान (Phonemics) और स्वन विज्ञान (Ponetics) मे क्या अतर है ?
-स्वन विज्ञान सामान्य भाषा ध्वनियो के अध्ययन का क्षेत्र है जबकि स्वनिम विज्ञान भाषा विशेष की भाषण ध्वनियों का क्षेत्र माना गया है।

--स्वन (Phone) और स्वनिम (Phoneme) का अतर स्पष्ट कीजिए।
-वास्तव मे स्वनो का ही भाषाओ में प्रयोग होता है। इनका अस्तित्व भौतिक यथार्थ या वास्तविक होता है। स्वनिम का अस्तित्व तो मानसिक यथार्थ होता है। स्वनिम स्वनो (सस्वनों) का समूह मात्र होता है।

प्रश्न—हिंदी में 'ने' का प्रयोग कहाँ होता है ?

उत्तर—'ने' का प्रयोग कर्ता के साथ होता है जब क्रिया सकर्मक हो तथा वाक्य भूतकाल मे हो। [भूलना, बकना और बोलना सकर्मक है परतु ये अपवाद हैं इसलिए 'ने' का प्रयोग इनके साथ नही होता और नहाना छीकना, थूकना, खाँसना अकर्मक हैं परतु अपवाद होने के कारण इनके प्रयोग मे 'ने' का प्रयोग होता है] भूतकाल मे भी अपूर्ण भूत काल मे 'ने' का प्रयोग नही होता।

प्रश्न—विश्व के प्रथम ध्वनि शास्त्री कौन थे ?

उत्तर—रूसेलो (Rousselot)। फ्रांसीसी सम्प्रदाय का प्रमुख कार्य ध्वनि शास्त्र से ही था।

प्रश्न—'भारत एक भाषिक क्षेत्र' (India s a Linguistic area) का अर्थ क्या है ?

उत्तर—फ्रांसीसी विद्वान जी० एमेन्यू का यह कथन भारत के सदर्भ में एक महत्व-पूर्ण स्थापना कर गया है। भारत के हर प्रदेश मे हिंदी गीत, पद और फिल्मी गाने (पूर्वांचल मे सेनाओं का विस्तार आदि भी) हिंदी को समझने मे सहायक सिद्ध हुए है। अत यही कारण है कि प्रत्येक भारतीय हिंदी भाषा के स्वरूप मे परिचित है। जी० एमेन्यू ने भारत की भाषाओं की समानता के आधार पर 'भारत एक भाषिक क्षेत्र' कथन की स्थापना कर दी। उनके अनुसार भारतीय भाषाओ मे ध्वनि, शब्द, व्याकरण लिपि, वर्तनी स्तरों पर समानता दृष्टिगोचर होती है। यही समानता विज्ञान और टक्नोलाजी के क्षेत्र मे भी दिखाई देती है। इसीलिए टी० वी०, रडार, कंप्यूटर शब्द सभी सभी भाषाओ मे इसी रूप मे मिलते हैं।

प्रश्न—क्या सभी भाषाओ का विचार करके बताया जा सकता है कि कम से कम और अधिक से अधिक स्वनिमो की सख्या कितनी हो सकती है ?

उत्तर—भाषा विज्ञान के विशेषज्ञों ने सर्वेक्षण व अनुसधान से पाया कि विश्व की समस्त भाषाओ मे कम से कम 15 या 20 और अधिक से अधिक 50 या 60 स्वनिम हो सकते है। विश्व की कोई ऐसी भाषा नही है जिसमें 15 से कम और 60 से अधिक स्वनिम हो। इस प्रकार वे औसतन स्वनिमो की सख्या 30 मानने के पक्ष मे हैं।

प्रश्न—न्यूनतम युग्म (minimal pair), संदिग्ध युग्म (suspicious pair) और न्यून कल्प युग्म (analogous pair) के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—न्यूनतम युग्म किसी एक भाषा के दो शब्दो के युग्म को कहते हैं जिनमें प्रयुक्त ध्वनियों की समान वातावरण मे घटित कम से कम (एक) ध्वनि

अलग हो (शेष ध्वनियों का समान होना आवश्यक है।) इस अलग ध्वनि मे अर्थ भेदक गुण होना चाहिए। चूँकि न्यूनतम ध्वनि (एक) अलग होती है। जैसे—काल—खाल, मेला—मैला, घास—घाट आदि।

संदिग्ध युग्म किसी भाषा के ऐसे शब्द युग्म होते हैं जिनमे एक ध्वनि के स्वनिम या संस्वन होने का संदेह हो। अपरिचित भाषा मे स्वनिम छाँटते वक्त न्यूनतम युग्म की आवश्यकता होती है लेकिन ऐसे युग्म जिनका परीक्षण से पूर्व न्यूनतम युग्म होना संदेहजनक होता है, संदिग्ध युग्म (suspicious pair) कहलाते है। संदिग्ध युग्म न्यूनतम युग्म हो भी सकते है और नही भी। न्यूनकल्प युग्म एक भाषा के दो ऐसे युग्म जो लगभग न्यूनतम युग्म की तरह हों। जैसे—'कील—खाल'।

रंजक क्रियाएँ—

-संयुक्त क्रियाओ मे प्रयुक्त होने वाली दूसरी क्रिया कोशीय अर्थ रहित होती है वह केवल पहली क्रिया को अर्थ को उभारती है या अधिक स्पष्ट करती है। इसे रंजक क्रिया (Intensifier / Explicater / Vector Verb) कहते है। 'बैठ गया' मे 'गया' कोशीय अर्थ (जाना) नही है अपितु यह 'बैठना' मुख्य क्रिया के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करती है। उठना, बैठना, लेना, देना, आना, जाना, डालना, निकालना, पड़ना और मारना रंजक क्रियाएँ हैं। इस संबंध मे यह आवश्यक नही है कि उक्त सभी रंजक क्रियाएँ, सभी मुख्य क्रियाओ के साथ प्रयुक्त हो। जैसे—'उठना' के साथ 'बैठना' रंजक क्रिया संभव है (उठ बैठा) परंतु 'चलना' के साथ 'बैठना' रंजक क्रिया संभव नही है (चल बैठा*)। रंजक क्रियाओ के कारण संयुक्त क्रियाओ में मात्र मुख्य क्रिया ही कोशीय अर्थ लिए होती है। इसलिए संयुक्त क्रियाएँ एकध्रुवीय (monopolar) कहलाती हैं।

रेखीय क्रियाएँ (Linear Verbs) और क्षणपरक क्रियाएँ (Punctual Verbs) मे क्या अंतर है ?

दोनो ही कोशीय क्रियाएँ होते हुए कुछ अंतर रखती हैं।

रेखीय क्रियाएँ वे क्रियाएँ हैं जिनसे अवधि परक कार्य-व्यापार सूचित होता है, अर्थात् व्यापार मे काल की अवधि का निर्देश मिलता है, जैसे—'चलना' और ढूंढना।

मैं एक दिन तक चला।

मैंने कल दिन भर बच्चे को ढूंढा।

इन वाक्यो मे 'चलना' और 'ढूंढना' क्रियाओ को होने मे काल की एक अवधि व्यय हुई।

क्षणपरक क्रियाएं वे क्रियाएं हैं जिनमें कार्य व्यापार काल क्षण क्षण तक ही सीमित होने की सूचना देता है, जैसे पहुँचना और मिलना।

मैं अपने घर पहुँचा।

मेरा दोस्त निदेशकजी से मिला।

प्रश्न—प्रतिलेखन (Transcription) के प्रकार और भेद बताइए ?

उत्तर—प्रतिलेखन / लिप्यकन, किसी पाठ का श्रवण कर उसका निर्धारण लिपि संकेतों में लेखन करने को कहते है। यह दो प्रकार का होता है—

(i) ध्वन्यात्मक लिप्यकन / प्रतिलेखन (Phonetic Transcription)

(ii) स्वनिमीय लिप्यकन / प्रतिलेखन (Phonemic Transcription)

प्रथम को सूक्ष्म/सकीर्ण (Narrow Transcription) और दूसरे को स्थूल / प्रशस्त (Broad Transcription) भी कहते है।

सूक्ष्म / सकीर्ण प्रतिलेखन में प्रत्येक सस्वन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म भेद के साथ लिखा जाता है। [यह Transciption भाषा के विश्लेषण हेतु किए गए 'सामग्री सकलन' कार्य हेतु प्रयोग किया जाता है] जबकि स्थूल / प्रशस्त प्रतिलेखन अधिक सूक्ष्म भेदो को न लेकर मोटे-मोटे भेदो के साथ लिखा जाता है।

प्रश्न—अतःकेंद्रिक (endocentric) और बहिष्केंद्रिक (exocentric) क्या है ?

उत्तर—ये संरचनाओं के विश्लेषण (I. C. analysis) में प्रयुक्त होती है। ब्लूमफील्ड की इसी स्थापना के अनुसार—

अतःकेंद्रिक रचना वह रचना है जिसमे पूरी रचना एक अवयव द्वारा प्रतिस्थापित हो सके जैसे—'**केंद्रीय हिंदी संस्थान के अध्यापक** शिक्षण कार्य मे प्रवीण होते है।' मे रेखांकित अतःकेंद्रित रचना है क्योंकि यह एक अवयव 'अध्यापक' द्वारा प्रतिस्थापित हो सकती है। जो रचनाएँ अतःकेंद्रिक नहीं होती उन्हें बहिष्केंद्रिक (exocentric) कहते हैं जैसे 'वह गया' में कोई भी अवयव इस रचना को प्रतिस्थापित नही कर सकता। इसी प्रकार 'जेब मे', 'हाथों से', 'घर पर' आदि रचनाएँ बहिष्केंद्रिक रचनाएँ हैं।

प्रश्न—लिंग (Gender) और यौन (Sex) मे क्या अंतर है ?

उत्तर—Gender और Sex में मूलतः कोई अंतर नहीं है, परंतु Gender व्याकरणिक शब्दावली है जबकि Sex जैविक (Zoological) शब्दावली है। Sex का प्रयोग भाषा मे होता है जबकि Gender का व्याकरण में।

प्रश्न—अर्द्धस्वर (य, व) को अर्द्धस्वर ही क्यों कहा गया है ? अर्द्ध व्यंजन क्यों नही ?

उत्तर—यह सही है कि य, व अर्द्धस्वर के स्थान पर अर्द्ध व्यंजन भी कहे जा सकते हैं। इसके पक्ष में मेरा अपना विचार यह है कि ये न तो पूर्णतः स्वरों और न व्यजनों के गुण लिए हुए हैं परंतु इनमे व्यजन गुणों की अपेक्षा स्वरो गुणो का सामीप्य अपेक्षाकृत अधिक है। इसलिए इन्हें अर्द्ध स्वर ही कहा गया है।

प्रश्न—शब्द और अक्षर में क्या अतर है।

उत्तर—शब्द अक्षर से बड़ा होता है। शब्द एक अक्षर का भी हो सकता है और एक से अधिक अक्षरो का भी।

प्रश्न—भारतीय वैयाकरणो के गुरु श्री कामता प्रसाद गुरु माने जाते हैं। आधुनिक भाषा विज्ञान के पिता कौन कहे जाते है ?

उत्तर—आधुनिक भाषाविज्ञान के पिता डी० सस्यूर (D. Sausure) माने जाते हैं। ये फ्रासीसी विद्वान (डा भोलानाथ तिवारी के अनुसार स्विस विद्वान) थे।

प्रश्न—भाषा विश्लेषण के नए माडल्स और उनके जन्मदाताओ के नाम बताइए।

उत्तर—(i) रूपातरण व्याकरण (Transformational Grammar) —नोम चामस्की

(ii) स्तरपरक व्याकरण (Startificational Grammar) —सिडनी लैंब

(iii) संरचनात्मक व्याकरण (Structural Grammar) —ब्लूमफील्ड, बोआज, सपीर

(iv) कारक व्याकरण (Case Grammar) —फिल्मोर

(v) व्यवस्थापरक व्याकरण (Systemic Grammar) —एम. ए. के हैलिडे

(vi) निकटस्थ अवयव (I. C. Analysis) सी. सी. फ्रीज

(vii) वधिम विज्ञान (Tagmemics) —के. एल पाइक

(viii) भापिम विज्ञान (Glossematics) —येल्मस्लव

प्रश्न—तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative analysis) और व्यतिरेकी विश्लेषण (Contrastive analysis) मे क्या अतर है ?

उत्तर—तुलनात्मक विश्लेषण से भाषाओं के सामीप्य तथा reconstruction द्वारा Protoform की स्थापना की जाती है। साथ ही साथ स्रोत भाषा की जानकारी तथा परिवर्तन के नियमो का उद्घाटन। व्यतिरेकी विश्लेषण भाषा शिक्षण के लिए शिक्षण बिंदुओ को स्थापना तथा अनुवाद कला में सहायक।

न—अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान क्या है ?

तर—अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों का किसी लक्ष्य विशेष की प्राप्ति के संदर्भ में अनुप्रयोग है।

न—व्यतिरेकी विश्लेषण (Contrastive analysis) और त्रुटि विश्लेषण (Error analysis) में क्या अंतर है ?

तर—दोनों ही अन्य भाषा शिक्षण में सहायक है। संरचनात्मक भाषा विज्ञान और व्यवहारवादी मनोविज्ञान ने व्यतिरेकी विश्लेषण के सिद्धांत और पद्धति को जन्म दिया और बल भी। तो रूपांतरण भाषा विज्ञान और बुद्धिवादी मनोविज्ञान ने त्रुटि विश्लेषण के सिद्धांत और प्रणाली को बल दिया। व्यतिरेकी विश्लेषण सीखने वाले की मातृभाषा के व्याघात की बात करता है जब कि त्रुटि विश्लेषण यह मानता है कि मातृभाषा के व्याघात के अलावा अन्य व्याघात—शिक्षण स्थिति, शिक्षण सामग्री, शिक्षण प्रविधि आदि-आदि वाले भी शिक्षार्थी की शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करती है। इस प्रकार व्यतिरेकी विश्लेषण शिक्षक और शिक्षण सामग्री को केंद्र बनाता है जबकि त्रुटि विश्लेषण का केंद्र शिक्षार्थी होता है।

श्न—सार्वभौम व्याकरण (Universal Grammar), विवरणात्मक व्याकरण (Specific Grammar) और शैक्षिक व्याकरण (Padagogical Grammar) का अंतर समझाइए ?

र—सार्वभौम व्याकरण, वह वैज्ञानिक व्याकरण है जो 'संभाव्य भाषा' की 'संभाव्य रचना' का पता लगाता है जबकि विवरणात्मक व्याकरण (भाषा विवरण की सिद्धि के रूप में भाषा विशेष का व्याकरण) किसी भाषा विशेष की 'संभाव्य संरचना' संबधी वैज्ञानिक व्याकरण है। शैक्षिक व्याकरण भाषा विशेष के वैज्ञानिक व्याकरण का शैक्षिक उद्देश्य से रूपांतरित और पुनर्लिखित रूप है। Specific Grammar is an applied form of Universal Grammar.

भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतो की सिद्धि के रूप मे सार्वभौम व्याकरण, भाषा विवरण की सिद्धि के रूप मे भाषा विशेष का व्याकरण और विद्यार्थी की अधिगम प्रक्रिया तथा अध्यापक की शिक्षण विधि की सिद्धि के रूप मे शैक्षिक व्याकरण की अपनी अलग-अलग सत्ता है।

शैक्षिक व्याकरण Padagogical Grammar वह ग्रामर है जो परंपरागत नियमो / परिभाषाओं से बँधा हुआ न हो बल्कि वह विद्यार्थी की स्वाभाविक प्रक्रिया के अनुरूप होना चाहिए। अत. कह सकते हैं कि शिक्षार्थी की सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया के अनुरूप ढला व्याकरण ही शैक्षिक व्याकरण है जो सर्वाधिक सक्षम और समर्थ है।

– Syntagmatic और Paradigmatic relations का क्या अर्थ है ?

– वाक्य में पंक्तिशः स्थित अंशों का अन्वय (Horizontal / linear relation) वाक्य 'राम जाता है' में तीनों पदों का संबंध Syntagmatic है। वाक्य में एक अंश का उसके विविध परिवर्तित रूपों के साथ संबंध Paradigmatic relation कहलाता है। जाता→गया, जा रहा, गए आदि।

– लांग, परोल से क्या अर्थ समझा जाता है ? इसका Language competance और Language performance में क्या संबंध है ?

– आधुनिक भाषा विज्ञान के पिता डी सस्यूर ने Lang और Perol की संकल्पना रखी। इसी को नोम चॉमस्की ने Language Competence और Language performance कहा। L. C का संबंध भाषा विषयक ज्ञान से है जब कि L. P. का संबंध भाषा के वास्तविक प्रयोग से। भाषा की सत्ता मानसिक (Competence) है और वाक् की सत्ता भौतिक (Performance) है।

– सीमित कोड और असीमित कोड का अंतर ?

– इन शब्दों की संकल्पना समाज भाषाविद् Bernstein B. ने 1971 में रखी। अपनी पुस्तक 'Language and Role' में उसने लिखा कि निम्न वर्ग के बालक सीमित कोड व मध्यम वर्ग के बालक असीमित कोड का प्रयोग करते हैं। प्रथम वर्ग की भाषा सरल व स्थूल वस्तुओं तक सीमित रहती है जबकि विस्तृत कोड (द्वितीय वर्ग) की भाषा सूक्ष्म, लचीली और सार्थक होती है। इसमें जटिल, दुरूह अभिव्यक्तियों को स्पष्ट करने का सामर्थ्य होता है।

– पिजिन और क्रिओल का भेद स्पष्ट करें।

– मातृभाषा के व्याघात के कारण अन्य भाषा की संरचना के बिगड़े हुए रूप को पिजिन कहते हैं। यदि इस बिगड़े हुए रूप को सामाजिक मान्यता प्राप्त हो जाती है तो इसी पिजिन को क्रिओल कहते हैं।

– भाषिम विज्ञान (Glossmatics) क्या है ?

अभिव्यक्ति और कथ्य (Expression and content) का अध्ययन ही भाषिम विज्ञान है। भाषाविद् सस्यूर ने भाषा को 'form' स्वीकारा है न कि Substance। हेल्मस्लेव ने कहा—भाषा संकेतों की व्यवस्था है तथा संकेत, अभिव्यक्ति व कथ्य के योग से बनते हैं जब कि सस्यूर संकेत, अभिव्यक्ति और कथ्य के संबंधों को मानते हैं।

मनोभाषा-विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान और भाषा-विज्ञान का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भाषा विज्ञान भाषा की सरचना पर विचार करता है और समाज भाषा विज्ञान समाज के परिप्रेक्ष्य मे भाषा पर तो मनोभाषा विज्ञान भाषा के मानसिक पक्ष का अध्ययन विश्लेपण करता है।

प्रश्न—प्रकरणार्थ विज्ञान (Pragmatics) क्या है ?

उत्तर—अर्थ विज्ञान से सबधित विश्लेषण क्षेत्र है। इसका अस्तित्व 1960 के बाद का है। बच्चा जब पिता से एक रुपए की माँग करता है तो पिता द्वारा शाम को रुपया देने की बात कहने के पश्चात्, शाम को पुन. बेटा रुपए माँगने के लिए कहता है—पिताजी ! 'शाम हो गई है।' यहाँ 'शाम होना' का प्रकरणार्थ है 'एक रुपया दो' इसी के अध्ययन को Pragmatic कहते है। प्रकरणार्थ विज्ञानी है—गज़डर, कोल और लेविन्सन।

प्रश्न—अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान (Applied Linguistics) क्या है उनके प्रयोग क्षेत्र कौन-कौन से है ?

उत्तर—किसी क्षेत्र विशेष मे, अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, भाषा वैज्ञानिक सिद्धातो का अनुप्रयोग ही अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान (applied linguistics) है।

भाषा शिक्षण के सदर्भ मे कह सकते है कि साध्य (शिक्षार्थी की अधिगम प्रक्रिया, और साधन (अध्यापक / शिक्षक की शिक्षण विधि) भाषा और भाषा प्रयोक्ता के घेरे मे आ सिमटते है। इसे अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान के प्रयोग का सीमित क्षेत्र कहा जा सकता है।

विधा विशेष के संदर्भ मे—कोश विज्ञान, अनुवाद कला, शैली विज्ञान और वाक् चिकित्सा विज्ञान मे प्रयोग, अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान का सामान्य क्षेत्र कहा जा सकता है, और

दो ज्ञान क्षेत्रों के मेल के सदर्भ में [भाषा विज्ञान + मनोविज्ञान = मनोभाषा विज्ञान और भाषा विज्ञान + समाजशास्त्र = समाज भाषा विज्ञान] मे प्रयोग, अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान का विस्तृत क्षेत्र कहा जा सकता है।

प्रश्न—सरचनात्मक भाषा विज्ञान के विद्वान कौन माने जाते है ?

उत्तर—ब्लूम फील्ड, बोआज, सपीर, हॉकिट, ब्लाक एव ट्रेगार, बेजामिन एलमन, वेल्सापिकेट, ए. ए. हिल, आर. ए. हॉल, जॉन लियोन्स।

प्रश्न—भारतीय विद्वान जिन्होने विदेशी विद्वानो की प्रसिद्ध कृतियों का अनुवाद किया है, के नाम बताइए ?

उत्तर—प्रो. रमानाथ सहाय, ने ब्लूमफील्ड द्वारा लिखित 'लैंग्वेज' का तथा प्रो सत्यकाम वर्मा ने जॉन लियोन्स द्वारा लिखित 'थ्योरेटीकल लिंग्विस्टिक्स'

का अनुवाद हिंदी मे किया है जिनके नाम क्रमश भाषा और सैदधातिक भाषा विज्ञान' है ।

–ससार का सर्वप्रथम कोश कौन-सा है ? यह कब और कहाँ लिखा गया ?

– निघण्टु', यह भारत मे 3000 वर्ष पूर्व लिखा गया था ।

[इसके पश्चात् पाणिनि का 'धातु पाठ' कोश था जिसमे 2,000 धातुओ का सकलन था जिनका अर्थ निर्देश परवर्ती आचार्यों ने किया । इसके बाद 'गणपाठ' लिखा गया ।]

-अमर कोश रचयिता कौन और कब हुए ?

–अमर सिंह, ईसा की सप्तम शताब्दी मे हुए ।

–अध्येता कोशो के नाम बताइए ?

–शिक्षार्थी हिंदी-अंग्रेजी शब्द कोश—डॉ. हरदेव बाहरी ।

व्यावहारिक हिंदी अंग्रेजी कोश—डॉ तिवारी तथा डॉ. चतुर्वेदी ।

Advanced Learner's Dictionary of Current English—Hornby

An International Reader's Dictionary

Oxford Students Dictionary of Current English.

–हिंदी के बड़े और आदर्श माने जाने वाले कोश कौन-कौन से हैं ?

–मानक हिंदी कोश [हिंदी-हिंदी] पाँच भागों मे ।

—डॉ. रामचन्द्र वर्मा द्वारा संपादित

हिंदी शब्द सागर [हिंदी-हिंदी] ग्यारह भागों में ।

—डॉ. श्यामसुदर दास ।

अंग्रेजी-हिंदी कोश (एक उत्तम कोटि का कोश है)

—डॉ. कामिल बुल्के ।

–शब्दार्थ विज्ञान (Lexicology) और कोश निर्माण विज्ञान (Lexicography) का सबध स्पष्ट कीजिए ।

–कोश विज्ञान के दो भाग शब्दार्थ विज्ञान व कोश निर्माण विज्ञान हैं । प्रथम सैद्धान्तिक रूप और दूसरा उसका अनुप्रयुक्त रूप है ।

Lexicology का अर्थ है—Science of words.

Lexicography का अर्थ है—Writing of words.

इस प्रकार—Lexicology is the science of the study of words whereas Lexicography is the writing of the words in some concrete form, *i e.*, in the form of Dictionary.

–विश्व का सबसे बड़ा कोश कौन सा है ?

उत्तर—चाइनीज़ शब्द कोश—इसमे 170 पृष्ठो के 5020 खण्ड हैं ।

प्रश्न—अर्थ की समस्या को निर्धारित करने के तीन पहुँच मार्ग (approaches) कौन से सिद्धांतों के नामों से प्रसिद्ध हैं ?

उत्तर—Meaning as a thing

Meaning as an idea [Mentalistic theory]

Meaning as a behaviour [Behavioural/Casual theory]

इन तीनो सिद्धातो की कुछ अपनी सीमाएँ थी। इसलिए आगे चलकर 1952 मे Ogden and Richards द्वारा प्रतिपादित अर्थ त्रिकोण (Semio Trianlge) की सहायता से 'शब्द' और वस्तु को 'अर्थ' के द्वारा सबधित किया गया। इस सिद्धांत को—Theory of Abstraction / Theory of Signification / Referential theory of meaning कहते हैं।

प्रश्न—समय के आधार पर कोशो के वर्गीकरण में किस प्रकार के कोश हो सकते हैं ?

उत्तर—Diachronic और Synchronic Dictionaries, Diachronic Dictionaries मे Historical और Etymological Dictionary आती हैं। Synchronic के अतर्गत Gen. Dictionary और Special Dictionaries आती है।

प्रश्न—विश्व कोश / ज्ञान कोश (Encyclopedia) और भाषाई कोश (Linguistic Dictionary) में क्या अतर है ?

उत्तर—विश्व कोश, Non Lexical Dictionary होता है जबकि भाषाई कोश, Lexical Dictionary होता है। विश्व कोश बहुत बडा और सभी सूचनाओं से सबधित होता है जबकि भाषाई कोश भाषा के शब्दो (Lexical units) और उनकी सभी भाषा वैज्ञानिक विशेषताओं से सबंधित होता है।

प्रश्न—क्या किसी विश्व कोश का नाम जानते हैं ?

उत्तर—1. Encyclopaedia Americana 30 Volumes.

2. Encyclopaedia Britanica 10+20 Volumes.

दूसरे के प्रथम 10 भागो मे शेष 20 भागों की समुचित सक्षिप्त सूचना है।

प्रश्न—सामान्य कोश (General Dictionary) और अध्येता कोश (Learner's Dictionary) का अतर स्पष्ट करें।

सामान्य कोश में भाषा के सामान्य शब्द होते हैं जिसमें कि सामान्य भाषा के संपूर्ण चित्र का वर्णन मिल जाता है। यह सामान्य प्रयोग कर्ता के लिए होता है। जबकि 'अध्येता कोश' किसी भाषा विशेष को सीखने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखा गया कोश होता है।

Synonym, Polyseme, Homonym, Homophone, Homograph Hyperonym, Hyponym, Antony, Paronym, Aeronym को स्पष्ट कीजिए।

रूपगत भिन्नता और अर्थगत एकता [जल, नीर, पानी] = Synonym, अर्थ में कुछ-कुछ समानता [टाँग—मनुष्य की, कुर्सी की....] = Polyseme, रूपगत समानता, अर्थगत भिन्नता [कनक, कनक] = Homonym, ध्वनिगत समानता रूपगत, और अर्थगत भिन्नता [Night, Knight] = Homophone, रूपगत समानता ध्वनिगत और अर्थगत भिन्नता [Lead, Lead = लेड, लीड] = Homograph, किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला [फूल → गुलाब, गेंदा, चमेली] = Hyperonym इसे Super, ordinate भी कहते हैं।, किसी वर्ग का सदस्य [स्कूटर → वाहन के अंतर्गत आता है या गुलाब → फूल वर्ग के अंतर्गत आता है।] = Hyponym, रूप व ध्वनिगत समानता परंतु अर्थगत भिन्नता [कनक, कनक] = Paronym. [Homonym = Paronym यह शब्द साहित्य में प्रयुक्त होता है।], अर्थ की दृष्टि से विलोम [छोटा-बड़ा] = Antonym, विभिन्न वर्णाक्षरों (abbreviations से बना हुआ शब्द जो स्वतन्त्र शब्द के समान प्रयुक्त होता हो तथा जिन वर्णाक्षरों से वह बना हो, सामान्य रूप से लोग उन्हें भूल गए हों [PIN पिन → Postal Index Number, T. V. टी. वी. → Television, Radar भी इसी प्रकार का शब्द है।] = acronym.

–Components of Lexical meaning कौन से हैं ?

Designation, Connotation और Range of Application तीन Lexical meaning के Components हैं।

–Nesting और run-on का अर्थ भेद कीजिए।

–प्रविष्टि में प्रधान शब्द देने के पश्चात् उस शब्द से संबंधित अन्य जुड़ा हुआ शब्द। जैसे 'nested' मुख्य प्रविष्टि के बाद ~elements, ~entry, ~ items शब्द जुड़ना 'nesting' है। run on, वे शब्द जो प्रधान शब्द की सहायता से व्याकरण के सामान्य नियमों का अनुप्रयोग करते हुए प्रधान शब्द के बाद दिखाए जाएँ जैसे—Lexicography........ical..... ..ically.

प्रश्न—गुप्त भाषा (Argot), वृत्ति भाषा (Jargon / lingo), अभद्र (Vulgar), वर्जित शब्द (Taboo) और शिष्टेत्तर / गँवारू (Slang) मे भेद बताइए ?

उत्तर—चोरो की भाषा, गुप्त भाषा (argot), वृत्ति भाषा, व्यवसाय से सबधित शब्दावली / भाषा, अभद्र (Vulgar) गाली आदि युक्त भाषा, अशोभनीय, अमागलिक, शरीर के विशिष्ट अगो व क्रियाओ से सबधित शब्द जैसे दुकान बद करना, माहवारी आना / कपड़े आना / तथा गँवारू/ शिष्टेतर प्रयोग (Slang) जैसे तुम्हारा बाप।

प्रश्न—Loop Back, Skip और multiple nesting को समझाइए !

उत्तर—भाषा विश्लेषण का K L. Pike द्वारा प्रतिपादित Tagmemics एक क्षेत्र है जिसमे प्रयुक्त तीनों शब्दो का अर्थ है—

प्रत्येक निम्नस्तरीय संरचना, उच्चस्तरीय संरचना का घटक (Constituent) होती है। परतु कभी-कभी उच्चस्तरीय संरचना निम्नस्तरीय सरचना का घटक बन जाती है [John Waved, When he saw his friend] इसे Loop Back कहते हैं।

जब निम्नस्तरीय सरचना अपने ऊपर वाली सरचना को भी पार कर उससे ऊँचे स्तर का अग बन जाती है [The King of England's hat] तब इसे Skip कहा जाता है। तथा

जब कोई सरचना अपने स्तर के सरचक का अग बन जाता है [Mohan's mother's daughter's home] तब उसे multiple nesting कहते हैं।

प्रश्न—शून्यपद (Zeromorph), रिक्त पद, (Empty morph) सपृक्त पद (Portmanteau morph), समाविष्ट पद (Included morph) का अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—ऐसा पद जो मात्र अर्थ देता है रूपहीन होता है [fish+० ब. व.]= शून्य पद, child+r+en, ox+en में स्पष्ट है कि —en ब. व. पद है। यहाँ—r—रिक्त / निरर्थक पद हुआ, Walk से Walked बनता है। परतु take से taked न बनकर took बना है इस प्रकार took मे take+ed का अर्थ है। Bloomfield 'ए' के स्थान पर उ' को Substitutional alternant तथा Hockett इसे 'सपृक्त रूप' कहते हैं। इसी प्रकार के अन्य उदाहरण है—

mouse—mice [mouse+ब. व.]
radius—radii [radius+ब. व.]
जाना—गया [जाना+भूतकाल]

ऐसा पद जो किसी अन्य पद मे समाविष्ट होकर पदग्राम बन जाता है । जोकि भाषा में—hay—के साथ 'pa' incude होकर 'hapya' बनता है । यहाँ 'pa' Included morph हुआ ।

-सधि, समास और रूप स्वनिमिक परिवर्तन को स्पष्ट करे ।

-दो अक्षरों के मेल से विकार होने पर सधि कहा जाता है । [जब विकार नहीं होगा तो सयोग कहा जाएगा], दो या दो से अधिक शब्द मिलकर जब एक हो जाते हैं तो समास कहा जाता है । रूप स्वनिमिक परिवर्तन मे व्याकरणिक व ध्वनिगत दोनो परिवर्तन होते है ।

सधि ध्वनि विकार से सबधित है [डाक+घर=डाग्घर] तथा रूप स्वनिमिक परिवर्तन, ध्वनि और व्याकरण दोनों से सबधित होता है । [बहू+एँ=बहुएँ] ।

सयुक्त (Compound) और यौगिक (Conjuct) क्रियाओं मे भेद बतलाइए ?

-दो क्रियाओ के योग से बनने वाली ऐसी क्रियाएँ सयुक्त क्रियाएँ कहलाती हैं जिसमे प्रथम क्रिया का ही अर्थ होता है दूसरी क्रिया अपना कोशीय अर्थ खोकर मात्र प्रथम क्रिया के अर्थ को उभारती है । इसलिए इस दूसरी क्रिया को रंजक क्रिया [Intensifier / Explicator या Vector Verb] कहा गया है ।

दो क्रियाओं के योग मे बनने वाली ऐसी क्रियाएँ यौगिक क्रियाएँ कहलाती हैं जिसमें दोनों क्रियाओ का कोशीय अर्थ होता है । सयुक्त एवं यौगिक क्रियाओं को क्रमश एक-ध्रुवीय (monopolar) और द्वि-ध्रुवीय (bipolar) कहते हैं ।

-मूलाश (Root) व प्रतिपदिक (Stem) के भेद को स्पष्ट करें ।

-हिंदी में मूलाश अर्थ का मुख्य सवाहक होता है । प्रातिपदिक, मूलांश से बड़ा व शब्द से छोटा होता है ।

अग्रेजी के 'friends' शब्द मे 'friend' प्रातिपदिक है और मूलाश भी । /-s/ रूप साधक प्रत्यय है । शब्द 'friendships' मे /-s/ रूप साधक प्रत्यय हटाने के बाद / friendship / प्रातिपदिक है, जिसमे / friend / मूलाश हुआ ।

हिंदी मे / घुड़सवारी / मे रूपसाधक प्रत्यय / -ई / हटाने के बाद / घुड़सवार-/ प्रातिपदिक हुआ जिसमे / घुड़~घोडा / मूलाश है ।

-सयुक्त काल और सयुक्त क्रिया में क्या अंतर है ?

उत्तर—संयुक्त क्रिया एक-ध्रुवीय (monopolar) होती है जिसका ऊपर वर्णन किया जा चुका है। हिंदी में वर्तमान निश्चयार्थ का बोध क्रिया की संयुक्तता [वर्तमान कृदंतों+सहायक वर्तमान तिङंतो] से होता है इसे संयुक्त काल कहते हैं। 'वर्तमान कृदंती' कर्ता के 'लिंग' और 'वचन' से प्रभावित होती है 'पुरुष' से नहीं जबकि सहायक क्रिया रूप 'तिङंती' होने के कारण 'पुरुष' और 'वचन' से प्रभावित होती है 'लिंग' से नहीं।

प्रश्न—'समापिका' और 'असमापिका' क्रियाएँ किसे कहते है ?

उत्तर—क्रियाएँ जो अपने स्थान पर प्रयुक्त होती हैं 'समापिका क्रियाएँ' कहलाती हैं, जो क्रियाएँ अपने स्थान पर प्रयुक्त न होकर वाक्य में संज्ञा / कर्ता आदि के स्थान पर [कृदंत] प्रयुक्त होती हैं उसे 'असमापिका क्रियाएँ कहते है।

प्रश्न—संकेत (signified), संकेतक (signifier, इसे फ्रांसीसी मे signifiant कहा गया है) और संकेतित (signifio इसे फ्रांसीसी मे signific कहा गया है) को स्पष्ट करे।

उत्तर—अर्थ निर्धारण करने के लिए पूर्व में तीन पहुँच मार्ग (approaches) थी—meaning as a thing, meaning as an idea (mentalistic theory) and meaning as a behaviour (behavioural / casual theory)। इनकी अपनी सीमाएँ होने के कारण Theory of abstraction / Theory of signification / Referential theory का आगम हुआ। इस सिद्धान्त मे शब्द, वस्तु और अर्थ के आपसी संबंध को प्रदर्शित करने के लिए 1952 में Odgen और Richards ने अर्थ त्रिकोण (Semiotic triangle) का प्रतिपादन किया। इसी त्रिकोण में संकेत, संकेतक और संकेतित का व्यवहार होता है।

अर्थ निर्धारण के लिए प्रयुक्त इस शब्दावली मे त्रिकोण मे बताया गया है कि एक तरफ संकेतक (शब्द / designation) का संकेतित (अर्थ / designatum) से, दूसरी ओर संकेत (वस्तु / denotatum) का संकेतित (अर्थ / designatum) से सीधा संबंध है यद्यपि संकेतक (शब्द / designation) का संकेत (वस्तु / denotatum) से सीधा संबंध नहीं होता (इसलिए 'शब्द' और 'वस्तु' का संबंध यादृच्छिक arbitrary होता है)

संकेत 'वस्तु', संकेतक 'शब्द' और संकेतित 'अर्थ' को कहा गया है।

प्रश्न—सामान्य कोश (General Dictionary) और विशिष्ट कोश (Special Dictionary) का अन्तर बताइए।

उत्तर—सामान्य कोश मे भाषा के सामान्य शब्द आते हैं, जिसमे कि सामान्य भाषा

के सपूण चित्र का वणन मिल जाता है। यह कोश सामान्य प्रयोगकर्ता के लिए होता है। विशिष्ट कोश किसी विशेष उद्देश्य को लेकर बनाया जाता है। विशिष्ट कोश कई प्रकार के हो सकते हैं—

Dictinary of Pronunciations
Dictionary of Reverse
Dictionary of Slangs, jargons, taboos, orgots
Dictionary of Special professions, arts craft.
Dictionary of technical terms=Glossaries.
Dictionary of Dialect
Dictionary of Grammar
Dictionary of Word formation.
Dictionary of Homonyms
Dictionary of Synonyms
Dictionary of Antonyms
Dictionary of Acronyms, abbreviations
Dictionary of Paronyms
Dictionary of Frequency count.
Dictionary of Usage
Dictionary of Idioms, Proverbs
Dictionary of Neologism
Dictionary of Borrowed words.
Dictionary of Surnames
Dictionary of Toponyms
Dictionary of Exegetic
Dictionary of Ideological and Ideographical

प्रश्न—शब्द कोश (Dictionary) और शब्दावली (Glossary) में क्या अन्तर है ?

उत्तर—शब्द कोष में भाषा/विषय से संबधित शब्दो की भाषा वैज्ञानिक सूचनाएँ दी जाती हैं जबकि शब्दावली में किसी विषय विशेष से सबधित शब्दों का संग्रह होता है। [दे. 'कोश विज्ञान कोश' का अंतिम भाग। लेखक—प्रो. सतीश कुमार रोहरा, डॉ. पीतांबर]

प्रश्न—लिप्यतरण (transliteration), अनुवाद (translation) और लिप्यंकन (transcription) मे अंतर स्पष्ट करे।

उत्तर—किसी एक लिपि के लिखे हुए पाठांश का दूसरा लिपि मे अंतरण। [राम जाता है—Ram jata hai]=Trasliteration. एक ही अर्थ द्योतन करने करने वाला अंश जो अलग-अलग भाषाओ मे अलग-अलग हो। (वह जाता है→ He goes=Translation.

किसी पाठाश का श्रवण कर उसका निर्धारित लिपि सकेतो मे लेखन। [माँ की आँखे दर्द करती है—mã ki ãkhen derd kərti hai] = transcrition.

प्र—भाषण शैलियो के स्तर भेद कौन-कौन से हैं ?

उ—Casual, Intimate, Imformal, formal, Hyperformal और frozen

अति घनिष्टता या असावधानी के कारण भाषा प्रयोग की एक शैली [बोलचाल की भाषा मे कहेगे कि हल्केपन के कारण जो शैली अपनाई जाती है]=casual. सहज (शैली) शब्द प्रयोगकर्ताओ की घनिष्टता या निकटता का सूचक हो=Intimate घनिष्ट (शैली)। बिना किसी औपचारिता के भाषण शैली का रूप=Imformal. अनौपचारिक (शैली)। औपचारिकता का विशेष ध्यान रखकर प्रयुक्त भाषण (आप रुकिए, मैं देखकर अभी आता हूँ]=formal औपचारिक (शैली)। ऐसी भाषण शैली जो विशिष्ट औपचारिक स्थितियों से सबधित हो। [सज्जनो और देवियो ......]=Hyperformal उच्च औपचारिक (शैली) भाषण शैली का ऐसा रूप जो विशेष स्थिति के लिए बिना किसी लचीलेपन के निर्धारित हो। [राष्ट्रपति के भाषण के लिए 'अभिभाषण' शब्द युक्त शैली।] =frozen अति औपचारिक (शैली)।

—निम्नलिखित को स्पष्ट करें—

रिक्त शब्द (Empty words), असमान अर्थव्यवस्थाएँ (Anisomorphism), पुरागत, कम प्रचलित (Archaic), विहित रूप (Cannonical form) वृत्तपरकता (circularity), उल्लेख (citation), कतरन (clipping), विश्लेषण सामग्री (corpus), विशिष्ट गुण (criterial features), निशेषण/रिक्तीकरण (depletion), भाषा द्वैत (diaglossia), शिष्टोक्ति (euphemism), अवतरण (excerpt), भाषाकेतर जगत (extra linguistic world), भ्रात मित्र (false friends), वन-जीवषि समूह (Flora and fauna), प्रथम प्रयुक्त मात्र (hapax), लेबुल (Label) प्रविष्टि आधार (Lemma), पदनाम (designation), सयुक्तार्थ (eannotation), अनुप्रयोग परिधि (range of app'ication), प्रयुक्ति (register), प्रविष्टि लेखागार (scriptorium), वर्गीकरण सिद्धान्त (texonomy), धारणा परक कोश (thesaurus), भाषा सीमाकन रेखाएँ (Isoglosses), भाषिक कोष (verbal repertoire), नाम अध्ययन (onbmasiology), Archipnoneme ऊर्ध्वप्रस्थापना (super position), आधात्री (matrix), सह प्रयोग

(collocation), श्रुति (Glide), आभास शब्द (Ghost/phantom words), शिशु बोली (baby talk), बाल भाषा (child langauge)

उत्तर—रिक्त शब्द (Empty words)

शब्द, जिसका धारणात्मक अर्थ नही होता, उसका मात्र व्याकरणिक अर्थ होता है। जैसे—अंग्रेजी 'the', 'to', 'for', आदि।

असमान अर्थ व्यवस्थाएँ (anisomorphism)

किसी भाषा के एक आशय के लिए दूसरी भाषा मे एक से अधिक अभिव्यक्तियों की आवश्यकता हो या एक भाषा के एक से अधिक आशयों के लिए दूसरी भाषा मे एक ही अभिव्यक्ति उपलब्ध हो। जैसे—हिंदी 'बाँह' + 'हाथ' = तमिल 'काई'।

पुरागत/कम प्रचलित (archaic)

पुराना या बीते हुए समय का (शब्द या प्रयोग), जिसका प्रयोग समसामयिक न समझा जाता हो। जैसे—राजगुरु, राज ज्योतिषि आदि।

विहित रूप (Cannonical form)

शब्द का वह रूप जिससे अन्य रूपों का निष्पादन किया गया हो। यही रूप कोश मे प्रविष्टि का आधार बनता है। जैसे—'उस', 'उन' का विहित रूप—'वह'।

वृत्तपरकता (Circularity)

शब्द की वह परिभाषा जो संबंधित शब्द के उल्लेख पर आधारित हो। उदाहरणार्थ 'सुन्दर' शब्द की परिभाषा 'सुन्दरता' शब्द के द्वारा और 'सुन्दरता' शब्द की परिभाषा 'सुन्दर' शब्द के द्वारा दी जाय।

उल्लेख (Citation)

शब्द के किसी अर्थ को स्पष्ट करने या किसी प्रयोग के समर्थन मे वास्तविक प्रयुक्त अंश का किसी पाठ से दिया गया उद्धरण।

कतरन (Clipping)

सामग्री संकलन हेतु समाचार पत्रों आदि से काट कर लिया गया अंश।

विश्लेषण सामग्री (Corpus)

कोश निर्माण के लिए नियत सामग्री।

विशिष्ट गुण (Criterial features)

वे गुण/विशेषताएँ जो किसी एक वस्तु को अन्य वस्तुओं से अलग करती हैं।

निशेषण/रिक्तीकरण (depletion)

ऐसी अभिव्यक्ति जिसमें क्रिया का वास्तविक अर्थ समाप्त हो जाय। क्रिया किसी 'विशेष कार्य के होने' की सूचना न देकर मात्र 'होने' की सूचना देती हो। अभिव्यक्ति का सम्पूर्ण आशय क्रिया के अतिरिक्त अन्य शब्दों से प्राप्त होता है। इस प्रकार को 'क्रियाकर' (verblizer) कहते हैं। जैसे—'प्रतीक्षा करना' मे 'करना' क्रिया का कोई अर्थ नहीं है। इस अभिव्यक्ति की संपूर्ण सूचना 'प्रतीक्षा' शब्द से प्राप्त होती है। अतः यहाँ 'करना' क्रिया के अर्थ का रिक्तीकरण हुआ है और 'करना' क्रिया मात्र क्रिया की सूचना देती है इसलिए यह 'क्रियाकर' 'verblizer' है।

भाषा द्वैत (diaglossia)

विभिन्न स्थितियो में प्रयुक्त एक भाषा की दो शैलियाँ जो सामान्य रूप से परस्पर बोधगम्य न हो।

शिष्टोक्ति (euphemism)

अशोभनीय या अमंगल सूचक शब्दों का शिष्ट या शुभ रूप में कथन। जैसे 'साँप' को 'कीड़ा' कहना आदि-आदि।

अवतरण (excerpt)

सामग्री संकलन हेतु विभिन्न पाठांशों के मूल रूप में लिए हुए अंश।

भाषिकेतर जगत (extra-linguistic world)

भाषा के अतिरिक्त वास्तविक जगत जिसके विभिन्न पदार्थों, भावों आदि को शब्द इंगित करते हों।

भ्रांत मित्र (false friends)

विभिन्न भाषाओं मे पाये जाने वाले वे शब्द जो रूप की दृष्टि से समान लगते है किंतु प्रयोग व अर्थ की दृष्टि से भिन्न हो। जैसे—हिंदी 'शिक्षा'='ज्ञान प्राप्ति', मराठी 'शिक्षा='दंड'।

वन जीव समूह (flora and fauna)

समस्त वनस्पति जगत (पेड़, पौधे, लताएँ, फूल, पत्ते आदि) और समस्त प्राणी जगत (पशु, पक्षी आदि)

प्रथम प्रयुक्त मात्र (Hapax)

वह शब्द जो पहली बार किसी के द्वारा प्रयोग किया गया हो। किसी पाठ में 'नेताओं' के अनुकरण पर स्त्रीलिंग 'नेत्रियों'।

लेबुल (Label)

शब्द के शैलीगत विषयगत आदि प्रयोग का सूचक चिह्न। यथा—कर्म (व्याकरण) जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े। यहाँ 'व्याकरण' लेबुल है जो इस बात का सूचक है कि 'कर्म' का दिया हुआ अर्थ 'व्याकरण' में होता है।

प्रविष्टि आधार (Lemma)

कोश प्रविष्टि का आरंभिक भाग जिसमें मुख्य शब्द, उसका उच्चारण, व्याकरण आदि संबंधी सूचनाएँ रहती है। प्रविष्टि के इस भाग में अर्थ के अलावा शेष सारी सूचनाएँ आ जाती है।

पदनाम (Designation)

शब्द एवं वस्तु के बीच का संबंध या संबंध नाम।

संपृक्तार्थ (Connotation)

शब्द के वाच्यार्थ/मुख्यार्थ के अतिरिक्त अन्य अर्थ परक सूचना। 'मर जाना' और 'देहान्त होना' में जो अर्थ का अंतर है वही संपृक्तार्थ है।

अनुप्रयोग परिधि (range of application)

शब्द के वाच्यार्थ एवं संपृक्तार्थ के अलावा उसके प्रयोग का क्षेत्र। ऐसा भी संभव है कि समान वाच्यार्थ होने पर भी दो शब्दों की परिधि अलग-अलग हो। जैसे—'salary' और stipend' का वाच्यार्थ (किए गए परिश्रम का पारिश्रमिक) समान होने पर भी दोनों का प्रयोग क्षेत्र भिन्न है।

प्रयुक्ति (register)

एक विशेष विषय क्षेत्र से संबंधित शब्दावली एवं वाक्यावली। जैसे—बैंकों में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली/वाक्यावली (Cheque, Pay in slip, Debit, Credit Draft etc.)।

प्रविष्टि लेखागार (scriptorium)

कोश की प्रविष्टि कार्डों के संग्रह का स्थान।

वर्गीकरण सिद्धांत (texonomy)

भाषिकेतर जगत से संबंधित पदार्थों के परस्पर स्तर संबंध का अध्ययन करने वाला विज्ञान। इस अध्ययन में पदार्थों के वर्ग सदस्यों (फूल वर्ग-गेंदा, गुलाब, चमेली आदि सदस्य) या अंग-अंगी (देह=अंगी और नाक=अंग) आदि संदर्भों से विश्लेषण किया जाता है।

धारणापरक कोश (thesaurus)

ऐसा कोश जिसमे प्रविष्टियो की व्यवस्था समानता देखने वाले भावो, विचारों, धारणाओं आदि के अनुक्रम से हो। इस प्रकार का कोश एक प्रकार का पर्यायवाची कोश होता है।

भाषा सीमांकन रेखाएँ (isoglosses)

ध्वनि, रूप, अर्थ आदि के स्तर पर समानता रखने वाले शब्दों के प्रयोग क्षेत्र की सीमा निर्धारित करने वाली रेखा।

भाषिक कोष (verbal repertoire)

समुदायपरक द्विभाषिकता के संदर्भ में अपनाई जाने वाली अन्य भाषा, प्रयोक्ता के भाषाई समाज के भाषिक कोश की एक भाषा होती है। उदाहरण के लिए सिंधी भाषी जब हिंदी भाषा को सीखने की ओर प्रवृत्त होता है तब वह केवल अपनी वैयक्तिक रुचि के कारण ऐसा नही करता। अपितु सामाजिक आवश्यकताओ के कारण उसे ऐसा करना पड़ता है। अतः इसके लिए 'हिंदी', समाज के भाषिक कोश की एक भाषा हुई।

नाम अध्ययन (onomasiology)

व्यक्तिनामो का अध्ययन, विशेषकर उनका ऐतिहासिक अध्ययन।

आर्कीफोनीम (archiphoneme)

विशेष ध्वन्यात्मक वातावरण से हटकर जब कोई स्वनिम अन्य वातावरण मे घटित होता है तो उसका अपना उच्चरित रूप समाप्त सा हो जाता है। हिंदी का निकटतम उदाहरण है— 'साथ-सात ['थ', 'त' की तरह हो जाता है], अंग्रेजी के 'spin' मे 'p' के स्थान पर 'b' घटित नही होगा।

ऊर्ध्व प्रस्थापना (Superposition)

अपने क्षेत्र के व्यक्ति से क्षेत्रीय बोली में बाते होती है किंतु दूसरे उपभाषा क्षेत्र के व्यक्ति से या औपचारिक अवसरों पर 'मानक भाषा' के द्वारा बातचीत होती है। फर्ग्यूसन ने इस प्रकार के संबंध को बोलियों की परत पर मानक भाषा की ऊर्ध्वप्रस्थापना (Superposition) कहा है। गम्पर्ज ने इसे bilectal कहा है।

आधात्री (Matrix)

यह शब्द चामस्की के रूपांतरण व्याकरण मे प्रयुक्त हुआ है। जब एक वाक्य के भीतर दूसरे वाक्य को स्थापित किया जाता है तो इस प्रक्रिया

को आधायित करना (embeding) कहते है। जो वाक्य दूसरे वाक्य मे आधायित किया जाता है उसे आधायित वाक्य (embeded sentence) कहा जाता है तथा जिस वाक्य मे आधायित (embed) किया जाता है उसे आधात्री (matrix) कहते हैं।

सह-प्रयोग (Collocation)

शब्दों की प्रयोगगत संगति। जैसे—प्रयोग की दृष्टि से 'माता' शब्द की सगति 'पिता' से तथा 'माँ' शब्द की सगति 'बाप' शब्द से है। इसलिए 'माता-पिता' या माँ-बाप कहना होगा न कि 'माता-बाप' या 'पिता-माँ'। इसी प्रकार 'चिलचिलाती धूप', 'मूसलाधार बारिश', 'कड़कड़ाती बिजली' आदि अन्य उदाहरण सह-प्रयोग कहे जाते है।

श्रुति (Glide)

शब्द उच्चारण मे, जब एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि की उच्चारण स्थिति मे जाया जाता है तो कभी-कभी एक नई ध्वनि का आगम होता है। इसे श्रुति (Glide) कहते है।

आभास शब्द (Ghost/phantom words)

भ्रामक या मिथ्या शब्द जो वास्तव मे शब्द न हो।

शिशु बोली (baby talk)

माँ बच्चे की तरह जब तुतलाकर उससे बात करती है (मेला बेटा तु तू पिएगा) तो इस प्रकार की बोली शिशु बोली कहलाती है।

बाल भाषा (Child language)

स्कूल जाने से पूर्व घर पर रहकर (4-5 की आयु तक) अपनी शब्दावली और व्याकरण के आधार पर वह भाषा (अधूरे वाक्य, अमानक व्याकरण) बोलता है, बाल भाषा होती है।

-मुक्त सबंध समूह (Free combination) और नियत सबध समूह (Set combination) का भेद स्पष्ट कीजिए।

ऐसा सबध समूह जो प्रयोग संबध के कारण एक कोशीय इकाई के रूप मे प्रयुक्त होता है जैसे— 'good morning' 'स्वर्गवासी' आदि। यह संबध समूह है।

शब्दों का ऐसा समूह जो वक्ता द्वारा विषय के अनुकूल बनाया जाता है। इस प्रकार के समूह का वही अर्थ होता है जो स्वतत्र शब्दों का सम्मिलित अर्थ होता है। जैसे—'angry youngman' और 'चचल चतुर महिलाएँ'। इन्हे मुक्त सबध समूह कहते हैं।

नियत सबध समूह शब्दो का ऐसा समूह है जो प्रयोग सबध के कारण

एक भाषीय इकाई के रूप मे प्रयुक्त होता है। इस शब्द समूह के समस्त शब्दों का एक स्वतंत्र अर्थ होता है जो समूह के सभी शब्दो के सम्मिलित अर्थ से भिन्न होता है। इस शब्द समूह के मूल अर्थ को विकृत किए बिना शब्दो का समानार्थी शब्द से स्थानान्तरण नही किया जा सकता। जैसे—'जलोदर' एक बीमारी का नाम है न कि 'जल' और 'उदर'। इसमे 'पानी' और 'पेट' शब्दों को रखकर 'पानी उदर', 'जलपेट' या 'पानीपेट' शब्द नही बनाए जा सकते।

स्पष्ट कीजिए—

सुर [Pitch], **तान** [Tone], **अनुतान** [Intonation or tondality], **बलाघात** [Stress or stress Accent], **और स्वराघात** [Accent] :

1. सुर, स्वर [आवाज] के उतार-चढाव को कहते है। यह तान और अनुतान दोनो से संबंधित हो सकता है।
2. तान, शब्द स्तर का ध्वनिगुण है। यह आरोही, अवरोह और सम Rising, falling and Level तीन प्रकार का होता है। कुछ भाषाओ मे यह phonemic अर्थ भेदक होता है। जैसे—पंजाबी, आओ आदि। इन भाषाओं को Tonal Languages कहा जाता है।
3. अनुतान वाक्य स्तर का गुण है। यह वाक्य के समाप्त (उतार) आदि का आभास कराता है।
4. बलाघात, यह अक्षर syllable स्तर का गुण है।
5. स्वराघात, यह बोलने की शैली से संबंधित है। इसी कारण सुना जाता है कि अमुक व्यक्ति का स्वराघात अंग्रेजी है अमुक का नही।

प्रश्न—शब्द और रूपिम का अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—न्यूनतम मुक्त अर्थवान इकाई जिसे पुनः विभाजित न किया जा सके, शब्द कहलाता है। न्यून्तम मुक्त या आबद्ध अर्थवान इकाई जिसे पुन. विभाजित न किया जा सके, रूपिम कहलाता है।

प्रश्न—विभक्ति और परसर्ग का अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—विभक्तियाँ एक प्रकार के प्रत्यय है। ये प्रातिपदिको के साथ जुडकर नए-नए शब्दो का निर्माण करती हैं / व्याकरणिक संबधो को स्पष्ट करती है। परसर्ग उन अंशो को कहते हैं जो स्वय मे कोई अर्थ नही रखते बल्कि संज्ञा या सर्वनाम आदि के साथ प्रयुक्त होकर वाक्य मे कारक संबधो को स्पष्ट करते है।

प्रश्न शब्द वर्ग और व्याकरणिक कोटियाँ क्या हैं?

उत्तर—संज्ञा, सर्वनाम,…… ….आदि शब्द वर्ग है जबकि लिंग, वचन, पुरुष, वाच्य, आदि व्याकरणिक कोटियाँ कहलाती है।

प्रश्न—'कृदत' और तद्धित' प्रत्यय मे भेद स्पष्ट करें।

उत्तर—धातुओ से सलग्न होकर जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण आदि शब्दो की रचना करते है, उन्हें 'कृत प्रत्यय' कहते है। रूढ़ शब्द (अधातु) मे लगने वाले प्रत्यय 'तद्धित' कोटि मे रखे जाते है। चल+अन=चलन प्रथम प्रकार के प्रत्यय तथा धोबी+इन=धोबिन दूसरे प्रकार के प्रत्ययो के लगने से निर्मित शब्दो के उदाहरण है।

परिशिष्ट

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त भारतीय भाषाविद्

प्रो० सुनीतिकुमार चटर्जी, प्रो० सुकुमार सेन, प्रो० एस० के० वर्मा प्रो० अशोक केलकर, प्रो० सी० जे० दासवानी, प्रो० एल० एम० खूबचन्दानी, प्रो० बी० एच० कृष्णमूर्ति, प्रो० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, प्रो० बालगोविन्द मिश्र, प्रो० डी० पी० पट्टनायक, डॉ० बाबूराम सक्सेना, प्रो० एन० एस० श्रीलिगिरि, प्रो० ब्रज काचरू प्रो० (श्रीमती) यमुना काचरू, प्रो० पी० बी० पण्डित, प्रो० एम० हुसैन खाँ।

राष्ट्रीय स्तर के ख्यातिप्राप्त भारतीय भाषाविद्

प्रो० रामविलास शर्मा, प्रो० विद्या निवास मिश्र (दोनों विद्वान साहित्यिक क्षेत्र मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त), प्रो० अनन्तनारायण' प्रो० उदयनारायण तिवारी प्रो० भोलानाथ तिवारी, प्रो० के० सी० भाटिया, प्रो० अन्नामलाई, प्रो० निहालानी, प्रो० देवशंकर द्विवेदी, प्रो० सुधाकर पाण्डेय, प्रो० रमानाथ सहाय, प्रो० (श्रीमती) लक्ष्मीबाई बालचन्द्रन, प्रो० वी० कृष्णस्वामी अय्यंगार, प्रो० आर० सी० मेहरोत्रा, प्रो० एच० एस० गिल, प्रो० अमर बहादुर सिंह, प्रो० आर० सी० मेहरोत्रा, प्रो० वी० रा० जगन्नाथन, प्रो० न० वी० राजगोपालन, प्रो० सूरजभान सिंह, प्रो० एम० जी० चतुर्वेदी, प्रो० उदयनरायण सिंह, प्रो० के० बी० सुब्बाराव, प्रो० एस० अगस्तलिंगम, प्रो० एन० वी० शणमुगम, प्रो० तिमलाई रम०, प्रो० अजनि कुमार सिन्हा, प्रो० कपिल कपूर, प्रो० पी० पी० आप्टे, प्रो० प्रबोध चन्द्र नायर, डॉ० श्रीधर, प्रो० सुरेश कुमार, प्रो० बलवीर प्रकाश गुप्त, डॉ० मुरारी लाल उप्रैति, प्रो० अप्पया पनिकर, डॉ० चतुर्भुज सहाय, डॉ० सोमशेखर, प्रो० सतीश कुमार रोहरा, डॉ० रामाधार सिंह, प्रो० सत्यकाम वर्मा, टी० पी० मीनाक्षीसुन्दरम् ।

अन्य उदीयमान भारतीय भाषाविद्

डॉ० गुरबसेव गौड़ा, डॉ० के० सी० अग्रवाल डॉ० लक्ष्मीनरायण शर्मा, डॉ० विजयराघव रेड्डी, डॉ० सीताराम शास्त्री, डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा डॉ० श्याम प्रकाश, डा० विश्वजीत, डॉ० देवेन्द्र शुक्ल, डॉ० के० के० गोस्वामी, डॉ० रामबक्स मिश्र, डॉ० (श्रीमती) वैश्ना नारंग, डॉ० हरीश नारंग डॉ० रमेश धोंगडे, डॉ० टी० के० नारायण पिल्लै, डॉ० बी० आर० रेड्डी, डॉ० उमाशंकर उपाध्याय, डॉ० राम-कमल पाण्डेय, डॉ० रामलाल वर्मा, डॉ० ललित मोहन बहुगुणा, डॉ० मोहनलाल सर, डॉ० (श्रीमती) वशिनी शर्मा, डॉ० पीतांबर डॉ० (कु०) पुष्पा बूलचन्दानी,

डा० एम० ज्ञानम डा० घनश्याम शर्मा डा० (श्रीमती) जयश्री चक्रवर्ती डा० (श्रीमती) अनिता गांगुली, डा० रवि प्रकाश।

भारतीय सिंधी भाषाविद्

प्रो० सी० जे० दासवानी, प्रो० एल० एम० खूबचन्दानी, प्रो० निहालानी प्रो० एस० के० रोहरा, डॉ० एम० के० जैतली, डॉ० पी० गिदवानी, डॉ० पी० एल० वरियाणी, डॉ० (श्रीमती) यशोधरा वाधवाणी, डॉ० कन्हैयालाल लेखवानी, डॉ० पीताम्बर, डॉ० (कु०) पुष्पा खूबचन्दानी, कु० जानकी जेठवानी।

भारतीय कोशकार

प्रो० सतीशकुमार रोहरा, प्रो० वी० सी० बालकृष्णन, प्रो० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, प्रो० सुरेश कुमार, प्रो० भोलानाथ तिवारी, प्रो० हरदेव बाहरी, डॉ० रामचन्द्र वर्मा, डॉ० श्यामसुन्दर दास, डॉ० के० बालसुब्रामणियन, डॉ० महेन्द्र चतुर्वेदी, प्रो० वेंकट सुब्बैया, डॉ० गोपाल शर्मा, डॉ० मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव, डॉ० रामाधार-सिंह, प्रो० पी० पी० आप्टे, प्रो० (श्रीमती) टी० दासवानी, डॉ० एच० सी० पटियाल, डॉ० (श्रीमती) यशोधरा वाधवाणी, डॉ० (श्रीमती) जयश्री गुणे, डॉ० जोग, डॉ० पीताम्बर।

क्षमा याचना—इन सूचियों को देखने से यह स्पष्ट है कि लेखक ने इन्हें बनाने में कोई विशेष परिश्रम नहीं किया है। इन्हें देखकर मेरे वे परमपूज्य भाषाविद् गुरुजन भाषाविद्, परममित्र भाषाविद्, मित्र भाषाविद् अनित्र भाषाविद्, परिचित भाषाविद्, अपरिचित भाषाविद् जिनका नाम सूचियों में नहीं है मुझ पर कुपित न हों! इसे वे मेरी सीमित जानकारी समझ अपने कृतत्व के आलोक से आलोकित करने की अनुकम्पा करेंगे।

विदेशी कोशकार

जुगुस्ता, हार्नबी, काम्पिन बुल्के, वेबस्टर

विदेशी समाज भाषाविज्ञानी (Sociolinguists)

जे० फिशमैन, गम्पर्ज, लैबाव डब्ल्यू, बर्नस्टीन, इल्हाइम, जी० ऐमेन्यू, साऊथ वर्थ, फर्ग्यूसन

भाषाविद् (Psycholinguists)

ऑसगुड० सी० ई०, चामस्की, जॉनसन लैर्ड, बीवरोख, हार्मेन, हरमैन

विदेशी भाषाविद्

सस्यूर (इनके शिष्य-सी० बेली, सेचेहाये), स्वीट, डेनियल जोन्स, जे० आर० फर्थ (इनके शिष्य—रोबिन्स, हैलिडे), लॉयड जेम्स, जोन सिन्क्लेयर, जोन लियोन्स,

जी० एमेन्यू, एस० एम० लैम्ब, फ्राज़ बोआज, सपीर, ब्लूम फील्ड, जैड० एस० हैरिस, चामस्की, सी० एफ० हॉकेट, के० एल० पाइक, फिल्मोर, बी० लाक, जी० एल० ट्रेगर, आर० ए० हॉल, ए० ए० हिल, एच० ए० गिलीसन, फैयरबैंक, सेलिकर, डल्हाइम' साऊथवर्थ, ऑसगुड, ऑटोजेस्पर्सन, फिशमैन, गम्पर्ज, लैबाव, बर्नस्टीन, हरमैन, हौगन, वीनरीख, सी० सी० फ्राइज, एल० येल्मस्लव, एफ० आर० पामर, कामरी, राबर्ड लाडो, मैकी, स्किनर, जी० सी० लेप्शी, जुगुत्सा, पिटकार्डर, फर्ग्यूसन, मामबर्ग, मार्टन जूस, ई० ए० नाइडा, आर० ई० लांगेकर, वी० एल्सन और पिकेट, वानरिपर

विदेशी भाषाविद् और उनके क्षेत्र विशेष

1. फ्रांस

(अ) डी० सस्यूर (1857-1913)

(कुछ लोग इन्हे स्विस विद्वान कहते हैं ये आधुनिक भाषा विज्ञान के पिता माने जाते है। इनके शिष्य।

1. सी बेली (शैली विज्ञान विशेषज्ञ) और

2 सेचेहाये।

(ब) जी० ऐमेन्यू

भारत एक भाषिक क्षेत्र (India is a Linguistic Area) कथन के सस्थापक।

2. ब्रिटिश

(ब) जान लियान्स

3 अमेरीकन

(अ) सिडनी लैंब
Stratificational grammar.

(ब) फ्राज बोआज़ —शिष्य→ सपीर —शिष्य→ के० एल० पाइक
Structural grammar   Structural grammar   ↓
1. Phonetics
2. Tagmemic grammar

(स) ब्लूम फील्ड
Structural grammar

(द) हैरिस —शिष्य→ चामस्की

1. Transformational grammer
2. Discourse analysis
3. Strung analysis (माला विश्लेषण)

Transformational grammar and Psycholinguist

(य) हॉकेट

(र) फिल्मोर
Case grammar

(ल) ब्लाक एण्ड ट्रेगर

(व) आर० ए० हॉल

(श) ए० ए० हिल

सहायक ग्रंथ एवं लेख-सूची

ग्रंथ

1. अग्रवाल, कैलाश चन्द्र 1970 आधुनिक हिंदी व्याकरण, रजन प्रकाशन आगरा।
2. उप्रैति, मुरारी लाल 1964 : हिंदी में प्रत्यय विचार, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. कौशिक, देवदत्त 1972 · भाषा विज्ञान, अशोक प्रकाशन दिल्ली।
4. गुरु, कामता प्रसाद स. 2032 : हिंदी व्याकरण, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

5. जगन्नाथन, वी० रा० 1981 : प्रयोग और प्रयोग, ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, दिल्ली

6. तिवारी, भोलानाथ 1985 : आधुनिक भाषा विज्ञान, लिपि प्रकाशन नई दिल्ली

4. तिवारी, भोलानाथ, किरणबाला 1983 : व्यतिरेकी भाषा विज्ञान, आलेख प्रकाशन दिल्ली।

8. द्विवेदी, कपिल देव 1980 : भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

9. दीमशित्स, ज० म० 1966 : हिंदी व्याकरण की रूपरेखा राजकमल प्रकाशन, प्रा० लि०, नई दिल्ली।

10. धल, गोलोक बिहारी 1975 : ध्वनि विज्ञान, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना-3

11. पीतांबर 1985 : भाषा विज्ञान और हिंदी सरचना, नीलम प्रकाशन, आगरा

12. पीतांबर 1984 : आओ हिंदी शब्द कोटियाँ एवं संरचना, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

13. पीतांबर और रेड्डी 1980 श्रुतलेख अभ्यास पुस्तिका (हिंदी लिपि भाग-4) केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा

14 प्रसाद, वासुदेव नन्दन 1975 · आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, भारतीय भवन, इलाहाबाद

15. बाजपेयी, किशोरीदास 1959 : हिंदी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी।

16. भाटिया कैलाशचन्द्र स. 2027 : हिंदी भाषा में अक्षर एवं शब्द सीमा, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

17. मेहरोत्रा, आर० सी० 1960 . हिंदी मे बलाघात और सुर लहर राजर्षि अभिनन्दन ग्रंथ।

18. रोहरा और पीतांबर 1987 : कोश विज्ञान कोश, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

19. शर्मा, किशोरी लाल 1972 : पद रचना' मेहरा ऑफसेट प्रेस, आगरा।

20. शर्मा, लक्ष्मीनारायण 1979 : हिंदी संरचना का अध्ययन और अध्यापन, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

21 शर्मा लक्ष्मीनारायण 1976 देवनगरा लेखन तथा हिंदी वतनी व्यवस्था केंद्रीय हिंदी सस्थान आगरा ।

22. शास्त्री और बगिनी शर्मा 1986 : मनोभापा विकास, केंद्रीय हिंदी सस्थान, आगरा ।

23. श्रीवास्तव, रवीद्रनाथ 1979 : भापा शिक्षण, दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया, लि० नई दिल्ली ।

24. श्रीवास्तव तिवारी और गोस्वामी 1980 : अनुप्रयुक्त भापा विज्ञान, आलेख प्रकाशन, दिल्ली ।

25. सिंह, कर्ण 1976 . भापा विज्ञान, साहित्य भण्डार' मेरठ ।

26. सिंह, सूरजभान 1985 : हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण, साहित्य सहकार दिल्ली

27. Bahal, Kalicharan 1967 . A referance grammar of Hindi Chicago, University of Chicago.

28 Bloch, B. Trager, G L. 1972 : An introduct on of morphology and syntax, California Summer Institute of Linguistics.

29. Elson, B Picket V. 1964 · Outlines of linguistic analysis.

30. Gleason, Jr. H. A. 1955 : An introduction to Descriptive Linguistics

31. Grierson, G A. 1967 : L. S. I Vol. III, Pt. II, Motilal Banarasi Das, Delhi

32. Hall, R. A. 1969 . Introduction Linguistics Motilal Banarasi. Das, Delhi

33. Hockett C. F. 1958 : A Course in modern linguistics.

34. Mathew, P. H. 1972 . Inflection morphology, Cambridges University Press.

35. Sharma, A 1958 . A Basic grammar of mod. Hindi Central Hindi Directorate, N. Delhi

36. Singh, R. A. 1982 : An introduction to lexicography, C I I, L Mysore-6

37 Zgu9ta L 1971 Manual of lexicogra] mouton The Hague, Paris.

लेख सूची

1. अय्यगार, कृष्णस्वामी 1976 : प्रातिपादिक विचार भारतीय भाषा चितन, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अका जयपुर।

2 उप्रैति, मुरारीलाल 1970 : हिंदी का आक्षरिक विवेचन, भार साहित्य, वर्ष 15 अक 3-4, क० हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्या आगरा।

3 जैन, महावीर सरन 1973 · हिंदी सज्ञा, भाषा (सितम्बर) के० नि० नई दिल्ली।

4. पीताबर 1982 : आओ नागा मे लिग व्यवस्था, भ वर्ष-21 के० हि० नि०, नई दिल्ली

5. पीताबर 1984 : हिंदी और हल्बी की रूप-रचना, व्यतिरेकी अध्ययन के० हि० सं० आगर

6. पीताबर 1986 . हिंदी-सिंधी भाषा का, व्यतिरेकी अध्यय 'व्यतिरेकी विश्लेषण तथा भारत भाषाओं का शिक्षण', सगोष्ठी, के० हि सं.० नई दिल्ली मे प्रस्तुत एव प्रका नाधीन।

7. पीताबर 1987 . 'भारत एक भाषिक क्षेत्र' (India a Linguistic Area) (भारतीय चि और कोशीय पक्ष के विशेष सदर्भ कें० हिं० स० द्वारा आयोजित क विज्ञान सगोष्ठी में प्रस्तुत एवं प्रका नाधीन।

लेखक की अन्य कृतियाँ

पुस्तकें

आओ-हिंदी शब्द कोटियाँ एव संरचना (1984)
भाषा विज्ञान और हिंदी सरचना (1985)
कोश विज्ञान कोश (1987) सहलेखक
कोश विज्ञान सिद्धान्त एवं मूल्याकन (1989)। —सपादन

प्रमुख लेख

' Syllabic Structure of Ac words''
—IJ DL, Vol XII No. 1, Jan 83

हिंदी और हल्बी की रूप रचना : एक व्यतिरेकी अध्ययन—गवेषणा वर्ष 21, अक 42, के० हि० स० आगरा, (1984)।

—प्रकाशनाधीन

हिंदी और सिंधी का व्यतिरेकी विश्लेषण
भारत एक भाषिक क्षेत्र (India is a Lingustic Area), भारतीय चिंतन और कोशीय पक्ष के विशेष संदर्भ मे।

पुस्तक प्राप्ति स्थल—नीलम प्रकाशन, ई–551 कमला नगर, आगरा।

37 Zgusta, L. 1971 - Manual of lexicogra; mouton The Hague, Paris.

लेख सूची

1. अय्यगार, कृष्णस्वामी 1976 : प्रातिपादिक विचार भारतीय भापा चितन, राजस्थान हिंदी ग्र थ अका जयपुर ।

2 उद्रैति, मुरारीलाल 1970 : हिंदी का आक्षरिक विवेचन, भा साहित्य, वर्ष 15 अक 3-4, क० हिंदी तथा भापा विज्ञान विद्य आगरा ।

3 जैन, महावीर सरन 1973 : हिंदी सज्ञा, भापा (सितम्बर) के० नि० नई दिल्ली ।

4. पीताबर 1982 : आओ नागा मे लिग व्यवस्था, वर्ष-21 के० हि० नि०, नई दिल्ली

5. पीताबर 1984 . हिंदी और हल्बी की रूप-रचना, व्यतिरेकी अध्ययन के० हि० सं० आग

6. पीताबर 1986 . हिंदी-सिधी भापा का, व्यतिरेकी अध्य 'व्यतिरेकी विश्लेषण तथा भारत भाषाओं का शिक्षण', सगोष्ठी, के० हि स ० नई दिल्ली में प्रस्तुत एव प्रका नाधीन ।

7. पीतांबर 1987 : 'भारत एक भाषिक क्षेत्र' (India is Linguistic Area) (भारतीय चि और कोशीय पक्ष के विशेष सदर्भ के० हि० सं० द्वारा आयोजित क विज्ञान संगोष्ठी मे प्रस्तुत एव प्रका नाधीन ।

लेखक की अन्य कृतियाँ

पुस्तकें

आओ-हिंदी शब्द कोटियां एवं संरचना (1984)

भाषा विज्ञान और हिंदी संरचना (1985)

कोश विज्ञान कोश (1987) सहलेखक

कोश विज्ञान सिद्धान्त एवं मूल्यांकन (1989)। —संपादन

प्रमुख लेख

'Syllabic Structure of Ac words''

—IJ DL, Vol XII No. 1, Jan 83

हिंदी और हल्बी की रूप रचना एक व्यतिरेकी अध्ययन—गवेषणा वर्ष 21, अंक 42, के० हि० सं० आगरा, (1984)।

—प्रकाशनाधीन

हिंदी और सिंधी का व्यतिरेकी विश्लेषण

भारत एक भाषिक क्षेत्र (India is a Lingustic Area), भारतीय चिंतन और कोशीय पक्ष के विशेष संदर्भ में।

पुस्तक प्राप्ति स्थल—नीलम प्रकाशन, ई–551 कमला नगर, आगरा।